गणेश
साधनातन्त्र

आचार्य पं० कन्हैयालाल भटावत एम०ए०

आयुर्वेदाचार्य, साहित्यायुर्वेदरत्न

॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

श्री गणेश साधना तन्त्र

सम्पूर्ण विधि सहित

लेखक :—
निगमागमादि समस्त शास्त्र पारावर पारीणैः
श्री मन्तः विद्वद् वरेण्य पुराण केसरी पुराणरत्न-
विभूषित

पं० श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी 'तान्त्रिकमणि'

दीक्षा काल नाम---गणेश्वरा नन्द नाथ

साहित्याचार्य, फलित ज्योतिषाचार्य, साहित्य रत्न, बी० एड०,

गुरुवर विरजानन्द सरस्वती

दयानन्द सरस्वती साधना स्थली

गतश्रम टीला, मथुरा, (यू० पी०) द्वारा विरचितः

सम्पादक :—

पं० श्री राजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

संस्कृत अध्यापक

शास्त्री बाल निकेतन जूनियर हाई स्कूल

सतघड़ा, मथुरा

प्रकाशक :—

गर्ग प्रकाशन मन्दिर, मथुरा

सन् १९८८

प्रकाशक :
गर्ग प्रकाशन मन्दिर
कंसखार बाजार, मथुरा

मूल्य 80)

मुद्रक :
इलैक्ट्रोनिक्स प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशिंग हाउस
लाला गंज, मथुरा.

प्राक्कथन

"स्तौमि गणेशं परात्परम्"

परं धाम परं ब्रह्म परेशं परमीश्वरम् ।
विघ्ननिघ्नकरं शान्तं पुष्टं कान्तमनन्तकम् ।।
सुरासुरेन्द्रैः सिद्धेन्द्रैः स्तुतं स्तौमि परात्परम् ।
सुरपद्मदिनेशं च गणेशं मङ्गलायनम् ।।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्री कृष्ण जन्म खण्ड १२१+१०३—४)

जो कि परम धाम, परब्रह्म, परेश, परम ईश्वर, विघ्नों के विनाशक, शान्त, पुष्ट, मनोहर, और अनन्त हैं। प्रधान-प्रधान सुर असुर और सिद्ध जिनका स्तवन करते हैं, जो कि देवरूपी कमल के लिए सूर्य और मङ्गलों के आश्रय-स्थान हैं। उन परात्पर गणेश की मैं स्तुति करता हूँ।

महागणपति की आराधना भारत वर्ष में अनादिकाल से प्रचलित है, महाकवि कालिदास ने 'चिद्गगन—चन्द्रिका' में महागणपति के अविर्भाव के सम्बन्ध में इस प्रकार का वर्णन किया है।

क्षीरोदं पौर्णमासी शशधर इव यः प्रस्फुरन्निस्तरङ्ग,
चिद्व्योम स्फारनादं रुचि विसरलसद्विन्दुवक्रोर्मिमालम् ।
आद्यस्पन्दस्वरुपः प्रथयति सकृदोंकार शुण्डः क्रियाट्टग्,
दन्त्यास्योऽयं हठाद्वः शमयतु दुरितं शक्ति जन्मा गणेशः ।।

(चिद्गगन चन्द्रिका १-१)

"जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा शान्त तरंग वाले क्षीर सागर को ऐसा क्षुब्ध कर देता है कि उसमें गर्जन के साथ गगन चुम्बिनी ऊर्मि मालाएँ उठने लगती है, उसी प्रकार जो पूर्णतः प्रकाशमान हो एक बार निस्तरंग चिदा

काश में प्रणव के नाद तत्व को फैलाकर विन्दु तत्व की वक्र लहरों को उद्वेलित कर देता है, जो शब्द-ब्रह्म का आदि स्पन्दन रूप हैं, ओंकार जिसका शुण्ड दण्ड हैं तथा जो सम्पूर्ण क्रियाओं का द्रष्टा (साक्षी) है, वह शक्ति नन्दन गजमुख गणेश हठात् आप सबके पाप तापों का शमन करे।'

इस श्लोक में शब्द—ब्रह्मरूप "ॐ" का आविर्भाव बताया गया है और इसी (ॐ) से श्री गणेशजी की मूर्ति की रचना की गयी है, जो इस प्रकार है—प्रथम भाग—उदर, मध्यभाग—शुण्डाकार—दण्ड, ऊपर का भाग—अर्द्धचन्द्र—दन्त, अनुस्वार—मोदक। और एक "ॐ" का स्वरूप वैश्य, व्यापारी लोग अपनी बहियों में बनाते हैं। इसे "स्वस्तिक" कहते है। ये ही गणेश जी के चारों हाथ हैं। यह चतुर्भुज ओंकार है।

महागणपति वैदिक देवता हैं, वास्तव में इस समय सुविशाल वैदिक साहित्य का कङ्काल मात्र अवशिष्ट है तथापि जो कुछ भी है, उससे ज्ञात होता हैं कि गणेश अति प्राचीन वैदिक देवता हैं, अर्वाचीन नहीं।
ऋग्वेदशाकल संहिता में लिखा हैं कि--

गणानांत्वा गणपतिं हवामहे
कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठं राजं ब्राह्मणां ब्रह्मण स्पत आ नः
श्रृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

(ऋग्वेद २।२३।१)

'हे अपने गणों में गणपति (देव)' क्रान्तदर्शियों में (कवियों में) श्रेष्ठ कवि, शिवा-शिव के प्रिय ज्येष्ठ पुत्र, अतिशय भोग और सुख आदि के दाता हम आपका इस कार्य में आवाहन करते हैं। हमारी स्तुतियों को सुनते हुए पालनकर्ता के रूप में आप इस सदन में आसीन हों।' यही ओंकार ब्रह्म नाद तत्व के अन्दर वर्णो का भी अभिव्यञ्जक है, जिसे तन्त्र शास्त्र में, "मातृकाओं का समूह कहते हैं। ये मातृका बावन (५२) हैं।

इन ५२ (बावन) मातृकाओं को "लघुषोढ़ा न्यास" के अन्तर्गत शक्ति सहित महागणपति बताया जाता है। इस प्रकार शब्द-ब्रह्म श्री महा गणपति स्वरूप ओंकार का मातृकाओं के साथ विस्तार किया गया है। इन्हीं के योग से तन्त्र ग्रन्थों में अनेक स्तोंत्र मन्त्रों का अविर्भाव किया गया

है। जिससे अनेक प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होती है। इसका विशेष माहात्म्य गणेश पुराण, शिव पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण आदि पुराणों में बताया गया है। "गणपत्यथर्वशीर्ष उपनिषद्" भी गणपति-तत्व को बताता है। इस प्रकार अन्य उपमिषद्-ग्रन्थों में भी इस तत्व का विचार किया गया है।

गणेश पुराण के अनुसार जब-जब आसुरी शक्तियों के प्रबल होने से जन जीवन कण्टकाकीर्ण हो जाता है, निर्दय दैत्य सत्वगुण सम्पन्न सुर-समुदाय का सर्वस्व हरणकर निरन्तर उन्हें पीड़ित करते है, धराधाम पर सर्वत्र अनीति, अनाचार और दुराचार का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, धर्म का ह्रास एवं अधर्म की वृद्धि होने लगती है, तब-तब मङ्गल-मोद-निधान श्री गणेश जी भू-भार-हरणार्थ अवतार ग्रहण करते है। वे गुणतत्व विवेचक आदि देव गजमुख दैत्यों का विनाश कर देवताओं का अपहृत अधिकार उन्हें लौटाते हैं, तथा प्रत्येक रीति से सद्धर्म की स्थापना करते है, जिससे समस्त प्राणियों को सुख-शान्ति की अनुभूति होती है।

प्रत्येक युग में उन महामहिम प्रभु के नाम, वाहन, गुण, लीला और कर्म आदि पृथक्-पृथक् होते हैं तथा उनके द्वारा जिन दैत्यों का संहार होता है, वे भी भिन्न भिन्न ही होते हैं, कृतयुग में ये परम प्रभु गजानन सिंहारूढ़ "महोत्कट विनायक" के नाम से प्रख्यात हुए, उन महा तेजस्वी प्रभु के दस भुजाएँ थी, त्रेतायुग में ये मङ्गल-मोद-प्रदातागणेश मयूरारुढ "मयूरेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए, उनकी कान्ति शुभ्र और भुजाएँ छः थीं, द्वापर में मूषक वाहन शिव पुत्र की "गजानन" या "गौरीपुत्र" के नाम से ख्याति हुई, उनकी अङ्ग कान्ति अरुण थी एवं उनके चार भुजाएँ थी तथा कलि के अन्त में ये धर्मरक्षक गजानन अश्वारोही "धूम्रकेतु" के नाम से प्रसिद्ध होते है, उनके दो भुजाएँ होती हैं तथा उनकी कङ्ग-कान्ति धूम्रवर्ण की होती हैं।

तेजसाकृष्ण तुल्योऽयं कृष्णांशश्च गणेश्वरः।
देवाश्चान्ये कृष्णकलाः पूजास्य पुरतस्ततः॥

(ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, गणपति खं० ४४।२७)

श्री कृष्ण के अंश से उत्पन्न हुआ वह गणेश तेज में कृष्ण के ही समान है। अन्य देवता श्री कृष्ण की कलाएँ हैं। इसी कारण से गणेश की हर कार्य में अग्र पूजा होती है। गणपति की पूजा में गणपति गायत्री का प्रयोग अवश्य करना चाहिये ऐसा उपनिषद् और पुराणों में उल्लेख प्राप्त होता हैं। और गणेश गायत्री मन्त्र का इस प्रकार वर्णन प्राप्त होता है।

ॐ नमो गणाधिपतये शूर्पकर्णाय विद्महे ।
कोटि रक्षाय धीमहि तन्नो गणपतिः प्रचोदयात् ॥

(सनत्कुमार संहिता अ० १ । ६४)

पूजन के समय मुद्रा का प्रयोग करना चाहिये यह तान्त्रिकों का सिद्धान्त है । मुद्रा की महत्ता यों कही गयी है ।

मोदनात् सर्वदेवानां द्रावणात् पाप संततेः ।
तस्मान्मुद्रेति सा ख्याता सर्वकामार्थसाधिनी ॥

(शब्द कल्पद्रुम, भा० ३, पृ० ७४५)

"वह सब देवताओं को मोद देती और पापराशि का द्रावण (निवारण) करती हैं, इसीलिये 'मुद्रा' कही जाती हैं ।' इस तरह से 'मुद्' धातु से यह 'मुद्रा' शब्द निष्पन्न हुआ है । लक्ष्मी तन्त्र अ० ३७।६१ में, विष्णु सहिता अ० ३९ में, विश्वामित्र-संहिता अ० १८।२९ में लिखा है कि विमानस्थ गणेश की पूजा करते समय उनकी मुद्रा "शारदातिलक" की व्याख्या के अनुसार गणपति-मुद्रा इस प्रकार बतायी गयी है ।

मुखात् प्रलम्बितं हस्तं कृत्वा संकुचिताङ्गुलिम् ।
मध्या तर्जनिर्गताग्राङ्गुष्ठं चाधः स्थमध्यमम् ॥
कुर्यान्मुद्रा गणेशस्य प्रोक्तेयं सर्व सिद्धिदा ।

"मुख से लगाकर अपना हाथ लम्बा करे । उसकी अंगुलियां संकुचित हो, मध्यमा और तर्जनी अंगुलियों का अग्र भाग आगे की ओर निकलता रहे और अंगुष्ठ मध्यमा के ऊपर रहे । ऐसी मुद्रा पूजन करते समय गणेश के आगे प्रदर्शित करे । यह गणेश की सर्वसिद्धि दायिनी मुद्रा कहीं गयी है ।" अथवा इस प्रकार से--

कुञ्चिताग्रस्य हस्तस्य मूले नासानियोगतः ।
गणेश्वरी भवेन्मुद्रा ....। इति"

"हाथ के अग्रभाग को सिकोड़ ले और उसके मूल भाग में नाक सटा ले । यह गणेश्वरी मुद्रा है ।" यह मुद्रा सभी गणपति मन्त्रों के लिये उपर्युक्त

है। श्रीमहागणपति को षट्चक्र साधना योग का आधार स्वीकार किया गया है। वे मूलाधार चक्र में संस्थित रहते हैं। इसी मूलाधार चक्र से कुण्डलिनी को जगाने की साधना आरम्भ करनी चाहिये।

मूलाधार से निम्न भाग में गीलाकार वायुमण्डल है। उसमें वायु का बीज 'य' कार स्थित है। उस बीज से वायु प्रवाहित होती है। उससे ऊपर अग्नि का त्रिकोण मण्डल है। उसमें अग्नि के बीज 'र' कार से आग प्रकट होती हैं। वायु तथा अग्नि के साथ मूलाधार में स्थित कुल-कुण्डलिनी सोयी हुई सर्पिणी के आकारवाली है। वह स्वयम्भू लिङ्ग को आवेष्टित करके सोती हैं। उसे जगाकर ब्रह्मरन्ध्रतकले जाया जाता है तथा वहाँ के अमृत कुण्ड में सार्पिणी सुख से विहार करती है, साधक उस समय निमग्न होकर आत्म चिन्तन किया करते हैं। ऐसा नारद पुराण में वर्णित है। (ना० पु० पू० भा० ६५ अ०) विश्व की आधार शक्ति (प्राण) 'गणपति' है, अब विविध गणपतियों में यह 'महागणपति' है। यही (आधार-शक्ति) वस्तु भेद से असंख्य एवं विविध है। उससे अभिन्न होने के कारण गणपति भी असंख्य एवं विविथ है। उनके नाम, रूप (आकृति) वर्ण (रंग), वस्त्र, आयुध, वाहन एवं कार्य आदि भी असंख्य एवं विविध है।

उन सबका सम्पूर्ण रूप से वर्णन करना अशक्य है तो भी तत्व वेत्ताओं ने उनमें से कतिपय विबिध गणपतियों, उनके नामों, आकृतियों, वर्णों, वस्त्रों, आयुधों एवं वाहनों का निर्देश 'श्री तत्व निधि' एवं 'श्री विद्यार्णव तन्त्र' आदि ग्रन्थों में किया गया है। अब हम यहां पर साधकों के कल्याणार्थ 'श्री तत्व निधि' ग्रन्थ के आधार पर विविध गणपतियों के नाम इस प्रकार से हैं। १. बालगणपति रक्तवर्ण, चतुर्हस्त। २. तरुणगणपति रक्तबर्ण अष्टहस्त। ३. भक्तगणपति श्वेतवर्ण, चतुर्हस्त। ४. वीरगणपति रक्तवर्ण, दशभुज, ५. शक्ति गणपति सिन्दूरवर्ण, चतुर्भुज। ६. द्विजगणपति शुभ्रवर्ण चतुर्भुज। ७. सिद्ध गणपति पिङ्गलवर्ण, चतुर्भुज। ८. उच्छिष्ट गणपति नीलवर्ण, चतुर्भुज। ९. विघ्न गणपति स्वर्णवर्ण, दशभुज। १०. क्षिप्रगणपति रक्तवर्ण, चतुर्हस्त। ११. हेरम्ब गणपति गौरवर्ण, अष्टहस्त, पञ्चमातङ्ग मुख, सिंहवाहन। १२. लक्ष्मीगणपति गौरवर्ण, दशभुज। १३ महागणपति रक्तवर्ण, त्रिनेत्र, दशभुज। १४. विजय गणपति रक्तवर्ण चतुर्हस्त। १५. नृतगणपति पीतवर्ण चतुर्हस्त। १६. उर्ध्वगणपति कनकवर्ण, षड्भुज। १७. एकाक्षरगणपति रक्तबर्ण, चतुर्भुज। १८. वरगणपति रक्तवर्ण, चतुर्हस्त। १९. त्र्यक्षरगणपति स्वर्णवर्ण, चतुर्बाहु। २०. क्षिप्रप्रसाद गणपति रक्त चन्दनाङ्कित, षड्भुज। २१. हरिद्रागणपति हरिद्रावर्ण, चतुर्भुज। २२. एक

दन्तगणपति श्याम वर्ण, चतुर्भुज। २३. सृष्टिगणपति रक्तवर्ण, चतुर्भुज। २४. उद्दण्डगणपति रक्तवर्ण, द्वादशभुज। २५. ऋणमोचन गणपति शुक्ल वर्ण, चतुर्भुज। २६. ढुण्ढिगणपति रक्तवर्ण, चतुर्भुज। २७. द्विमुखगणपति हरिवर्ण, चतुर्भुज। २८. त्रिमुखगणपति रक्तवर्ण,षड्भुज। २९. सिंहगणपति श्वेतवर्ण, अष्टभुज। ३०. योगगणपति, रक्तवर्ण, चतुर्भुज। ३१. दुर्गा गणपति कनकवर्ण, अष्टहस्त। ३२. संकष्टहरगणपति रक्तवर्ण, चतुभुज। इस तरह से यहाँ पर विविध अनन्त गणपतियों में से कतिपय गणपतियों के केवल नाम मात्र का उल्लेख किया गया है। उनकी आकृतियों, वस्त्र, आयुधों एवं वाहनों का भेद तन्त्र ग्रन्थों से जाना जा सकता है। शास्त्रों में फल भेद के कारण ध्यान भेद विहित है। विभिन्न फलों की प्राप्ति के लिये 'गणेश' के भिन्न-भिन्न ध्यानों का वर्णन इस प्रकार है।

पीतं स्मरेत् स्तम्भन कार्य एनं वश्याय मन्त्री ह्यरुणं स्मरेत् तम्।

कृष्णं स्मरेन्मारण कर्मणी शमुच्चाटने धूमनिभं स्मरेत् तम्॥

बन्धूक पुष्पादि निभं च कृष्टौ स्मरेद् बलार्थं किल पुष्टिकार्ये॥

स्मरेद् धनार्थी हरिवर्णमेतं मुक्तौ च शुक्लं मनुवित् स्मरेत् तम्॥

एवं प्रकारेण गणं त्रिकालं ध्यायञ्जपन् सिद्धि युतो भवेत् सः॥

"मन्त्र साधक स्तम्भन कार्य में गणेश जी के पीत कान्ति वाले स्वरूप का ध्यान करें, वशीकरण के लिये उनके अरुण कान्तिमय स्वरूप का चिन्तन करें। मारण कर्म में गणेशजी की कृष्ण कान्ति का ध्यान करें तथा उच्चाटन कर्म में उनके धूम्रवर्ण वाले स्वरूप का स्मरण करे। आकर्षण कर्म में बन्धूक पुष्प (दुपहरिया के फूल) आदि के समान लाल वर्ण वाले गणेश का ध्यान करें, बल के लिये तथा पुष्टिकार्य में भी वैसे ही ध्यान का विधान है। धनार्थी पुरुष इनके हरितवर्ण तथा मोक्षकामी मन्त्रवेता शुक्लवर्ण

वाले स्वरूप का चिन्तन करे। इस प्रकार तीनों समय गणपति का ध्यान और जप करने वाला साधक सिद्धि प्राप्त कर लेता हैं।" तन्त्रसार के द्वितीय परिच्छेद में विभिन्न गाणपत्य सम्प्रदायों के उपास्य (१) महागणेश (२) हेरम्बगणेश, (३) हरिद्रा—गणेश तथा, (४) उच्छिष्ट—गणेश के मन्त्र ध्यान पूजा और प्रयोग विधि विस्तार से वर्णन की गयी है। गाणपत्य सम्प्रदाय की छैः शाखाओं का वर्णन भी तन्त्रसार में प्राप्त होता है। और लोकभाषा में "श्री गणेश" शब्द ही मङ्गलकारी शुभारम्भ का प्रतीक माना जाता है। पञ्चदेवों में—विष्णु-शिव-सूर्य-दुर्गा और गणेश हैं। पर सिद्धियों एवं ऋद्धियों के दाता गणेश का ही प्रमुख स्थान माना जाता है। सनातन मतावलम्बियों में मुख्यतः पांच सम्प्रदाय हैं—

(१) वैष्णव (२) शैव (३) शाक्त, सौर गाणपत्य जो क्रमशः भगवान् विष्णु, भगवान् शिव, भगवती शक्ति, भगवान् सूर्य और भगवान् गणेश की आराधना मुख्य रूप से करते हैं। गाणपत्य सम्प्रदाय के साधक गणपति की ही परब्रह्म के रूप में भावना तथा उपासना करते है। वे छैः दलों में बांटे गये हैं। यही नहीं, संगीतज्ञों ने इष्टदेव गणपति को समर्पित इक्कीस (२१) मात्रा वाले गणेश ताल की रचना की। गणेश ताल का स्वरूप निम्न प्रकार से हैं।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
धा	ता	दि	ता	कत	तिट	धा	दिं	ता	कत	तिट	ता	धागे	दिं	ता
३				२	३				४	५	६			

१६	१७	१८	१९	२०	२१
धागे	ता	तिट	कत	गदि	गन
७	८	९	१०		

गणेश समस्त सिद्धियों, नौ निधियौं के दाता और विघ्नहर्ता है। जिनके स्मरण मात्र से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। इष्टदेव के विभिन्न नामों का उल्लेख, वंश परिचय प्रधान इस ध्रुपद में तानसेन की प्रगाढ़ गणेश भक्ति से परिलक्षित होती हैं। मुद्गल पुराण में विघ्न विनाशन गणेश के अनन्त अवतार का प्रमाण प्राप्त होता है। उनका वर्णन करना सौ वर्षों में भी सम्भव नहीं हो सकता है। उन अवतारों में भी ब्रह्मधारक आठ मुख्य अवतार हैं। उनके नाम इस तरह से हैं।

वक्रतुण्डावतारश्च देहानां ब्रह्मधारकः ।
मतसरा सुरहन्ता स सिंहवाहनगः स्मृतः ।।
एकदन्तावतारो वै देहिनां ब्रह्मधारकः ।
मदासुरस्य हन्ता स आखुवाहनगः स्मृतः ।।
महोदर इति ख्यातो ज्ञान ब्रह्मप्रकाशकः ।
मोहासुरस्य शत्रुर्वै आखुवाहनगः स्मृतः ।।
गजाननः स विज्ञेयः सांख्येभ्यः सिद्धिदायकः ।
लोभासुर प्रहर्त्ता वै आखुगश्च प्रकीर्तितः ।।
लम्बोदरावतारो वै क्रोधासुर निबर्हणः ।
शक्ति ब्रह्माखुगः सद् यत् तस्य धारक उच्यते ।।
विकटो नाम विख्यातः कामासुर विदाहकः ।
मयूर वाहनश्चायं सौर ब्रह्मधरः स्मृतः ।
विघ्न राजावतारश्च शेषवाहन उच्यते ।
ममता सुरहन्ता स बिष्णु ब्रह्मेति वाचकः ।।
धूम्रवर्णावतारश्चाभि माना सुरनाशकः ।
आखुवाहन एवासौ शिवात्मा तु स उच्यते ।।

(मुद्गल पुराण २० - ५ १२)

"वक्रतुण्डावतार" देह—ब्रह्म को धारण करने वाला है, वह मतसरा सुर का संहारक तथा सिंह वाहन पर चलने वाला माना गया है। "एक दन्तावतार" देहि—ब्रह्म का धारक है, वह मदासुर का वध करने वाला है, उसका वाहन मूषक बताया गया है। 'महोदर" नाम से विख्यात अवतार ज्ञान—ब्रह्म का प्रकाशक है। उसे मोहासुर का विनाशक और मूषक वाहन बताया गया है। जो "गजानन" नामक अवतार है, (वह साँख्य ब्रह्मधारक है), उसको साँख्ययोगियों के लिये सिद्धिदायक जानना चाहिये। उसे लोभा सुर का संहारक और मूषक वाहन कहा गया है। "लम्बोदर" नामक

अवतार क्रोधासुर का उन्मूलन करने वाला है, वह सत्स्वरूप जो शक्ति ब्रह्म है, उसका धारक कहलाता है। वह भी मूषक वाहन ही है। 'विकट" नाम से प्रसिद्ध अवतार कामासुर का संहारक है, वह मयूर वाहन एवं सौर ब्रह्म का धारक माना गया है। "विघ्नराज" नामक जो अवतार है, उसके वाहन शेषनाग बताये जाते है, वह विष्णु ब्रह्म का वाचक (धारक) तथा ममतासुर का विनाशक है। "धूम्रवर्ण"– नामक अवतार अभिमानासुर का नाश करने वाला है, वह शिवब्रह्म स्वरूप है। उसे भी मूषक वाहन ही कहा गया है।"

विनायक श्री गणेश जी के यहाँ दो पत्नियां है, उनके नाम क्रम से ये हैं। १. सिद्धि २. बुद्धि, सिद्धि के गर्भ से गणेश जी के अंश से क्षेम नाम का पुत्र हुआ। और बुद्धि के गर्भ से गणेश जी के अंश से लाभ नाम का पुत्र हुआ। गणेश जी अपने परिवार के साथ गणेश पञ्चायतन के रूप में विराजमान हैं। पञ्चम वेद महाभारत की रचना कर पराशरनन्द ब्रह्मर्षि श्री कृष्णद्वैपायन विचार करने लगे इस ग्रन्थ रत्न का प्रचार कैसे हो ?

काव्यस्य लेखनार्थाय गणेशः स्मर्यतां मुने।'

(महा० आदि० १।७४)

तदनन्तर सत्यवतीनन्दन व्यास जी ने सिद्धि-सदन एकदन्तगणेशजी का स्मरण किया, स्मरण करते ही भक्त वाञ्छा कल्पतरु श्री गणेश जी महाराज व्यास जी के सम्मुख उपस्थित हो गये। महर्षि व्यासजी ने अत्यन्त आदर पूर्वक उनका अभिनन्दन किया। गणेश जी के बैठने पर उन्होंने उनसे अत्यन्त आदर पूर्वक निवेदन किया।

लेखको भारतस्यास्य भव त्वं गणनायक।
मयैव प्रोच्यमानस्य मनसा कल्पितस्य च ॥

(महा० आदि० १।७७)

गणनायक ! आप मेरे द्वारा निर्मित इस महाभारत ग्रन्थ के लेखक बन जाइये, मैं इसे बोलकर लिखाता जाऊंगा। मैंने मन ही मन इसकी रचना करली हैं।' महर्षि व्यास की बात सुनकर बुद्धिराशि श्री गणेश जी ने उत्तर दिया—व्यासजी ! यदि लिखते समय क्षण भर के लिये भी मेरी लेखनी न रुके तो मैं इस ग्रन्थ का लेखक बन सकता हूँ।'

..................यदि में लेखनी क्षणम् ।

लिखतो नाव तिष्ठेत तदा स्यां लेखको ह्यहम् ।।

(महा०, आदि० १।७८)

"आप किसी भी प्रसङ्ग को बिना समझे एक अक्षर भी मत लिखियेगा।' व्यास जी ने कहा "ॐ" कहकर बुद्धिराशि, शुभगुण-सदन अरुणवर्ण श्री गणेश जी ने इसे लिखना स्वीकार कर लिया और उनके अनुग्रह से महाभारत जैसा लोक पावन ग्रन्थ रत्न जगत् को प्राप्त हुआ है। अब तिथियों की माता चतुर्थी की उत्पति (शिवपुराण, रुद्र सं०, कु० ख० १८।३५-३७ अग्नि पुराण, मुद्गल पुराण ४।१।२०, गणेश पुराण २।८२।३४, में देखिये।

श्री गणेश जी को अत्यन्त प्रिय परम पुण्यमयी "वरदा चतुर्थी" की उत्पति की पवित्रतम कथा अत्यन्त संक्षेप में इस प्रकार से है।

लोक पितामह ब्रह्मा ने सृष्टि रचना के अनन्तर अनेक कार्यो की सिद्धि के लिये अपने हृदय में श्री गणेश का ध्यान किया। उसी समय उनके शरीर से पराशक्ति प्रकृति, महामाया, तिथियों की जननी कामरूपिणी देवी प्रकट हुई। उन परम लावण्यवती देवी के चार पैर, चार हाथ और चार सुन्दर मुख थे। उन्हें देखकर विधाता अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन महादेवी ने स्रष्टा के चरण कमलों में प्रणाम कर निवेदन किया अब मैं क्या करूं? तब लोक स्रष्टा ने कहा कि तुम अद्भुत सृष्टि का सर्जन करो। यह कहकर ब्रह्मा जी ने श्री गणेश का "वक्रतुण्डाय हुम्" षडक्षर मन्त्र महादेवी को प्रदान किया। वे मन्त्र पाकर वन में जाकर उग्र तप करने लगीं, तप से गणेश प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रकट होकर कहा जो वर चाहो ले लो। तब उसने उनसे कहा आप अगर देना चाहते हैं तो अपने चरण कमलों की सुदृढ़ भक्ति प्रदान करो और सृष्टि सर्जन की सामर्थ्य प्राप्त हो। मैं आपको सदा प्रिय रहूँ और मुझसे आपका कभी वियोग न हो।"

स्वीकृति सूचक "ओम्" का उच्चारण कर परम प्रभु ने वर प्रदान किया "चतुर्विध फल प्रदायिनी देवि! तुम मुझे सदा प्रिय रहोगी। तुम समस्त तिथियों की माता होओगी और तुम्हारा नाम "चतुर्थी" होगा। तुम्हारा बामभाग "कृष्ण" एवं दक्षिण भाग शुक्ल होगा। निस्सन्देह तुम मेरी जन्मतिथि होओगी। तुम्हारे में व्रत करने वाले का मैं विशेष रूप से पालन करूंगा और इस ब्रत के समान अन्य कोई ब्रत नहीं होगा।

यह कहकर भगवान् गजमुख अन्तर्धान हो गये। तिथियों की माता चतुर्थी गणपति का ध्यान करते हुए सृष्टि रचना करने लगीं। सहसा उनका वामभाग कृष्ण और दक्षिण भाग शुक्ल हो गया। महाभाग्यवती शुक्ल वर्णा अत्यन्त विस्मित हुईं। उन्होंने पुनः गणाध्यक्ष का ध्यान करते हुए सृष्टि रचना का उपक्रम किया ही था कि उनके मुखारविन्द से प्रतिपदा तिथि उत्पन्न हो गयी इसी प्रकार नासिका से द्वितीया, वक्ष से तृतीया, अंगुली से पञ्चमी, हृदय से षष्ठी, नेत्र से सप्तमी, बाहु से अष्टमी, उदर से नवमी, कान से दशमी, कण्ठ से एकादशी, पैर से द्वादशी, स्तन से त्रयोदशी, अहंकार से चतुर्दशी और मन से पूर्णिमा तथा जिह्वा से अमावस्या तिथि प्रकट हुई।

चतुर्थ्यां मध्यगे भानौ देहधारी समागतः।
सा तिथिः परमा तस्य प्रीतिदा सम्बभूववै ॥

(मुद्गल पुराण ४।१।२०)

मुद्गल पुराण में भी आता है कि पराक्रमी लोभासुर से त्रस्त होकर देवताओं ने परम प्रभु गजानन से उसके विनाश की प्रार्थना की। दयाधाम गजमुख उस महान असुर के विनाश के लिये परम पावनी चतुर्थी को मध्याह्न काल में अवतरित हुए, इस कारण उक्त तिथि उन्हें अत्यन्त प्रीति दायिनी हुई।

चतुर्थ्यां महिमानं नो न शक्यं सुनिरुपितुम् ॥

(गणेश पु० २।८२।३४)

इस चतुर्थी व्रत का निरुपण एवं माहात्म्य गानशक्य नहीं है। सनातन हिन्दू धर्म के आचारानुसार सब कार्यों के प्रारम्भ में श्री गणेश के लिए नमन तथा स्तवन किया जाता है, अतः कार्यारम्भ को भी मुहावरे की भाषा में ''श्री गणेश' शब्द से कहा जाता है। ऋग्वेद संहिता में श्री गणपति की स्तुति करते हुए कहा गया है—

'न ऋते त्वत् क्रियते किंचन'

(१०।११२।६)

'हे गणपते ? तुम्हारे बिना कोई भी कर्म नहीं किया जाता।'

विघ्न ध्वान्त निवारणैकतरणि विघ्नाटवीहव्यवाड्
विघ्नव्यालकुलोपमर्द गरुडो विघ्नेभपञ्चाननः ।
विघ्नोतुङ्ग गिरीशमर्दनप विविघ्नाम्बुधौ वाडवो
विघ्नाभ्रौघघन प्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ।।

"जो विघ्नरूपी महान्धकार का निवारण करने के लिये एक मात्र सूर्य है, विघ्नरूपी महावन के लिये दावानल स्वरूप है, विघ्न रूपी सर्प कुल का उपमर्दन करने के लिये गरुड़ हैं, विघ्नरूपी गजेन्द्र के लिये सिंह है, विघ्न रूपी गगनचुम्बी पर्वतों को चूर-चूर कर देने के लिये वज्र है, विघ्न-महासागर को (सुखा देने के लिये) बडवानल हैं और विघ्नरूपी घने बादल-समूह को तितर वितर कर देने के लिये प्रचण्ड तूफान सदृश है, वे विघ्नेश्वर गणेश हम लोगों की रक्षा करें।" बारह महीनों में श्री गणेश जी की उपासना इस प्रकार से करनी चाहिये।

१. चैत्र मास में 'वासुदेव' रूपी गणेश जी की उपासना करके सुवर्ण दक्षिणा देनी चाहिये। २. वैशाखमासमें 'संकर्षण' रूपी गणेशजी की उपासना करके शंख दान देना चाहिये। ३. ज्येष्ठ मास में 'प्रद्युम्न' रूपी गणेशजी की पूजा करके फल-मूल-दान देना चाहिये। ज्येष्ठ मास में गणेश जी की अर्चा "सतीव्रत के नाम पर की जाती है, जिससे साधक गणेश माता पार्वती का लोक प्राप्त कर लेता है। ४. आषाढ़ मास में "अनिरुद्ध" रूपी गणेशजी की अर्चा करके सन्यासियों को तूँबी पात्र का दान करना चाहिये। आषाढ़ मास में गणपति की अर्चा करके देव दुर्लभ फल पाता है। ५. श्रावण मास में "बहुला" गणेशजी की पूजा का विधान है। ६. भाद्रपद मास में "सिद्धि विनायक" की पूजा का विधान है। ७. आश्विन में "कपर्दीश" गणेशजी की पूजा पुरुष सूक्तों से करनी चाहिये। ८. कार्तिकमास में 'करवा चौथ करक चतुर्थी' व्रत करने का विधान है। ९. मार्गशीर्ष मास में चार संवत्सरपर्यन्त पालनीय व्रत की विधि है। १०. पौष मास में "विघ्न-नायक" गणेश की और ११. माघ मास में "संकष्ट व्रत" लेकर उनकी पूजा करने का विधान हैं। १२. फाल्गुन मास में 'ढुण्ढिराज' व्रत करने का विधान है। मंगलवार पर चतुर्थी आये तो उसे 'अङ्गारक-चतुर्थी' कहते हैं, जो विशेष फलदायक

होती है। रविवार के दिन चतुर्थी आये तो विशेष फल प्राप्ति का हेतु होती है।

'कलौ चण्डी विनायकौ' के अनुसार कलियुग में 'चण्डी' और 'विनायक' शीघ्र फलप्रद देवता माने गये हैं। कलियुग में गणेश जी के अधिक प्रचार की बात देख-सुनकर कोई यह न सोचे कि पूर्व के युगों में गणेशजी के पूजन या उनके अस्तित्व का अभाव था। यथार्थता यह है कि पूर्वकाल में भी सबसे पूर्व विधि पूर्वक गणेश पूजन करके तदनन्तर ग्रन्थादि का प्रणयन किया जाता था। फिर कहीं-कहीं शिष्य-शिक्षार्थ ग्रन्थ के प्रारम्भ में भी गणेश जी के वन्दनपूर्वक मङ्गलाचरण लेखन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। गणपति की महिमा इस असार-संसार में कौन वर्णन कर सकता है जब कि सत् युग-त्रेता-द्वापर युग में गणपति की महिमा ब्रह्मा-विष्णु और शिव भी गुणगान करने में असमर्थ रहे तो उनकी महिमा मनुष्य क्या गान कर सकता हैं। गणपतिके यशका गान करने में मेरी लेखनी भी सामर्थ्यवान नहीं है। इस गणेश साधना-तन्त्र का लेखन कार्य और निर्माण कार्य मेरे लघु भ्राता युवा सम्राट पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी ''तान्त्रिकमणि'' द्वारा किया गया है। इस गणेश साधना तन्त्र ग्रन्थ का प्रूफ संशोधन का कार्य मेरे लघु भ्राता पं० श्री राजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी ने किया, उनके इस कार्य के लिये युवा सम्राट पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी 'तान्त्रिकमणि' उनके सदा आभारी रहेंगे। इस अपूर्व ग्रन्थ को लोक कल्याणार्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।'

मैं लेखक और प्रकाशक महोदय के लिए भगवान श्री गणेश के चरणों में विनम्र एवं अनुरोध पूर्ण प्रार्थना करता हूँ कि वे ऐसी कृपा करें, जिससे जीवन का शेष समय लेखन व प्रकाशन और भगवत्स्मरण में ही बीते।

॥ श्री गणेश चरणकमलेभ्योऽर्पितम् ॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ॥

विदुषां वशंवदः

डा० गोवर्द्धन नाथ चतुर्वेदी

एम० ए० द्वय (हिन्दी, संस्कृत) साहित्याचार्य, पी०एच०डी०

३५४ कूँचा घासीराम, चाँदनी चौक दिल्ली-६

वंश वृक्ष

नन्दराम
मानूड़ाराम
कानड़ाराम
वनमालिजी
दुर्वा
धूमधाम
केदारनाथ
जगन्नाथ
द्वारकानाथ
रणछोरनाथ
रमानाथ
दीनानाथ
रनाथ
वृजेन्द्रनाथ
प्रमोदनाथ
गोपाल
राधावल्लभ
गोवर्द्धननाथ
महेन्द्रनाथ
राजेन्द्रनाथ
नरेन्द्रनाथ
देवेन्द्रनाथ
गजेन्द्रनाथ
अनूपकृष्ण
आनन्दकृष्ण
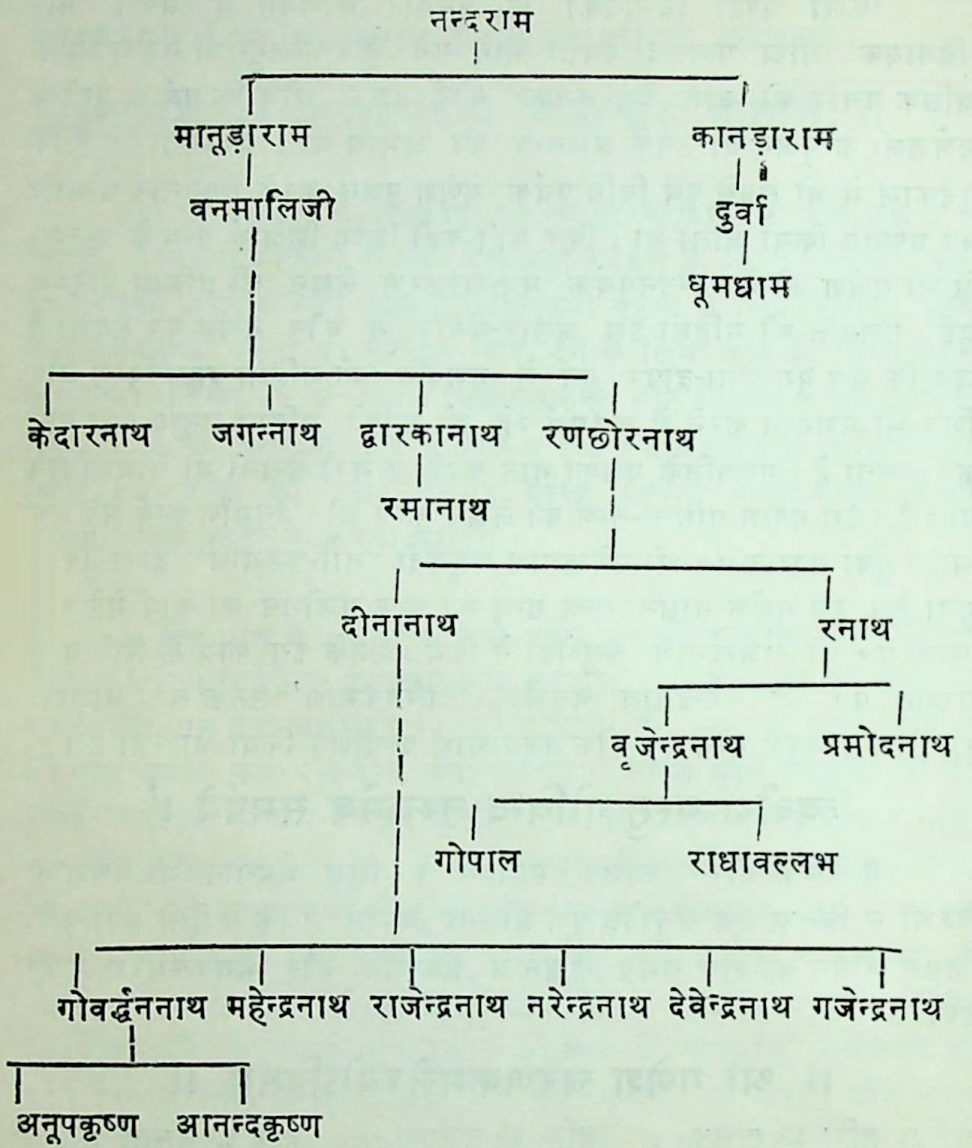
श्री श्री १०८ श्री गुरुवर

स्व० पं० श्री बनमालि जी चतुर्वेदः

प्राकट्य सम्वत्
१६०१ माघ कृ० ४

गोलोक वास सम्वत्
१६७६ पौष कृ० १३

श्री श्री १०८ श्री गुरुवर
पं० श्री वनमालि जी चतुर्वेदी का
संक्षिप्त जीवन परिचय

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी श्री दयानन्द सरस्वती के गुरू दण्डी स्वामी श्री विरजानन्द जी सरस्वती जब पंजाब प्रान्त से हरिद्वार होते हुए, मथुरा पधारे, तो उनके हृदय में मथुरा में संस्कृत वेद पाठशाला स्थापित करने की भावना उदित हुई। श्री विरजानन्द जी सरस्वती यद्यपि जन्मजात ही संस्कृत भाषा के विद्वान थे, तथापि उनके हृदय में और भी अधिक विद्वान बनने की जिज्ञासा अनवरत बनी रहती थी। किन्तु स्वामीजी के जन्मजात प्रज्ञाचक्षु होने के कारण उनके लिखने पढ़ने में बाधा उत्पन्न होती थी। मथुरा आगमन के साथ उन्होंने अष्टाध्यायी पढ़ने का विचार किया। किन्तु उन्हें पड़ाता कौन ? उस समय मथुरा के विद्वानों में श्री श्री १०८ श्री पं० श्री वनमालि जी चतुर्वेदी का नाम जन साधारण में आदर से लिया जाता था।

एक दिन अनायास बंगाली घाट पर स्थित दण्डी वाले घाट बिराजमान श्री विरजानन्द जी सरस्वती के दर्शनार्थ श्री बनमालि जी चतुर्वेदी पधारे, और उन्होंने स्वामीजी के चरण स्पर्श किये। निदान जैसे ही स्वामी जी को विदित हुआ कि यह श्री बनमालि जी चतुर्वेदी हैं। वैसे ही एकान्त में स्वामी जी ने बनमालि जी से अष्टाध्यायीं पढ़ने की जिज्ञासा प्रकट की। श्री बनमालि जी चतुर्वेदी संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान थे, तथा उनके हृदय में भी भली-भांति व्याकरण अध्ययन की अभिलाषा बनी रहती थी। विचारों के आदान-प्रदान के फल स्वरूप श्री बनमालि जी ने पुस्तक पढ़कर अष्टाध्यायी सुनाना श्री स्वामी जी को आरम्भ किया और प्रबल मेधावी प्रज्ञा-चक्षु स्वामी जी श्रवण मात्र से अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करते गये। इसी क्रम में स्वामी जी ने सारस्वत चन्द्रिका, पाणिनि व्याकरण और तद्धित प्रक्रिया आदि ग्रन्थों को भी श्रवण मात्र से कण्ठस्थ किया। स्बामीजी दिन में कण्ठस्थ करते और रात्रि में स्वप्रज्ञा से उन सभी का तुलनात्मक मनन

और चिन्तन करते थे। इस क्रम में श्री बनमालि जी का स्वामी जी पास निरन्तर आवागमन बना रहा। कालान्तर में एक दिन स्वामी जी बनमालि जी से कह उठे, कि वत्स! अब हमसे बड़ा संस्कृत विद्वान कदाचित् ही कोई हो। अब हम तुम्हें वेद के नेत्र व्याकरण में ठोस विद्वान बनायेंगे। परन्तु अध्ययन करना तुम्हारा कर्तव्य है। इस प्रकार श्री बनमालि जी ने स्वामी जी से व्याकरण और न्यायशास्त्र का गम्भीर अध्ययन किया।

कुछ समय के पश्चात् ही श्री स्वामी जी की संस्कृत पाठशाल छत्ता बाजार में उस स्थान पर स्थापित हुई, जहां बर्तमान में श्री बिरजानन्द स्मारक स्थापित है। जिसका शिल्यान्यास उद्घाटन स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने किया था। स्वामी जी की इस पाठशाला में श्री बनमालि जी के अतिरिक्त स्वामी जी के अनेक शिष्य जिनमें सर्व श्री रंगदत्त और गंगदत्त चतुर्वेदी, नाथूराम जी शुक्ल, मोहन लाल जी भट्ट, ज्योतिषी कृपाशंकर जी, पं० मुकुन्ददेव जी शास्त्री, उदय शंकर जी शास्त्री, आदि की प्रमुख नामावली के साथ सत्यार्थ प्रकाश के प्रणेता और आर्य समाज के संस्थापक श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती (श्री मूलशंकर सहस्र औदिच्य ब्राह्मण) का नाम भी संयुक्त है। स्वामी दया नन्द सरस्वती स्वामी श्री विरजानन्द जी की पाठशाला के अन्तिम शिष्य थे। उपयुक्त, सभी शिष्य गण एक से एक बढ़कर दिग्विजयी विद्वान् अपने अपने विषयों में हुए हैं।

श्री बनमालि जी स्वामी विरजानन्द जी की शिक्षण कृपा से अपने समय में व्याकरण, साहित्य, पुराण, महाभारत, ज्योतिष आदि विषयों के उद्भट् विद्वान हुए। उन्होंने श्री मद्भागवत, गर्गसंहिता, कुभावतूहल जातक, जातकालंकार, मानसागरी आदि अनेक ग्रन्थों पर व्रजभाषा और संस्कृत-हिन्दी भाषा में टीकाऐं लिखी। जो उस समय प्रकाशित भी हुईं। श्री बनमालि जी ने श्री मद्भागवत के अतिरिक्त महाभारत, वाल्मीकि रामायण की नित्य कथा कहना भी आरम्भ किया, जिससे उनके परिवार की जीविका का साधन बना तभी से उनका परिवार महाभारत की कथा पटुता के लिए परम्परागत प्रसिद्ध होता चला गया, श्री वनमाल जी व्रज-भाषा के भी सुकवि थे। उन्होंने व्रजभाषा में "तान" परम्परा पर आधारित संगीतमयीं "तानें भी लिखी। श्री दयानन्द सरस्वती का उनके घर प्रायः आना जाना रहता था, स्वामी विरजानन्द जी के ब्रह्मलीन होने के उपरान्त श्री दयानन्द जी ने बहुत कुछ श्री बनमालि जी पढ़ा लिखा वा सीखा।

श्री वनमालि जी अपने पितामह श्री नन्दन जी तथा पिता श्री कानूड़ाराम जी की वैष्णव, शाक्त, तान्त्रिक परम्परा में भी पारंगत थे और तत्कालीन पर्वतीय रियासत बिलासपुर, नूपुर, होशियारपुर, तथा चम्बा काँगड़ा के राजाओं के राज्य पुरोहित भी थे। राजाओं से प्राप्त प्रशस्ति पत्र वर्तमान में भी उनके वंशधरों के पास सुरक्षित है। श्री वनमालि जी चतुर्वेदी का प्राकट्य सम्वत् १६०१ माघ शुक्ल चतुर्थी है और गोलोकवास सम्वत् १६७६ पौष कृ० तेरस है।

डॉ० गोवर्द्धन नाथ शुक्ल
रीडर हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्व बिद्यालय
अलीगढ़

श्री श्री १०८ गुरुवर
पं. श्री रणछोर नाथ जी चतुर्वेदी
का संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री वनमालि जी की धर्मपत्नी श्री खिन्नी देवी के गर्भ से श्री केदार नाथ, श्री जगन्ननाथ जो, श्री द्वारकानाथ और श्रीरणछोरनाथ जी चार पुत्र हुए। ये सभी अपने पिता की भाँति पूर्ण पण्डित थे, श्री रणछोरनाथ जी महा भारत कथा के लिए दूर-दूर तक विख्यात थे। उन्होंने अपने जीवन में महाभारत कथा की सप्तवर्षीय चार आवृतियाँ की थीं, अनेक बार वे श्री मद् भागवत अष्टोतर शत कथा के प्रधान व्यास पीठ पर भी सुशोभित हुए।

श्री रणछोरनाथजी की धर्मपत्नी श्री मती छोलो देवी से श्री दीनानाथ जी 'सुमनेश' और श्रीअमरनाथ दो पुत्र तथा श्रीमती महारानी नाम की कन्या ने जन्म लिया। उनके कनिष्ठ पुत्र श्री अमरनाथ भी संस्कृत साहित्य और शक्ति तन्त्र के प्रकाण्ड विद्वान है। जो वृन्दावनस्थ श्री निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय में साहित्य विभागाध्यक्ष पद पर आसीन है। श्री अमरनाथ जी के दो पुत्रों बृजेन्द्रनाथ और प्रमोदनाथ में से कनिष्ठ पुत्र साहित्याचार्य एवं श्री रामानुज वेदान्ताचार्य तथा च एम० ए० (संस्कृत)हैं। श्री रणछोर नाय जी चतुर्वेदी का प्राकट्य सम्वत् १९४३ कार्तिक कृ० चतुर्थी है। और गोलोकवास सम्वत् २००६ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा है।

आचार्य पं० कैलाश चन्द्र 'कृष्ण'

कुशक गली मथुरा (उ० प्र०)

श्री श्री १०८ श्री गुरुवर

स्व० पं० श्री रणछोरनाथ जी चतुर्वेदः

प्राकट्य सम्वत्
१९४३ कार्तिक कृ० चतुर्थी

गोलोक वास सम्वत्
२००९ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा

श्री श्री १०८ श्री गुरुवर

स्व० पं० श्री दीनानाथ जी 'सुमनेश'
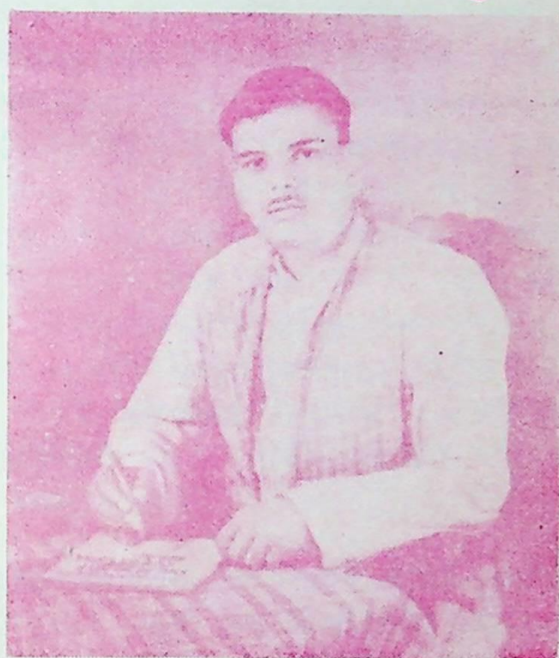
प्राकट्य सं०
(१९७७ मार्गशीर्ष शु० ७)

गोलोक वास सं०
(२०४५ अ० ज्ये० कृ० १२)

श्री श्री १०८ श्री गुरुवर पं० श्री दीनानाथजी चतुर्वेदी 'सुमनेश' पौराण–तन्त्र और काव्य सम्राट का संक्षिप्त जीवन परिचय

माथुर विप्र श्री श्री १०८ श्री पं० श्री रणछोर लाल जी धर्मपत्नी से ज्येष्ठ पुत्र श्री दीनानाथ जी "सुमनेश" मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सम्वत् १९७७ विक्रमी में अपने पैतृक निवास में प्रसूत हुए। शैशवावस्था में यज्ञोपवीत एवं वेदारम्भ संस्कार हुआ। १४ (चौदह) वर्ष की आयु में आपका विवाह श्रीमती शान्ता देवी से हुआ। आप बाल्यावस्था से युवावस्था प्रवेश तक मल्ल कला में भी पटु रहे। शनैः शनैः आपने साहित्य, पुराणेतिहासाचार्य की परीक्षा वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय से तथा एम० ए० द्वय (हिन्दी, संस्कृत) आगरा विश्व विद्यालय से उर्तीण कीं। ख्याति प्राप्त विद्वान पं० श्रीवरजी चतुर्वेदी आपके संस्कृत विद्या गुरु थे। अपने जीवन में श्री "सुमनेश" जी मायाराम संस्कृत विद्यालय, राष्ट्रीय इन्टर कालेज राया सेठ बी० एन० पोद्दार माध्यमिक विद्यालय और सर्वोदय इन्टर कालेज चौमुँहा में संस्कृत शिक्षक पद पर आसीन रहे और वहीं से सेवा निवृत्त होकर राजकीय पेन्शन प्राप्त की।

श्री "सुमनेश" जी पैतृक परम्परागत वैदिक सनातन धर्मी वैष्णव और शाक्त विद्वान थे। पैतृक रूप में धीरे-धीरे उन्होंने अपने पूर्वजों की परम्परा में महाभारत तथा श्री मद्भागवतादि अष्टादश पुराणों की कथा वक्तता में पटुता प्राप्त की। उनकी कथा शैली अतीव मधुर श्रुतिग्राह्य एवं चितार्कर्षक थी। फलतः—श्री कल्यान जी करमसी दाम जी विले पार्ले (वैस्ट) बम्बई ५६ द्वारा आयोजित श्री मद्भागवत अष्टोत्तरशत सप्ताह पारायण के प्रधान व्यास पीठ पर अलंकृत हुए। यही सम्मान आपको कलकत्ता परायण में भी प्राप्त हुआ।

"सुमनेश" जी की जहाँ अपनी एक मधुर कथा शैली थी। वही हिन्दी तथा ब्रजभाषा काव्य रचना और उसका श्रुति मधुर उच्चारण का भी अपना अनूठा ही ढंग था। आपने काव्य दीक्षा विधिवत् मथुरा के महोली पौर निवासी गुरुवर श्री प्रियत्तमदत्त चतुर्वेदी (चच्चन) जी से

ग्रहण की। "सुमनेश" जी ने विविध हिन्दी गीतों के साथ ब्रजभाषा में तानों की भी रचना की। आपने अपने जीवन में भारत के विभिन्न नगरों में आयोजित कवि सम्मेलनों में भाग लेने के साथ एक लम्बी अवधि तक आकाशवाणी केन्द्र दिल्ली और लखनऊ तथा मथुरा से अपनी काव्य रचना ओं का मनोहारी प्रसारण किया। यहां तक कि जीवन के अन्तिम दिनों में भी तीन जून ८८ को आकाशवाणी केन्द्र द्वारा मथुरा से प्रसारण कर १० जून ८८ को मथुरा आकाशवाणी केन्द्र द्वारा आयोजित अखिल भारतीय ब्रजभाषा कवि सम्मेलन बल्देव में भाग लेने के लिए आपने हलाष्टक की रचना की। किन्तु दैव-दुर्विपाक से वे उक्त कवि सम्मेलन में भाग न ले सके।

श्री "सुमनेश" जी को यथा स्थान यथा काल पुराण रत्न, कविरत्न, ब्रजभाषा रत्न, ब्रज विभूति आदि उपाधियों से सम्मानित किया गया। आप सोलह फरवरी सन् १९७५ को भारत के उपराष्ट्रपति श्री बी० डी० जत्ती द्वारा सम्मान पत्र से सम्मानित हुए। अखिल भारतीय शिशु स्मृति समारोह सिकन्दराराऊ (एटा) में ताम्रपत्र से सम्मानित हुए, तो दूसरी ओर (रस भारतीय) मथुरा, संगीत कला मन्दिर कलकत्ता, श्री हरिदास सेवा संस्थान वृन्दावन, जाग्रति कला संगम मथुरा, स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती अमृत महोत्सव वृन्दावन पूज्यपाद श्री रामचन्द्र डोंगरे आदि के द्वारा अभिनन्दित और सम्मानित किये गये। आपकी रचनाऐं यथा काल अग्निकुमार, वैश्वानर, ब्रजभारती, श्री वल्लभ विज्ञान, देशबन्धु इत्यादि मासिक पत्रों में प्रकाशन के साथ शिक्षक संसार तथा अनेक विद्यालयों की वार्षिक पत्रिकाओं तथा गौरवमय अभिनन्दन ग्रन्थों में प्रकाशित हुई है।

आपने आराधनात्मक अनेक संस्कृत ग्रन्थों का निबन्धन किया है। जिनमें आंद्याक्रम निरुपण, पूजारत्न (पूर्बार्ध, उत्तरार्ध) श्री चरणा नामपत्र श्री ललिता पूजन सृति, श्री दुर्गा सप्तशती रहस्य, पार्थिव पूजा श्री महा लक्ष्मी हृदय, सर्व तन्त्र मन्त्र संगह, श्री वटुक भैरव कवच, बटुक भैरव पद्धति, आपदुद्धार वटुक भैरव स्तोत्र, स्वर्णा कर्षण भैरव दीप दान, स्वर्णा कर्षण भैरव स्तोत्र, इन्द्राक्षी स्तोत्र, गायत्री उपासना क्रम, त्रिपुर सुन्दरी क्रम, आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया हैं इसी प्रणयन क्रम में महाभारत रहस्य सागर, अष्टादश पुराण कल्पतरु, गीता विवेचन और रहस्य हैं।

श्री "सुमनेश" जी खड़ी बोली और ब्रजभाषा के जाने माने सिद्ध

हस्त कवि थे। कवि सम्मेलनों में उनकी कोकिला कंठी वाणी को अतीव समादर प्राप्त होता था। उनकी भाषा शैली प्रवाहमयी, रसमयी और अलंकार युक्ता थी। उनकी रचनाओं में रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक, अनुप्रास, श्लेष, व्यतिरेक, प्रतीक, अपुनहति, क्षेका, भ्रान्तिमान् आदि आदि अनेकानेक अलंकार सहज उत्पन्न हो जाते थे। उनकी रचनाओं में चिन्तालहरी सुमनेश काव्य सुधा, सुमनेश के अधूरे सपने, सुमनेश परिवार गरिमा, भारत गरिमा, गागर में सागर हिलोर उटयौ, कृष्ण-राधा-शिव-सरस्वती लक्ष्मी-माधव-उद्धव-गोपी विरह गांधी (सभी शतक) गांधी का राम राज्य छन्द चालीस, १६७ अष्टक हैं। किन्तु खेद है कि सुमनेश जी के जीवनकाल में कतिपय प्रस्फुट रचनाओं के अतिरिक्त कोई भी काव्य ग्रन्थ मुद्रित न हो सका।

'सुमनेश' जी के गोवर्धननाथ, महेन्द्रनाथ, राजेन्द्रनाथ, नरेन्द्रनाथ, देवेन्द्रनाथ, गजेन्द्र नाथ और श्रीमती उमा, कृपा, गायत्री, सावित्री, सुधा नामक छः पुत्र और पांच कन्या जन्मी। द्वितीय पुत्र महेन्द्र नाथ एक अच्छे सुकवि और शास्त्र वेता थे, किन्तु वे युवावस्था के प्रवेशकाल में ही दिवगन्त हो गये और कन्या सावित्री चतुर्वेदी भी। शेष सभी पुत्र उच्च शिक्षा प्राप्त, संस्कृत के विद्वान एवं सेवारत हैं।

इस प्रकार वह विद्वान मनीषी अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ कर सम्वत् २०४५ विक्रमी के द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी मंगलवार तदनुसार ११ जून ८८ को साहित्य और विद्याकाशका ज्वलन्त नक्षत्र अखण्ड ज्योति पुञ्ज में विलीन हो गया।

ज्यो० राधेश्याम द्विवेदी
स्वामी घाट मथुरा (उ० प्र०)

श्री युवा सम्राट पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी 'तान्त्रिकमणि'
का
संक्षिप्त जीवन परिचय
लेखक परिचय

नाम—नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी
उपनाम—"तान्त्रिकमणि"
पूरा नाम—पं० नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी "तान्त्रिकमणि"
स्थायी निवास—गुरुवर विरजानन्द सरस्वती,
दयानन्द सरस्वती साधना स्थली
मकान नम्बर ६०७ गतश्रम टीला, मथुरा।
जन्म स्थान - जनपद मथुरा।
जन्मतिथि—७-६-१९५४
जन्म (सम्वत्)—२०१० भाद्रपद शुक्ला सप्तमी
आतमजा—पं० श्री दीनानाथ चतुर्वेदी "सुमनेश"
जाति—माथुर विप्र
धर्म—वैदिक सनातन धर्म, वैष्णव और शाक्त परम्परा।
शिक्षा—आचार्य द्वय (साहित्याचार्य, फलित ज्योतिषाचार्य) साहित्य रत्न, बी० एड०
विशेष शिक्षा—महाभारतादि १८ पुराणों के परम्परागत सुप्रसिद्ध प्रवक्ता एवं साहित्य, ज्योतिष, तन्त्र मन्त्र मर्मज्ञय।
कलापटुता—वाक् चातुर्य
मातृभाषा—ब्रजभाषा
काव्य भाषा—हिन्दी संस्कृत
काव्य गुरू—श्री डॉ० श्री पं० कृष्ण चन्द्र चतुर्वेदी
गजापायसा मथुरा।
सम्मानोपाधि- पुराण रत्न, पुराण केसरी, युवा सम्राट
व्यवसाय—पठन पाठन पाण्डित्य पौरोहित्य
विवाह—महौली पौर (मथुरा निवासी पं० श्री बैजनाथ चतुर्वेदी 'चुकद्दम' उनकी कन्या श्रीमयी 'बीना' चतुर्वेदी जी से सम्पन्न हुआ।
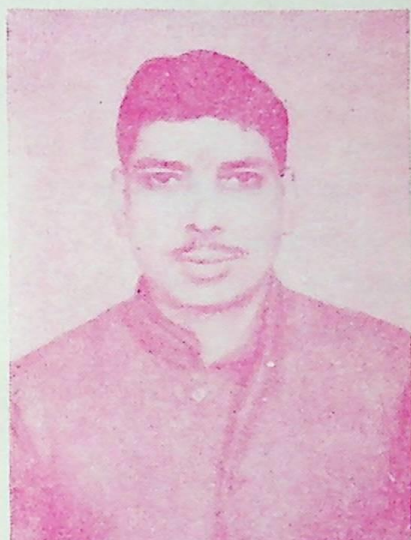
लेखक :-

श्री युवा सम्राट पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी "तान्त्रिकमणि"

शैक्षिक कार्य—पाँच वर्ष से शास्त्री विद्यालय. इरौली जुन्नादार (मथुरा) में सेवा रत।

प्रकशित ग्रन्थ—श्री दक्षिण कालिका पद्धति एवं श्री महाकाली साधना तन्त्र, गायत्री साधनामन्त्र, श्री गणेश साधना तन्त्र, श्री दुर्गा साधना तन्त्र शोड्षाङ्ग पूजन, श्री महाकाल भैरव साधना रहस्य तन्त्र आदि।

अप्रकाशित ग्रन्थ—भैरव उपासना तन्त्र, अष्टादश पुराण कल्पतरु बगला मुखी साधना रहस्य।

—हस्ताक्षर

पं. कन्हैयालाल जी पौराणिक"

बगीची वाले चामढ़ गेट
नई धर्मशाला के पास
हाथरस

श्री १०८ श्री कामेश्वर नाथ जी महाराज
श्री विद्या शक्ति पीठाधिपति
विश्रामघाट, मथुरा

शुभाशीर्वचन

श्री गणेश साधना तन्त्र में समाविष्ट गणेश साधना के विविध विषयों का अवलोकन कर प्रसन्नता हुई शक्ति साधना का प्रमुख अङ्ग गणेश साधना पर इतनी एकत्रित सामग्री अन्यत्र दुर्लभ है। मेरा विश्वास है कि यह ग्रन्थ रत्न जन सामान्य के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। विद्वान लेखक पं० नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी तान्त्रिकमणि एवं प्रकाशक महोदय के लिये शुभाशीर्वचन।

——शुभाशंसु
कामेश्वर नाथ

॥ श्री जयति ॥

श्री श्री जी मन्दिर गतश्रम टीला, मथुरा. (उ० प्र०)
प्रधान पीठाधीश्वर श्री १०८ श्री करुणाशंकर जी महाराजाचार्य

"कामेश्वर मुखालोकः कल्पित श्री गणेश्वराः"
महा गणेश निर्विघ्न विघ्न यन्त्र प्रहर्षिताः ॥

महा गणपति उपासना साहित्य में "श्री गणेश साधना तन्त्र" के रचयिता श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी आचार्य द्वय, शिक्षा शास्त्री तान्त्रिकमणि ने श्री गणपति की समग्र विधा का साङ्गोपाङ्ग संकलन कर प्रशंसनीय कार्य किया है।

भगवती श्री राजराजेश्वरी श्री जी से निरन्तर कामना हैं कि लेखक भगवत्भक्ति में रत रह साधना मार्ग पर अग्रसर हों।

पं० कृष्णानन्द चतुर्वेदी
साहित्य ज्योतिषाचार्य शास्त्री साहित्य रत्न
३५१, गली पीरपंच, मथुरा.

तान्त्रिक–याज्ञिक सम्राट पण्डित राज

श्री चन्द्रशेखर पण्ड्या

पण्ड्या गयी हाथरस (सिटी)

॥ श्रीः ॥

अस्य श्री गणेश साधना तन्त्रस्यसि प्रशस्तिः ॥

श्री तपन तनयाती रेऽस्मिन् मथुरा नगरे गतश्रम टीलानि वानो ऽ नेकानेक शास्त्र वेत्तारो विद्वद्वर्या मथुरास्थ माथुर चतुर्वेदि वंशावतंसाः श्री वनमालि जी महोदयस्यात्मजाः श्री रणछोर जी महोदया महाभारत स्य बक्तारोमर्मज्ञाश्च भवतां कथा प्रवचन काले मन्त्रमुग्धा मृगाइव श्रोता रोऽपि इन्द्रियातीताऽऽ नन्द सागरे निमग्ना भवन्तिस्म ॥

परम विदुषां रणछोर जी महोदयानां देहात्पृथभूताः स्वात्मस्वरूपा- रिव "सुमनेश" उपाधि विभूषिताः श्री दीनानाथ जी महोदयाः सुपुत्राः ।

भवन्तो न केवलं कथा पटवोऽपितु बालकालतः सुमधुर काव्यरचना यामपि कुशला एवं परम्पराप्राप्तं तन्त्रशास्त्र समुदिधतम् ।

रचितं गणेश साधना तन्त्रं श्रीदीनानाथ महोदयैः । भवतांसुतनयोऽयं नरेन्द्रनाथो श्री जगदम्बायाः कृपापात्रः अस्य गणेशसाधना तन्त्रस्य समुदिध तं करोति ।

अस्याः कुल परम्परायास्तथा चस्य तन्त्रस्य हार्दिकानि नन्दनं मम भवतां ।

शुभेच्छु :—

चन्द्रशेखर पण्डया

आचार्य श्री श्यामसुन्दर चतुर्वेदी एम० ए०

प्राचार्य

श्री द्वारकेश संस्कृत महाविद्यालय, श्री द्वारकाधीश मंदिर मथुरा

शुभाशंसा

किसी भी कार्य सिद्धि के लिये सर्वप्रथम गणेश आराधन भारतीय धर्म की अनवच्छिन्न परम्परा हैं। कलियुग में तो शीघ्र सिद्धिप्रद देवों में विघ्न विनाशन गणेश का प्रमुख स्थान है।

कलौ जागर्ति गोपालः कलौ जागर्ति भैरवः।
कलौ जागर्ति हनुमान् कलौ चण्डी विनायकौ॥

अतः वर्तमान युग में "गणेश साधना तन्त्र" जैसी सारगभित पुस्तक की महती आवश्यकता थी, विद्वान लेखक पं० नरेन्द्रनाथ जी चतुर्वेदी ने गागर में सागर उक्ति को चरितार्थ करते हुए गणेश साधना के सभी प्रमुख विषयों का समावेश कर साधकों के लिये सरल पथ प्रशस्त किया है। लेखक प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

मङ्गलाकांक्षी :

आचार्य श्यामसुन्दर चतुर्वेदी

।। तमसो मा ज्योतिर्गमय् ।।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्राकौं यत्र साक्षिणौ ।।

आचार्य पं० कैलाशचन्द्र 'कृष्ण'
साहित्य, ज्योतिष, सिद्धान्तरत्न, धर्म-साहित्यालङ्कार
कुशक गली, मथुरा--२८१००१

मथुरास्थ तन्त्र परम्परा में श्री नन्दराम जी, श्री मानूड़ाराम जी, श्री श्री १०८ पं० श्री बनमालि जी, श्री श्री १०८ पं० श्री रणछोड़लाल जी, श्री दीनानाथ जी चतुर्वेदी ''सुमनेश' का वंश सुविख्यात रहा है ।

प्रस्तुत "श्री गणेश साधना तन्त्र'' ग्रन्थ के प्रणेता पं० श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (साहित्याचार्य, फलित ज्योतिषाचार्य, साहित्य रत्न बी० एड०) सर्व श्री दीनानाथ जी 'सुमनेश' के तृतीय पुत्र रत्न है, मैं उनसे उनके बाल्यकाल से ही परिचित हूँ । उन्होंने अपने शैक्षिक जीवन में अनवरत कठिन साधना से ज्ञानार्जन कर अपने पूर्वजों की कीर्ति पताका को गगनोत्तोलित किया है ।

श्री गणेश साधना तन्त्र का लेखन दुष्प्राप्य श्री गणेशयामल ग्रन्थ और उपासना क्रम वंशानुगत आधार पर होकर श्री गणपति उपासकों के लिये एक अनुपम और उपादेय बना है, इसमें जहां तक मैं समझता हूँ मतैक्य ही होगा, मत वैषम्य नहीं ।

ग्रन्थ प्रस्तुति में महा गणपति मङ्गलाचरण से शुभारम्भ होकर वन्दनाष्टक, सङ्कटनाशन स्तोत्र, प्रातः स्मरण, तत्सम्बन्धी ब्राह्म मुहूर्त्त कृत्य, श्री गुरू पादुका पञ्चक, गुरू परम्परा पञ्चक, कुण्डलिनी पञ्चक, शिवशक्ति स्तोत्र, श्री गणेश कवच, संकष्ट चतुर्थी व्रत विधान, आपदुद्धारण गणेशाष्टक महागणपति क्रम, गणेश तर्पण विधान, सपर्याविधि, मन्दिर प्रवेश याग, श्री गुरोर्पादुकार्चन, सङ्कल्पान्तर्गत आसन, घण्टा, दीप पूजन, शिखाबन्धनादि क्रम विशेष, पात्रासाद्य यन्त्र पूजन पद्धति, पीठोर्पार प्राणप्रतिष्ठादि क्रम, पञ्चोपचार-दशोपचार-द्वादशोपचार--षोडशोपचार- षट्त्रिंशत्योपचा-

रादि का पूजा विधान, श्री गणेश सहस्रनामद्वय, तुरीयावस्थादि तथा उच्छिष्ट गणपति तक की विधि वर्णित है ।

यद्यपि श्री गणपति तन्त्र विधान में द्वादश गणपति तथा बामन गणपति ही नहीं अपितु सहस्र गणपति तक की स्थिति प्राप्त होती है। परन्तु "पश्यन्त्योमद् विभूतयः" की भाँति अनेक गणपतियों में प्रधान महागणपति ही है। जिनकी आराधना उपासना से जीव को पुरुषार्थ चतुष्टय का लक्ष्य प्राप्त होता हैं।

विद्वान् लेखक से भविष्य में अन्य अभावों की पूर्ति की आशा हैं। सम्भवतः वह अग्रिम संस्करण में अन्य अवशिष्ट अभावों का अवश्य समन्वय करेंगे। मेरी सम्मति में प्रस्तुतिकरण के लेखक पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी तान्त्रिकमणि साधु वादार्ह या धन्यवादार्ह ही नहीं अपितु स्वयं में "श्री गणेशानन्द" उपाधि के समलङ्करण के योग्य हैं। मैं भगवान्श्री गणपति से उनके उज्वल भविष्य की मङ्गलकामना हृदय से करता हूँ।

— विदुषामनुचर
आचार्य कैलाश चन्द्र 'कृष्ण'

याज्ञिक–कर्मकाण्ड सम्राट श्री विष्णु राम नागर
नागर गली, गोलपाड़ा मथुरा.

क्रोडं तातस्गच्छन् विशद बिपधिया शावकं शीतभानो।
राकर्षन भाल वैश्वानर निशित शिखारो चिषा तप्यमानः॥
गंगाम्भः पातुमिच्छन् भुजग पतिफणा फूत्कृतैर्दयमानो।
मात्रा संवोध्य नीतो दुरित मपनयेत् वालवेषौ गणेशः॥

मथुरास्थ विद्वानों में मूर्धन्य श्री श्री १०८ श्री आचार्य वनमालीजी तहाराज श्री के प्रपौत्र एवं श्री पुराण मर्मज्ञ श्री रणछोर जी महाराज के पौत्र व श्री दीनानाथ जी सुमनेश साहित्याचार्य एम० एम० कविवर के सुयोग्य पुत्र पं० श्रीनरेन्द्रनाथ तान्त्रिकमणि आचार्य द्वय शिक्षा शास्त्री साहित्यरत्न पुराण केसरी ने श्रीमहागणपति साधना तन्त्र में तन्त्रानुसार निगमागम प्रतिपादित सर्व विद्या सम्पन्न का अपने अथक परिश्रम से निष्पादित कर तन्त्र साधकों एवं गणपति साधकों के लिये अत्यन्त उपयोगी सरल मार्ग प्रशस्त किया है एतदर्थ वे अति प्रशंसा के पात्र हैं मैं उनकी दीर्घायु कामना व उन्नति के लिए श्री महगणपति से बिद्वान एवं सुयोग्य साधक श्रेष्ठ के लिए सतत प्रार्थना व मंगल कामना करता हूँ।

—सम्मति प्रदो
विष्णु राम नागर

डा० नटवर नागर एम. ए. (हिन्दी), सा. रत्न (संस्कृत) एम. लिट्., वि. वाचस्पति, पी. एच. डी., वि. सा. (डी. लिट्.)
आचार्य हिन्दी विभाग, मा० च० सं० महाविद्यालय, मथुरा
महामन्त्री : हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा
५३९ बिहारी पुरा मथुरा (उ० प्र०)

ज्ञानार्थ वाचको गश्च णश्च निर्वाणवाचकः ।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम् ।।

गणपति अथर्वशीर्ष में 'त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रः' आदि कह कर गणपति को सर्वरूप कहा गया है। अन्य शास्त्रों में भी गणपति को 'पूर्णब्रह्म' की संज्ञा दी गई हैं। उस पूर्ण ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कर लेना ही चरम शिखर पर पहुँचना है। आलोच्य पुस्तक में गणपति की समग्र विधा को संकलित किया गया हैं, जिसके माध्यम से साधक उस चरम शिखर पर पहुँच सकता हैं। विद्वान लेखक ने यह पुस्तक दूसरों के कल्याणार्थ लिखी है अतः उसका यह प्रयास स्तुत्य हैं।

आलोच्य पुस्तक के लेखक तान्त्रिकमणि, आचार्य नरेन्द्रनाथ (साहित्याचार्य, फलित ज्योतिषाचार्य, साहित्यरत्न, बी० एड०) हैं। आप आचार्य वनमालीजी के प्रपौत्र एवं कविवर आचार्य दीनानाथ 'सुमनेश' के सुपुत्र है। इनका परिवार मथुरा का प्रसिद्ध तान्त्रिक परिवार है। मुझे हर्ष है कि लेखक ने अपने परिवार की तांत्रिक परम्परा को आज भी जीवन दे रखा हैं। मैं इनके उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे परोपकारार्थ इसी प्रकार लेखनी चलाते रहेंगे।

हस्ताक्षर
—डॉ० नटवर नागर

("क" वर्गीय)

श्री माथुर चतुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय
श्री दीनदयाल (डैम्पियर) नगर; मथुरा (उ. प्र.)

प्रेषक :—
डा० अयोध्यानाथ चतुर्वेदी, "वेदाचार्य"
श्री मा० च० सं० म० वि० मथुरा।

"विबुध प्रिया"

सं वभूव पुराणविच्छ्रुति शास्त्र सार विचारकः,
आगमाप्त यशो भरो वनमालि विप्र भू सुर साधकः।
तस्य सूनुरयं सुधी रणछोर रात्म परो यतिः।
तत्सुतोऽपि च दीननाथ कवीरराज महामतिः।

"सोरठा"

दीननाथ पुत्रेण, श्री नरेन्द्रनाथा मुना।
लिखितो वहु यत्नेन, श्री गणेश साधन विधिः।

श्री गणेश साधना तंत्रेऽस्मिन् ग्रन्थे संग्रहकर्त्ता लेखककेनयेत् तंत्र विद्यायाः स्वकीयं मौलिकं ज्ञानं प्रस्तुतं तेन साधकानां गणेशोपासकानां कृते अनायासे नैव गणेश सिद्धिर्भविष्यति अभूत पूर्व ग्रन्थं मिमं चमत्कृतान्तोहं हृदये न मन्ये।

आयुष्मन्तं नाना तंत्र ग्रंथा वलोकेन लब्धवर्ण चतुर्वेदि वंशावतसं पं० श्री नरेन्द्रनाथ पं० दीनानाथ "सुमनेश" जी साहित्याचार्य शुभाशीः परम्पराभिर्योगम्यामि, भवानीध संभवं च प्रार्थयामि च एवं भूतान् नाना देवा साधनां प्रदर्शकान् ग्रन्थान् भूयो भूयः तन्त्र विद्यानुरागिणामभिमुखी करोतु।।इति।

—हस्ताक्षर
—अयोध्यानाथ चतुर्वेदः

।। श्री बालकृष्णो विजयते ।।
।। श्री व्यासाश्रम ।।

वेदवेदांग संस्कृत श्री वैष्णव वियद्‌ालय

पं. मुरारीलाल चतुर्वेदी, साहित्याचार्य

प्रधानाचार्य—भागवत, सप्ताह कथाव्यास, सामवेदी, मानस-मधुकर, गीतामार्तण्ड, वेदालंकार

"चतुर्भुजं रक्त तनु त्रिनेत्रं पाशांङ्कुशौ मोदकपात्र दन्तौ ।
करैर्दधानं सरसी रुहस्थं गणाधि नाथं शशि चूड़मीडे ।।

सप्तपुरीषु शेखराय माणायाम् श्री कृष्ण पुर्याम् प्रसिद्धायां मथुरा-भिधायाम चतुर्वेद कुल कमल भास्कराः तंत्र मंत्र पुराणज्ञ मूर्धन्याः श्री वनमालि शास्त्रिणः सं बभूवुः । तत्तनूजाः श्री रणछोर नामानो महाभारत व्याख्यान वाचस्पतयः संजातास्तत्सूनुवर्याः साहित्याचार्या हिन्दी साहित्य कोविदा कवि कुल मंडल भूषणाः कोकिल कंठा भरणाः वचन सुधा वर्णणेन सर्वजन तनो हारिण आसन । तत्कुल तत्व स्वरूपोयं नरेन्द्र नाथः कुल परम्परा प्राप्त प्रज्ञः गणेश ग्रन्थं संगृहय महता श्रमेण लोको पकारार्थम् प्रकाशयामास सदेवायं वंशवृद्धि समृद्धिञ्च कुर्वन् । सर्वकला कलाधरः सुदीर्घा युरारोग्यैश्वर्यवान् भूयाव ।

'गुप्तं विलुप्तञ्च गणेश ग्रन्थं, मुद्रापयामास पं० श्री नरेन्द्र नाथः पुराण तन्त्रज्ञ कुले प्रसूत स्तंन्त्रज्ञ मार्तण्ड पदं प्रदातः ।"

हस्ताक्षर
—मुरारीलाल चतुर्वेदः
चौबच्चा मथुरा

पं० श्री भगवानदास जी, तोड़ा वाले

महोली की पौर, मथुरा

श्लोक

गजाननं भूत गणाधि सेवितं,
कपित्थ जम्बू फलचारू भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वर- पादपंकजम् ।।
वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्बिघ्नं कुरु मे देव ! सर्वेकार्येषु सर्वदा ।।

मथुरास्थ पुराण और तन्त्र परम्परा में श्री श्री १०८ श्री पं० श्री नन्दराम जी महाराज, श्री श्री १०८ श्री पं० श्री बनमालि जी महाराज श्री श्री १०८ श्री पं० श्री रणछोर नाथ जी महाराज, श्री श्री १०८ श्री पं श्री दीनानाथ जी चतुर्वेदी "सुमनेश" पौराण—तन्त्र और काव्य सम्राट का वंश सुविख्यात रहा है। प्रस्तुत "श्री गणेश-साधना तन्त्र ग्रन्थ के प्रणेता पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी "तान्त्रिकमणि" हैं। उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा गागर में सागर सूरदास की इस उक्ति को श्री गणेश साधना तन्त्र में चरितार्थ कर दिखाया है। "कलौ चण्डी विनायकौ" के अनुसार कलियुग में शीघ्र सिद्धिप्रद देवों में चण्डी और बिघ्न विनाशन गणेश का प्रमुख स्थान हैं। इस समय के अनुसार श्री गणेश साधना तन्त्र साधकों के लिए पूर्ण उपयोगी सिद्ध होगा। विद्वान लेखक पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी "तान्त्रिकमणि" और प्रकाशक महोदय के लिए शुभाशीर्वचन श्री महा गणपति से विद्वान और सुयोग्य उपासक के लिये सतत् मङ्गलमय कामना करता हूँ।

भगवत् भक्त
भगवानदास तोड़ा वाले

("क" वर्गीय)

श्री निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय

वृन्दावन

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्व सोख्य प्रदायिने ।
दुष्टारिष्ट विनाशाय पराय परमात्मने ।।

मथुरा नगरी में तन्त्र परम्परा में प्रवीण श्री श्री १०८ श्री पं० श्री मानूड़ाराम जी महाराज, श्री श्री १०८ श्री पं० श्री बनमालि जी महाराज, श्री श्री १०८ श्री पं० श्री रणछोर नाथ जी महाराज, श्री श्री १०८ श्री पं० श्री दीनानाथ जी चतुर्वेदी सुमनेश का वंश सुप्रसिद्ध रहा हैं ।

इस "श्री गणेश साधना तन्त्र" ग्रन्थ के रचयिता व लेखक युवा सम्राट पं० श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी "तान्त्रिकमणि" है जो कि सर्व श्री पं० दीनानाथ जी चतुर्वेदी "सुमनेश" के तृतीय पुत्र रत्न है । उन्होंने अपने शिक्षाकाल में अति कठिन मेहनत से ज्ञानार्जन कर अपने पूर्वजों की कीर्ति को गगनोंतोलित किया हैं । श्री महागणपति साधकों के लिए इस कलि-काल में श्री गणेश साधना तन्त्र के द्वारा एक सरल मार्ग प्रशस्त किया है । विद्वान् लेखक से भविष्य में अन्य अभावों की पूर्ति की आशा की जाती है । वे अग्रिम संस्करण में अन्य अवशिष्ट अभावों का अवश्य समन्वय करेंगे । मेरी सम्मति में लेखक 'युवा सम्राट' पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी "तान्त्रिक मणि" प्रशंसा के पात्र है । मैं भगवान श्री महागणपति से उनके सुन्दर भविष्य की मङ्गल कामना करता हूँ ।

हस्ताक्षर

— प्राचार्य' बैद्यनाथ 'झा'

अथ श्री गणेश-साधना-तन्त्र
की
विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
प्राक्कथन	३
वंश वृक्ष	१६
संक्षिप्त परिचय (चित्र सहित)	१७
सम्मति	२६
गणेश चित्र—	
गणेश यन्त्र—	
वेदोक्त-श्री गणेश-स्तवन	१
लघुषोढ़ा न्यास	३
गणाधीश स्तोत्र	६
महागणपति लोक	८
महागणपति मङ्गलाचरणम्	६
श्री गणेश वन्दना	१०
अष्टक गणेश वन्दना	१०
विनियोगः	१२
श्री संकट नाशन गणेश स्तोत्र	१२
गणेश स्तुतिः प्रातः स्मरण गणेश	१३
ब्राह्म मुहूर्त कृत्यम्	१४
ध्यानम्	१५
श्री गुरु पादुका पञ्चकम्	१५
श्री गुरू परम्परा पंचक स्तोत्र	
ध्यानम्	१७
श्री गुरू परम्परा पंचक स्तोत्र	१७
श्री कुण्डलिनी पंचकम्	१८

विषय	पृष्ठ
अथ प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति	
मुखार विन्दम् स्तोत्र	१६
गणेश कवचम्	२१
संङ्कष्ट चतुर्थी व्रतोपयुक्ताः	
अर्घ्य मन्त्राः	२४
ध्यानम्	२४
संकष्ट हरणं गणेशाष्टकम्	२५
श्री महागणपति क्रम	२७
ब्राह्म मुहूर्त कृत्यम्	२७
अथ चतुरावृत्ति तर्पणम्	२८
अथ सपर्या पद्धति	३६
याग मन्दिर प्रवेशः	३६
तत्वाचमनम्	३७
श्री गुरु पादुका मन्त्रः	३७
घटा पूजा	३८
संकल्पः	३८
आसन पूजा	३८
दीप पूजा	३६
शिखा बन्धनादि मातृका	
न्यासान्तम्	४०
अथ पात्रा सादनम्	४०
वर्धनी कलश स्थापनम्	४०
सामान्यार्घ्य विधिः	४१

विषय	पृष्ठ
विशेषार्घ्यविधिः	४६
पीठे प्राण प्रतिष्ठा	५३
पीठे शक्ति पूजा	५३
धर्माद्यष्टक पूजा	५४
अन्तर्यागः	५४
अथ षोडशोपचार पूजा	५७
चतुरायतन पूजा	५८
श्री महागणपति तर्पणम्	५८
षडङ्ग पूजा	५८
गुरु मण्डलार्चनम्	५९
१–दिव्यौघः	५९
२–सिद्धौघः	६०
३–मानवौघः	६०
आवरण देवता ध्यानम्	६०
प्रथमावरणम्	६२
द्वितीया वरणम्	६२
तृतीया वरणम्	६३
तुरीयावरणम्	६५
पञ्चमावरणम्	६६
दशवारं संतर्पयेत्	६८
शोडषनामार्चनम्	६८
धूपः	६८
दीपः	६९
नैवेद्यम्	६९
ताम्बूलम्	७२
अभ्यर्थ चतुर्थी-व्रत	७३
ततः पुण्याह वाचनम्	७३
विप्रवरण संकल्पः	७४
संस्कार गणपति	९८
कुलदीपः	१००
कर्पूरनीराजनम्	१००
मन्त्र पुष्पम्	१०१
तान्त्रिक नित्य होम विधिः	१०१
बलिदानम्	१०२
गणेशाष्टकम्	१०३
सुवासिनी पूजा	१०५
सामयिक पूजा	१०५
तत्वशोधनम्	१०६
पूजा समर्पण देवतोद्वासने	१०६
शान्तिस्तवः	१०७
विशेषार्घ्योद्वासनम्	१०७
श्री गणेश पंचरत्न स्तोत्रम्	१०८
श्वास-आरोहक्रम-अवरोहक्रम	१०९
शक्ति साधना "अजपा" गायत्री-शक्ति-उपासना	११०
संकल्प	११२
विनियोगः	११२
करन्यास	११२
हृदयादिन्यास	११३
ध्यानं	११३
मानस-पूजा	११४
अजपा शक्ति-स्तुति	११४
अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्	११५
अथ गणेशाथर्व शीर्ष व्याख्या स्यामः	११५
पुरश्चरण विधिः	११८
श्री महागणपति सहस्रनाम स्तोत्रम्	१२०
(क) विनियोगः	१२१
(ख) अथ न्यासः	१२१
(ग) अथ ध्यानम्	१२१
(घ) मानसोपचारैः सम्पूज्य	१२२
श्री महागणपति सहस्र नामावलिः	१५०

बिषय	पृष्ठ
(च) अथ कीलम्	१५०
(छ) अथ न्यासः	१५०
(ज) अथ ध्यानम्	१५१
मानसोपचारैः सम्पूज्य	१५१
गणेशस्तवराजः	१७८
विनियोगः	१७८
फलश्रुति	१८०
श्री गणेशवरैकविंशति नामानि	१८०
तान्त्रिक प्रयोगः सम्पुटित गणेश गीता	१८२
(१) प्रथमोऽध्यायः—सांख्य सारार्थ योगो नाम	१८२
(२) द्वितीयोऽध्यायः—कर्म योगीनाम	२०३
(३) तृतीयोऽध्यायः—विज्ञान प्रति पादनोनाम	२१६
(४) चतुर्थोऽध्यायः—वैध संन्यास योगों नाम	२३१
(५) पञ्चमोऽध्यायः—योगावृत्ति प्रशंसनो नाम	२४२
(६) षष्ठोऽध्यायः—बुद्धि योगो नाम	२५२
(७) सप्तमोऽध्यायः—उपासना योगो नाम	२५८
(८) नामाष्टमोऽध्यायः—विश्व रूप दर्शनो नाम	२६६
(९) नवमोऽध्यायः—क्षेत्र ज्ञातु ज्ञेय विवेक योगो नाम	२७५

विषय	पृष्ठ
(१०) दशमोऽध्यायः—उपदेश योगो नाम	२८७
(११) एकादशोऽध्यायः-त्रिविध वस्तु विवेक निरुपणं नाम	२९४
गणेश के द्वादश अद्भुत प्रयोग	३१०
(१) मंगल विधान के लिये	३१०
(२) मोक्ष-प्राप्ति के लिये	३१०
(३) सर्व विध रक्षा के लिये	३१२
(४) समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये	३१४
(५) विघ्ननाश के लिये	३१७
(६) संकट नाश के लिये	३१८
(७) चिन्ता एवं रोग-निवारण के लिये	३२०
(८) पुत्र की प्राप्ति के लिये	३२२
(९) श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये	३२३
(१०) लक्ष्मी प्राप्ति के लिये	३२५
(११) परिवार में पारस्परिक प्रेम-प्राप्ति के लिये	३२६
(१२) पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिये	३२७
गणेश मन्त्रं	३३२
श्री गणेश-साधना-तन्त्र का वैशिष्टय	३३४
श्री गणेश से तुलसीदास जी की याचना	३३५
जोहत गजानन को आनन सदा रहैं।'	३३५

——

श्री महागणपति (एकदन्त)
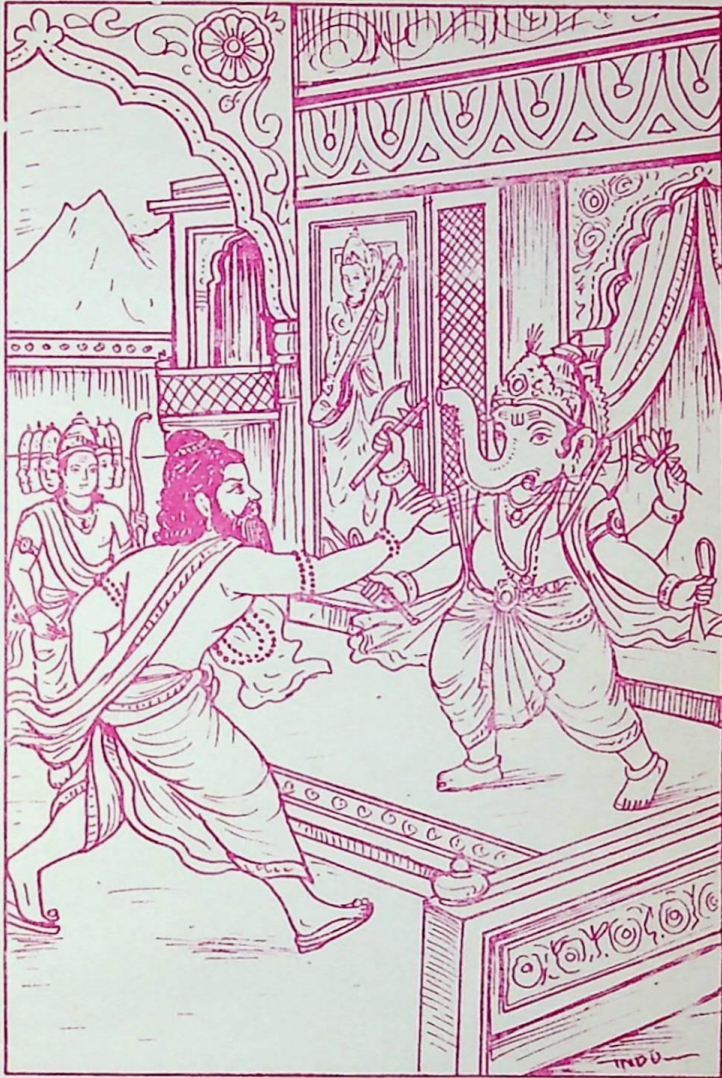
एकदन्तं शूर्प कर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धि विनायकम् ॥
ध्यायेद् गजाननं देवं तप्तकाञ्चन संनिभम् ।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरण भूषितम् ॥
दन्ताक्षमाला परशुं पूर्ण मोदक धारिणम् ।
मोदकासक्तशुण्डाग्रमेकदन्तं विनायकम् ॥
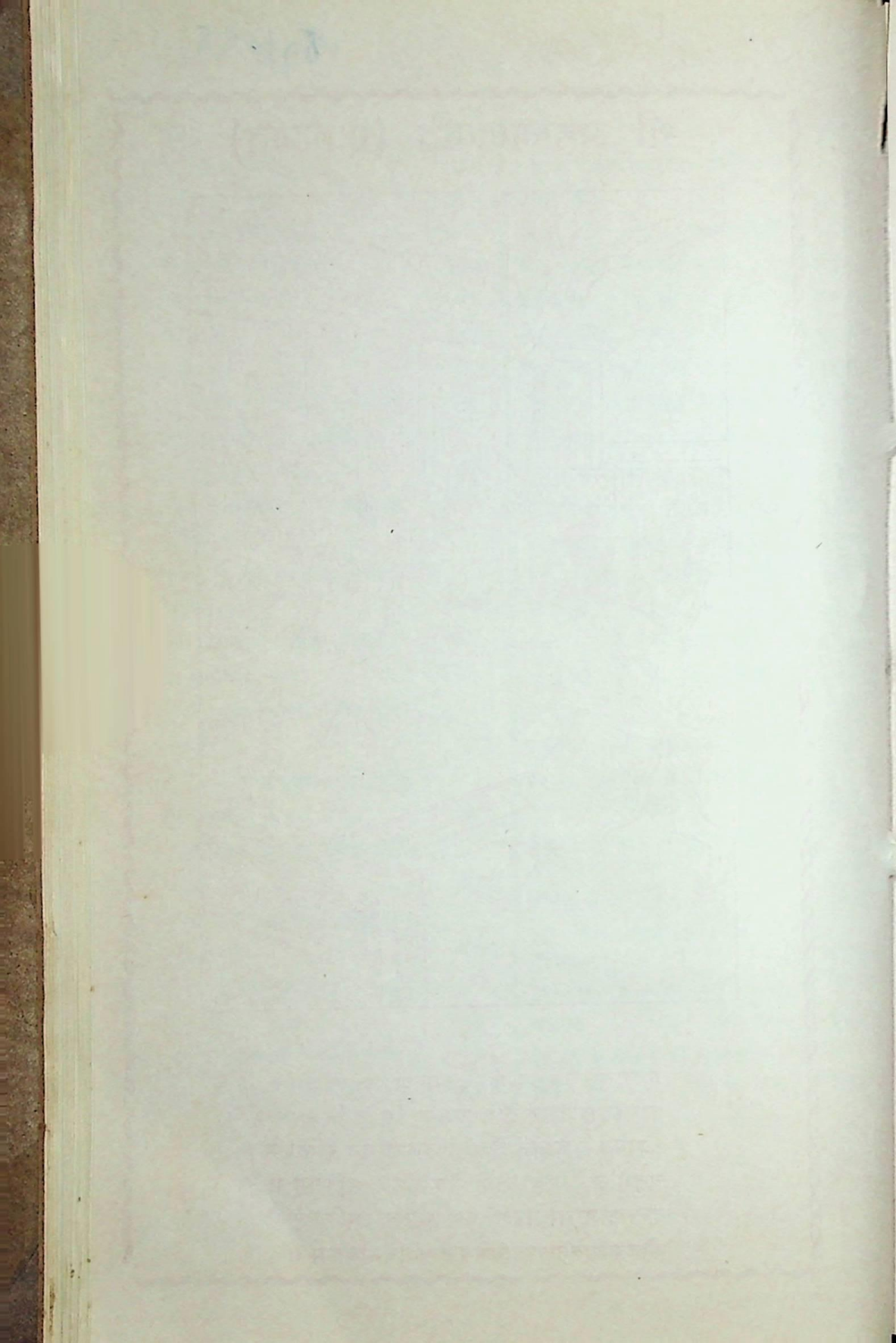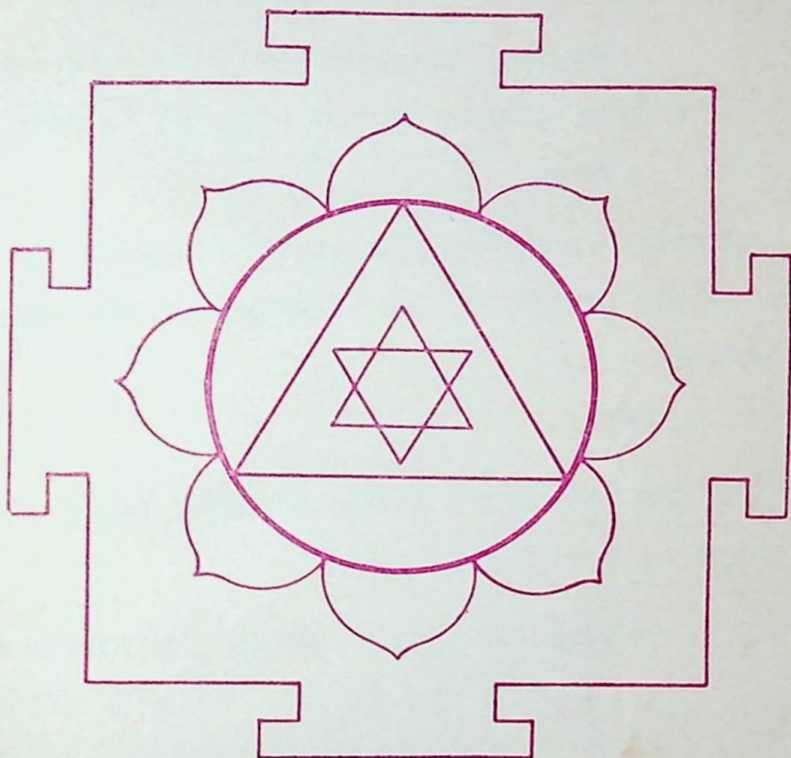
श्री महा गणपति यन्त्र राज

तत्र चतुरस्राष्ट दलषट् कोण-
त्रिकोणात्मकं महागणपति यन्त्रं विचिन्त्य

वेदोक्त--श्रीगणेश--स्तवन

नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम् ।
न ऋते त्वत्क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च ।।

(ऋग्वेद १० । ११२ । ६)

ॐ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुप मश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठ राजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

(ऋग्वेद २ । २३ । १)

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नोदन्ती प्रचोदयात् ।।

(तैत्तिरीय आरयण्क, प्रपाठक १०, अनुवाक १)

गणानांत्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे
निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम ।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।

(शुक्ल यजुर्वेद २३ । १९)

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो
नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ।।

(शुल्क यजुर्वेद १६ । २५)

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ।।

(ऋग्वेद १ । ४० । १)

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्रदेव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ।।

(ऋग्वेद १ । ४० । ३)

प्रनूनं ब्रह्मणस्पति र्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम ।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रोअर्यमा देवाओकांसि चक्रिरे ।।

(ऋग्वेद १ । ४० । ५)

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
पाशांकुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धि विनायकम् ।।
ध्यायेद् गजाननं देवं तप्त काञ्चन संनिभभू ।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरण भूषितम् ।।
दन्ताक्षमाला परशुं पूर्ण मोदक धारिणम् ।
मोदका सक्त शुण्डाग्रमेकदन्तं विनायकम् ।।

महा लघुषोढा न्यास

गणेश ग्रह नक्षत्र योगिनी राशि रूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकापीठ रूपिणीम् ।।

इन ५२ (बावन) मातृकाओं को 'लघुषोढा न्यास' के अन्तर्गत शक्ति सहित गणेश जी बताया गया है।

ऐं ह्रीं श्रीं अं श्रीं युक्ताय विघ्नेशाय नमः शिरसि ।।
ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं युक्ताय विघ्न राजाय नमः ।।मुखेवृत्ते।।
ऐं ह्रीं श्रीं इं तुष्टि युक्ताय विनायकाय नमः ।।दक्षनेत्रे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ईं शान्ति युक्ताय शिवोतमाय नमः ।।वामनेत्रे।।
ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टि युक्ताय विघ्नहृते नमः ।।दक्षकर्णे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ऊं सरस्वती युक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः ।।वामकर्णे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ऋं रति युक्ताय विघ्नराजे नमः ।।दक्षनासापुटे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ॠं मेधा युक्ताय गणनायकाय नमः ।।वामनासापुटे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ऌं कान्ति युक्ताय एकदन्ताय नमः ।।दक्षगण्डे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कामिनी युक्ताय द्विदन्ताय नमः ।।वामगण्डे।।
ऐं ह्रीं श्रीं एं मोहिनी युक्ताय गजवक्त्राय नमः ।।ऊर्ध्वोष्ठे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं जटा युक्ताय निरञ्जनाय नमः ।।अधरोष्ठे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ओं तीव्रा युक्ताय कपर्द भृते नमः ।।ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ।।
ऐं ह्रीं श्रीं औं ज्वालिनी युक्ताय दीर्घमुखाय नमः ।।अधोदन्त पङ्क्तौ।।
ऐं ह्रीं श्रीं अं नन्दायुक्ताय शङ्कुकर्णाय नमः ।।जिह्वाग्रे।।
ऐं ह्रीं श्रीं अः सुरसा युक्ताय वृषध्वजाय नमः ।।कण्ठे।।
ऐं ह्रीं श्रीं कं कामरूपिणी युक्ताय गणनाथाय नमः ।।दक्षबाहुमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं खं सुभ्रू युक्ताय गजेन्द्राय नमः ।।दक्ष कूर्परे।।

ऐं ह्रीं श्रीं गं जयिनी युक्ताय शूर्पकर्णाय नमः ।।दक्षमणिबन्धे।।
ऐं ह्रीं श्रीं घं सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः ।।दक्षकराङ्गुलिमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं ङं विघ्नेशी युक्ताय लम्बोदराय नमः ।।दक्षकराङ्गुल्यग्रे ।।
ऐं ह्रीं श्रीं चं सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः ।।वामबाहुमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं छं कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः ।।वामकूर्परे।।
ऐं ह्रीं श्रीं जं मदविह्वलायुक्ताय सदा शिवाय नमः ।।वाममणिबन्धे ।।
ऐं ह्रीं श्रीं झं विकटा युक्ताय आमोदाय नमः ।।वामकराङ्गुलिमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं ञं पूर्णा युक्ताय दुर्मुखाय नमः ।।वामकराङ्गुल्यग्रे।।
ऐं ह्रीं श्रीं टं भूतिदा युक्ताय सुमुखाय नमः ।।दक्षोरुमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं ठं भूमि युक्ताय प्रमोदाय नमः ।।दक्षजानुनि।।
ऐं ह्रीं श्रीं डं शक्ति युक्ताय एकपादाय नमः ।।दक्षगुल्फे।।
ऐं ह्रीं श्रीं ढं रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः ।।दक्षपादाङ्गुलिमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं णं मानुषी युक्ताय शूराय नमः ।।दक्षपादाङ्गुल्यग्रे।।
ऐं ह्रीं श्रीं तं मकरध्वजा युक्ताय बीराय नमः ।।वामोरुमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं थं वारिणी युक्ताय षण्मुखाय नमः ।।वाम जानुनि।।
ऐं ह्रीं श्रीं दं भृकुटी युक्ताय वरदाय नमः : ।। वाम गुल्फे।।
ऐं ह्रीं श्रीं धं लज्जा युक्ताय वाम देवाय नमः ।।पादाङ्गुलिमूले।।
ऐं ह्रीं श्रीं नं दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः ।।वामपादांगुल्यग्रे।
ऐं ह्रीं श्रीं पं धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय (द्वितुण्डाय) नमः ।। ।।दक्षपार्श्वे।।
ऐं ह्रीं श्रीं फं यामिनी युक्ताय सेनान्ये नमः ।।वामपर्श्वे।।
ऐं ह्रीं श्रीं बं रात्रि युक्ताय ग्रामण्ये नमः ।।पृष्ठे।।
ऐं ह्रीं श्रीं भं चन्द्रिका युक्ताय मत्ताय नमः ।।नाभौ।।

ऐं ह्लीं श्रीं मं शशि प्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः ।।जठरे।।
ऐं ह्लीं श्रीं यं लोला युक्ताय मत्त वाहनाय नमः ।।हृदये।।
ऐं ह्लीं श्रीं रं चपला युक्ताय जटिने नमः ।।दक्षस्कन्धे।।
ऐं ह्लीं श्रीं लं ऋद्धि युक्ताय मुण्डिने नमः ।।गलपृष्ठे।।
ऐं ह्लीं श्रीं वं दुर्भगा युक्ताय खड्गिने नमः ।।वाम स्कन्धे।।
ऐं ह्लीं श्रीं शं सुभगा युक्ताय वरेण्याय नमः ।।हृदयादिदक्षकरां-गुल्यन्तम्।।
ऐं ह्लीं श्रीं षं शिवा युक्ताय वृषकेतनाय नमः ।।हृदयादिवामकरां-गुल्यन्तम्।।
ऐं ह्लीं श्रीं सं दुर्गा युक्ताय भक्ष्य प्रियाय नमः ।।हृदयादिदक्षपादां-गुल्यन्तम्।।
ऐं ह्लीं श्रीं हं काली युक्ताय गणेशाय नमः ।।हृदयादि वाम पादां-गुल्यन्तम्।।
ऐं ह्लीं श्रीं लं कालकुब्जिका युक्ताय मेघ नादाय नमः ।।हृदयादि-गुह्यान्तम्।।
ऐं ह्लीं श्रीं क्षं विघ्नहारिणी युक्ताय गणेश्वराय नमः ।।हृदयादि-मूर्धान्तम्।।

इस प्रकार शब्द ब्रह्म श्री गणेश स्वरूप ओंकार का मातृकाओं के साथ विस्तार किया गया है। इन्हीं के योग से तन्त्रग्रन्थों में अनेक-स्तोत्र-मन्त्रों का अविर्भाव किया गया है, जिससे अनेक प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होती हैं। इसका विशेष माहात्म्य, गणेश पुराण, शिवपुराण, ब्रह्माण्ड पुराण आदि पुराणों में बताया गया है।

"गणपत्यथर्वशीर्ष उपनिषद्" भी गणपति-तत्व को बताता है। इसी प्रकार अन्य उपनिषद्-ग्रन्थों में भी इस तत्व का विचार किया गया है। "ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमः" (यजुर्वेद १६ । २५)

श्री शिवा-शिव द्वारा श्री गणेश का गुणगान

गणाधीश स्तोत्र

श्रीशक्ति शिवावूचतुः

नमस्ते गणनाथाय गणानां पतये नमः ।
भक्ति प्रियाय देवेश भक्तेभ्यः सुखदायक ।।१।।

स्वानन्द वासिने तुभ्यं सिद्धि बुद्धि वराय च ।
नाभिशेषाय देवाय ढुण्ढि राजाय ते नमः ।।२।।

वरदा भय हस्ताय नमः परशुधारिणे ।
नमस्ते सृणि हस्ताय नाभि शेषाय ते नमः ।।३।।

अनामयाय सर्वाय सर्व पूज्याय ते नमः ।
सगुणाय नमस्तुभ्यं ब्रह्मणे निर्गुणाय च ।।४।।

ब्रह्मभ्यो ब्रह्मदात्रे च गजानन नमोऽस्तुते ।
आदि पूज्याय ज्येष्ठाय ज्येष्ठ राजाय ते नमः ।।५।।

मात्रे पित्रे च सर्वेषां हेरम्बाय नमो नमः ।
अनादये च विघ्नेश विघ्नकर्त्रे नमो नमः ।।६।।

विघ्न हर्त्रे स्वभक्तानां लम्बोदर नमोऽस्तु ते ।
त्वदीय भक्ति योगेन योगीशाः शान्तिमागताः ।।७।।

किं स्तुवो योगरूपं तं प्रणमावश्च विघ्नपम् ।
तेनतुष्टो भव स्वामिन्नित्युक्त्वा तं प्रणेमतुः ।।
तावुत्थाप्य गणाधीश उवाच तौ महेश्वरौ ।।८।।

श्री गणेश उवाच

भवत्कृत मिदं स्तोत्रं मम भक्ति विवर्धनम् ॥९॥
भविष्यति च सौख्यस्य पठते शृण्वते प्रदम्।
भुक्ति मुक्ति प्रदं चैव पुत्रपौत्रादिकं तथा॥
धन धान्यादिकं सर्वं लभते तेन निश्चितम् ॥१०॥

॥ इति शक्ति शिवकृतं गणाधीश स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—

श्री महागणपति और परशुराम युद्ध

तीक्ष्णाग्रं वृष सूर्य रश्मि सदृश बाहौ च पशुं जहौ
तद्भष्टः सपपात दन्त मुसले विद्युत्प्रचण्डस्वनः।
पेतुः सूक्ष्मतमाः स्फुलिगस्ततयस्तीर्णा उदीर्णास्ततः
क्रोधे लक्ष्य समीक्षणेन नयने तिष्ठासतो दार्ढ्यतः॥
दन्तान्तोऽपि कृतान्तवत् प्रचलित स्तान्तीचिकीर्षुं भृंगुं
दिष्टया कीकसखण्डमण्डन करोऽधावद् गणः शाम्भवः।
योऽन्या स्थीनि चिनोति गृद्ध्रवदहो कपाल मालाकरः
सोऽयं किं निजनाथ पुत्ररदनं यान्तं सहेत क्वचित्॥
हा! हा! हेति जगाद देव निबहो यो व्योम गोऽभूत्तदा
हेरम्बस्य हतो रदोऽपि समदैस्तैः संरतुतः स्पर्धया।
भूमिः कम्पनमापिता भयमिता दध्रुर्दरं कन्दरा–
श्चिङ्घारं व्यदधुर्गजाः शिखिगणा गावो महिष्योहयाः॥

महागणपति लोक

"तन्त्रसार" में महागणपतिलोक' का निम्नोक्त वर्णन देखा जाता है।

नवरत्नमयं द्वीपं स्मरेदिक्षु रसाम्बुधौ ।
तद्वीचिधौतपर्यन्तं मन्दमारुत सेवितम् ॥
मन्दार पारिजातादि कल्प वृक्षलता कुलम् ।
उद्भूत रत्नच्छायाभिररूणी कृत भूतलम् ॥
उद्यद्दिनकरेन्दुभ्यामुद्भासित दिगन्तरम् ।
तस्य मध्ये पारिजातं नवरत्नमयं स्मरेत् ॥
ऋतुभिः सेवितं षड्भिरनिशं प्रीतिवर्द्धनैः ।
तस्याध स्तान्महापीठे रचिते मातृकाम्बुजे ॥
षट् कोणान्तस्त्रिकोणस्थ महागणपतिं स्मरेत् ॥

(द्वितीय परिच्छेद में उद्धत "शारदातिलक" में—१३ । ३२-३४)

'साधक ध्यान में देखे कि इक्षुरसमय सिन्धु में नवरत्नमय द्वीप है। इस द्वीप का प्रान्तभाग उस सिन्धु की लहरों से प्रक्षालित और मन्द-मन्द समीरण से परिसेवित है तथा वह मन्दार, पारिजात और कल्प वृक्ष की लता आदि से परिपूर्ण है। उद्भूत रत्नों की कान्ति से उस द्वीप का भूतल अरूणी कृत है तथा उदीयमान सूर्य और चन्द्र के द्वारा दिग्-दिगन्तर आलोकित है। उस द्वीप के मध्य भाग में नवरत्नमय पारिजात-वृक्ष का चिन्तन करे। उस स्थान की प्रीतिवर्धिनी छः ऋतुएँ निरन्तर सेवा करती हैं। उस पारिजात-वृक्ष के नीचे एक महापीठ है। उसके ऊपर पञ्चाशत् मातृका (वर्ण) मय कमल अङ्कित है। उसकी कर्णिका में षट्कोण है: और उसके भीतर एक त्रिकोणमण्डल है, जिसमें महागणपति विराजमान है। उनका स्मरण करे।"

श्री सिद्ध लक्ष्मी सहिता महागणपति

श्री महागणपति ध्यानम्

"देव सिद्ध लक्ष्मी समाश्लिष्ट पार्श्वम् अर्धेन्दु शेखर मारक्तवर्णं
मातुलुङ्ग गदापुण्ड्रेक्षु कार्मुकशूल सुदर्शन शङ्ख पाशोत्पल
धान्य मञ्जरीनिजदन्ताञ्चल रत्नकलश परिष्कृत पाण्येका
दशकं प्रभिन्नकट मानन्द पूर्णमशेषविघ्नध्वं सनिध्नं विघ्नेश्वरं

गणपति पूजन यन्त्र
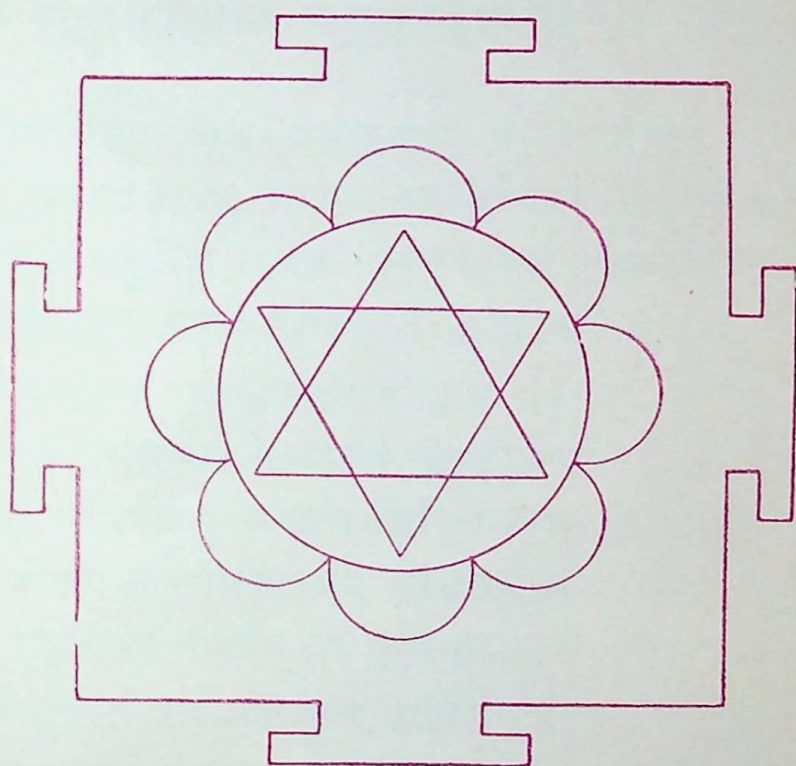
तत्र चतुरस्राष्ट दलषट् कोण-
त्रिकोणात्मकं महागणपति यन्त्रं विचिन्त्य

श्रीगणेश साधना तन्त्र प्रारम्भ

।। महागणपति मङ्गलाचरणम् ।।

हस्तीन्द्राननमिन्दु चूड मरुणच्छायं त्रिनेत्रान्वितं
आश्लिष्टं प्रियया सपद्म करया स्वांकस्थया संततम् ।
बीजापूर गदा धनुस्त्रि शिव युक्चक्राब्ज पाशोत्पल-
ब्रीह्यग्रस्व विषाण रत्नकलशान्हस्तैर्वहन्तं भजे ।।

गंड पालोगलछान पूरलालसमान सान् ।।
द्विरे फान्कर्ण तालाभ्यां वारयन्तं मुहुर्मुहुः ।।
कराग्र धृत्त मथिक्य कुंभवक्त्र विनिर्गतः ।।
रत्नवर्षैः प्रीगयन्तं साधकान्मद विह्वलम् ।।
माणिक्य मुकुटोपेतं सर्वाभरण भूषितम् ।।
एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुश धारिणम् ।।
रदं च वरदं हस्तै बिभ्राणं मूषक ध्वजम् ।।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्त वाससम् ।।
रक्त गन्धानु लिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ।।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् ।।
आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ।।
एवं ध्यायति यो नित्यं सयोगी योगिनांवरः ।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गणेश वन्दना

श्लोक—

बक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः
निर्विघ्नं कुरुमेदेव, सर्व कार्येषु सर्वदा ॥१॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता तेरी पार्वती पिता महादेवा ॥
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा ॥ जय० ॥
एकदन्त दयाबन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहै मूसे की सवारी ॥ जय० ॥
अंधन को आँख देत कोढिन कों काया ।
बाँझन को पुत्र देत निर्धन कों माया ॥ जय० ॥
हार चढें फूल चढें और चढें मेवा ।
सूरदास शरण आयौ सुफल कीजै सेवा ॥ जय० ॥

गणेश जी की वन्दना सबसे पहले करनी चाहिये वन्दना करने से गणेशजी बड़ी जल्दी प्रसन्न हो जाते है ।

अष्टक गणेश वन्दना

खर्व्वं स्थूलतनुं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरम् ।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्ध मधुप व्यालोल गण्ड स्थलम् ॥
दन्ताघात विदावितारि रुधिरैः सिन्दूर शोभाकरम् ।
वन्दे शैल सुतासुतं गणपतिं सिद्धि प्रदं कर्मसु ॥१॥

मुदाकरात्तमोदकं सदा विमुक्ति साधकम् ।
कलाधरा वतंसकं विलासि लोक रक्षकम् ।।
अनाथ कैक नायकं विनाशितेभ दंतकम् ।
नताशुभा शुनाशकं नमामितं विनायकम् ।।२।।
यजामो गणेशं भजामो गणेशं
जयामो गणेशं वदामो गणेशम् ।
स्मरामो गणेशं स्मरामो गणेशं
नमामो गणेशं नमामो गणेशम् ।।३।।

मदन दहनके पुत्र को सुमरूं बारम्बार ।
विघ्न मिटै संकट कटै, मंगल होय अपार ।।४।।
लम्बोदर भुज चार है, नेत्र तीन रंग लाल ।
नाना वर्ण सुवेश है, मुख प्रसन्न शशि भाल ।।५।।
विघ्ननिवारण सब सुखकारण भक्त उधारण ज्ञानधनम् ।
दैत्य विदारण परशु धारण ऋद्धि कारण देव वरम् ।।
गिरिजा माताषण्मुख भ्राता शङ्कर ताता सौख्य करम् ।।
भूसुर रक्षक मोदक भक्षक ज्ञानी लक्षक कीर्तिकरम् ।।६।।
काटत बंधन सब दुःख खण्डन गिरिजा नन्दनपाशधरम् ।
दुःख विदारण मंगल कारण करिवर धारण शीश वरम् ।।
सुण्डा दण्डम् तेज प्रचण्ड इन्दु खण्ड भाल धरम् ।
मंगलकारण दुर्जनमारण विपतिविदारण ऋद्धिकरम्।।७।।
करि वदन विमंडित ओज अखंडित पूरण पंडित ज्ञानपरम् ।
गिरि नन्दिनी नन्दन असुर निकन्दन सुर अरु चन्दन
कीर्तिकरम् ।।

भूषण मृग लक्षण वीर विचक्षण जन प्रण रक्षण
पाशधरम् ।
जय जय गणनायक खलगण घालक दास सहायक
विघ्न हरम् ॥८॥

मनाऊँ एकदन्त महाराज, सुधारो सभी हमारे काज ।
रूप तिहारौ कनक वरण राजै, देखकर महाकाल भागे ॥
मुरति अति सुन्दर साजै, दुःख सब दर्शन से भागे ।
विघ्न हरण गणनाथ जी, कृपा करो महाराज ॥
मैं तुम्हरो अब लियो आसरो, रखियो मेरी लाज ॥
विनती सुन लीजो गणराज,
सुधारो सभी हमारे काज ॥९॥

गणेश वन्दना के उपरान्त साधकों को अष्टक गणेश बन्दना का पाठ करना चाहिये । इसके पाठ करने से विघ्नों का नाश होता है ।

विनियोगः

ॐ अस्य श्री गणेश मन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, विघ्नेशो देवता, बँ बीजं, यँ शक्तिर्ममा भीष्ट-सिद्धयर्थे जपे--पाठे विनियोगः ॥

श्री संकट नाशन गणेश स्तोत्र

प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्र विनायकम् ।
भक्त्या व्यासाऽस्मरे न्नित्यमायुः कर्मार्थ सिद्धये ॥१॥
प्रथम वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्ण पिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥

लम्बोदरं पंचमंच षष्ठं विकट मेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टम् ॥३॥
नवमं भाल चन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
नच विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिश्च नायते ॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥
जपेद् गणपति स्तोत्रंषड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥
अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

॥ इति श्री नारद पुराणे संकट नाशनं
नाम गणेश स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अष्टक गणेश वन्दना के उपरान्त साधक संकट नाशन गणेश स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

गणेश स्तुतिः सद्धर्म चिन्तामणौ

प्रातः स्मरण गणेश

प्रातः स्मरामि गणनाथ मनाथ बन्धु-
सिन्दूरपूर्णं परिशोभित गण्ड युग्मम् ॥
उद्दण्ड विघ्नपरि खण्डन चण्ड दण्ड-
माखण्डलादि सुरनायक वृन्द वन्द्यम् ॥१॥

प्रातर्नमामि चतुरानन वन्द्यमान-
मिच्छानुकूलमखिलं च वरंदधानम् ।।
तन्तुन्दिलं द्विरसनाधिप यज्ञ सूत्रं-
पुत्रं विलास चतुरं शिवयोः शिवाय ।।२।।
प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्त शोक-
दावानलं गण विभुं वप कुञ्जरास्यम् ।।
अज्ञान कानन विनाशन हव्यवाह-
मुत्साह वर्धनमहं सुत मीश्वरस्य ।।३।।

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् ।।
प्रातः रुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ।।

जो मनुष्य प्रातः काल उठकर प्रयत्न के साथ इन तीन श्लोकों का पाठ करता है, वह पुण्यवान् और साम्राज्यवान् होता है।

श्री संकट नाशन गणेश स्तोत्र के उपरान्त प्रातः स्मरण गणेश का पाठ करना चाहिये।

प्रातः स्मरण गणेश के उपरान्त गुरु पादुका पञ्चक का पाठ करना चाहिये।

ब्राह्म मुहूर्त कृत्यम्

मन्त्रमहार्णव श्री विद्यार्णव नित्योत्सवादिषु
प्रति पादितम् ।।

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रा स्थानाद्
बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ-
मुखं च प्रक्षाल्याचम्य रात्रि वस्त्रं
परित्यज्य शुद्ध वस्त्रं परिधाय
शुद्धासन उपविश्याज्ञा चक्रे कोटीन्दु
प्रकाशे स्वगुरुं ध्यायेत्-

ध्यानम्

ओं आनन्द मानन्दकरं प्रसन्नं
ज्ञान स्वरूपं निज बोध रूपम् ।
योगीन्द्र मीड्यं भव रोग वैद्यं
श्री मद् गुरुं नित्यमहं भजामि ।।

श्री गुरु पादुका पञ्चकम्

ब्रह्मरन्ध्र सरसीरुहोदरे नित्यलग्न मवदात् मदद्भुतम् ।
कुण्डली विवर काण्ड मण्डितं
द्वादशार्ण सरसो रुहं भजे ।।१।।
तस्य कन्दलित कर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादि रेखया ।
कोण लक्षित हलक्ष मण्डलीं
भाव लक्ष्य मबलालयं भजे ।।२।।
तत्पुटे पटु तड़ित्कडारिम स्पर्द्धमान मणि पाटल प्रभम् ।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुर्नाद
बिन्दु मणि पीठ मुउज्वलम् ।।३।।
ऊर्ध्वमस्य हुतभुक् शिखात्रयं तद्विलास परिबृंहणातपदम् ।
विश्वघस्मर महोच्चिदोत्कटं
व्यामृशामियुगमादि हंसयोः ।।४।।
तत्र नाथ चरणारविन्दयोः कुङ्कुमासव परीमरन्दयोः ।
द्वन्द्व बिन्दु मकरन्द शीतलं
मानसं स्मरति मङ्गला स्पदम् ।।५।।
निसक्त मणि पादुका नियमितौघ कोलाहम् ।

स्फुरत्किसलयारुणं नरवस मुल्लस च्चन्द्रकम् ।।
परामृत सरोवरोदित सरोज सद्रोचिषम् ।
भजामि शिरसि स्थितं गुरु पदारविन्द द्वयम् ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षु रुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

"ऐं ह्रीं श्रीं ह्सख्फें ह्सक्षमल वरयूं सपक्षसलावरयीं ह्सौः स्हौः स्वरूप निरूपण हेत्व सुकाम्बा सहित श्री गुरू पादुकां पूजयामि" ।।

"स्वच्छ प्रकाश विमर्स हेत्वमुकाम्वा सहित श्री परम गुरु पादुकां पूजयामि" "स्वात्मारास पञ्जर विलींन चेतस्कामुकाम्बा सहित श्री परमेष्ठि गुरु पादुकां पूजयागि," ईति गुरू परमेष्ठि गुरू पादुकां पूजयेत् ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु स्साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

प्राणानायस्य तच्चरण युगल विगलदमृतरस-विसरपरिप्लुता खिलाङ्ग मात्मानं भावयेत् ।

जो गुरु के पादुका पञ्चक का पाठ किये बिना गणेश कृत्य करता है। उसे सिद्धि प्राप्त नहीं होती हैं। इसलिये साधकों को सबसे पहले गुरु पादुका पञ्चक का पाठ करना चाहिये।

प्रातःकाल उठकर गुरु का ध्यान इस प्रकार करना चाहिये। जो साधक इस प्रकार गुरु ध्यान करके अपना नित्य कर्म करने के उपरान्त जिस कार्य को करता है उसमें सफलता प्राप्त करता है। अन्त में परमपद को प्राप्त करता है।

गुरु परंपरा पंचक स्तोत्र ध्यानम्

आब्रह्मलोकादा शेषादा लोकालोक पर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजादेवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ।।१।।
यत् पाद पंकज युग स्मरण प्रभावात्,
मन्वादयोऽप्यधिगता खिल मंत्र तत्वाः ।
संसिद्धि माथुर खिलां करुणार्द्र चित्तं,
तं भावयामि सततं गुरु नाथ मन्तः ।।२।।

गुरू पंरपरा पंचक स्तोत्र प्रारम्भ

ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्या सम्प्रदाय कर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः सर्वोप्लव रहित प्रज्ञानघन प्रत्यगर्थो ब्रह्माह मस्मि, ब्रह्याहमस्मि ।।
श्री नाथादि गुरुत्रयं गणपति पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं बटुक त्रयं पद युगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।(शाम्भवम्)
वीरान्द्वयष्ट चतुष्कषष्टि नवकं बीरावली पञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
वन्दे गुरु पद द्वन्द्व मवाङ् मनस गोचरम् ।
रक्त शुल्क प्रभा मिश्र मतर्क्यं त्रैपुरं महः ।।
नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्ति च तत्पुत्र पराशरं च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं, गोविन्द योगीन्द्र मथास्य शिष्यम् ।। श्री शंकराचार्य मथास्य पद्मपाद च हस्ता-

मलकं च शिष्यम् । तं तोटकं वार्तिक कार मन्यान स्मद् गुरुन् संतत मानतोऽस्मि ।।

तान्त्रिक क्रियोंओं की सिद्धि के लिए गुरु परंपरापंचक स्तोत्र का पाठ बहुत जरूरी है। तान्त्रिक प्रयोगों को गुरु से बिना पूछे नहीं करना चाहिये । जो करते है, उनको विपरीत फल अर्थात् अपार कष्ट की प्राप्ति होती है । इसलिये गुरु का होना बहुत जरूरी है ।

गुरु पादुका पंचक के उपरान्त साधक को गुरु परम्परा पंचक स्तोत्र का पाठ करना चाहिये । गुरु परम्परा पंचक स्तोत्र के उपरान्त साधकों को कुण्डलिनी पंचक का पाठ करना चाहिये ।

श्री कुण्डलिनी पंचकम्

**सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिस्फुरत् ।
तारा नायक शेखरां स्मित मुखी मापीन वक्षो रुहाम् ।।
पाणिभ्यां मणिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम् ।
सोम्यां रत्न घटस्थ रत्न चरणाँ ध्यायेत्परामं बिकाम् ।१।
मूलोन्निद्र भुनंगराज सदृशीं यान्तीं सुषुम्नान्तरम् ।
भित्वाधार समूह माशु विगलत्सौदामिनी सन्निभाम् ।।
व्योमांभोज गतेन्दु मंडल गलद्दिव्या मृतौधैः पतिम् ।
संभाव्य स्वगृहा गतांपुनरिमां संचितयेत् कुण्डलीम् ।।२।।
हंसं नित्य मनन्त मव्द्वयगतं स्वाधारतो निर्गता ।
शक्तिः कुंडलिनी समस्त जननी हस्ते गृहीत्वाचतं ।।
याताशंभु निकेतनं पर सुखं तेनानुभूत स्वयं ।
यान्तीं स्वाश्रम मर्ककोटि रुचिराध्येया जगन्मोहिनी ।३।।
शक्तिः कुंडलिनीतियानिगदिता आईम संज्ञा जगत् ।
निर्माणे सततोद्यता सुविलसत्सौदामिनी सन्निभा ।।**

शंखावर्त निभां प्रसुप्त भुजगाकारां जगन्मोहिनी ।
तन्मध्ये परिभावयेत् विसलता तन्तूपमेया कृतिम् ।।४।।
हुंकारेण गुरू पदिष्ट विधिना प्रोत्थाप्य सुप्तांततः ।
कृत्वा तां कलया तया परमया चिद् रुपया संगताम् ।
शक्ति कुंडलिनीं समाहित मना तां कौशिकी मुच्चरेत् ।
यान्तीं ब्रह्म महा पथेन सहिता माधारतो निर्गता ।।५।।

जो मनुष्य नित्य-प्रति कुंडलिनी पंचक का पाठ करते हैं, वह कभी बीमार नहीं पड़ते । और अन्त में परम पद को प्राप्त करते है ।

साधकों को कुंडलिनी पंचक के उपरान्त प्रातः स्मरामि शिव शक्ति मुखारविन्दं का पाठ करना चाहिये ।

अथ प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारबिन्दु स्तोत्र प्रारम्भ

अर्ध जटा सुमन शोभित कुंतलार्धम्, धतूर पान निरतं स्मित शोभितार्धम् । सिन्दूर भस्म रचितं युग मङ्ग रूपं प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ।।१।। भ्रू चाप चंचल लसत् सरकामशुभ्रं, गण्ड स्थलं ललित मौक्तिक हार युक्तम् । शुभ्रं जटा शिरसि केश विराजमानं, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दम् ।।२।। वैडूर्य नील मणि कण्ठ युधाढ्य रेखं, नागै र्बिभूषित तनु भय भङ्ग वेशं । वामे शिवा वसन चित्र विचित्र युग्मं, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ।।३।। श्री शम्भु शक्ति मति कुण्डल कोमलाङ्गं, व्याघ्रां वशं वरधरं रज-नीश वेषम् । भानुः शशी कमल कुण्डल दीप्त युग्मं, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ।।४।। सत्य

स्वरुप मुनि देव मनादि रूपं, संसार बीज मचलं भव-सार भूतम् । भूताधिपं निखिल पालक विश्वनाथं, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥५॥ विंशच्चतुर्भु ज युतायुध युक्त विघ्न, दृक्षादि सिद्ध मुनि पन्नग सेवताघ्रिम् । नित्यं निरन्तर नवं नव नित्य रूपं, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥६॥ कल्लोल लोल द्यु ति गह्वर चिन्मयाङ्ग, रूपै निरूप परमं रति रम्य गम्य । देवारि मर्दन परंभवसिन्धु पोतम्, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥७॥ सत्य स्वरूप युगलादि मनन्त नित्यं, विश्वात्मकं वर वरेश्वर विश्व भूतम् । ब्रह्माद्य वेदित शिवाशिव मेव सर्वं, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दम् ॥८॥ ब्रह्माण्ड मण्डल मया तनु रेव यस्य, विश्वार्थ कारण गुणं भव चित्र खण्डम् । शक्तिः शिवा शिव शिवं शिव रूप सर्व, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥९॥ वेदादि शास्त्र मणि मण्डल मंत्र गम्यं, चिद् ब्रह्म व्यापक जगज्जननं च भक्त्या । पादं भजेच्च भय भंजन कारि शुभ्रं, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥१०॥ यः संस्मरेद् भव भयं न पुनः प्रयाति, यंचा वलोक्य खलु निश्चल सर्व सिद्धिः । येप्यर्चयंति भव सिन्धु मतीत्य यान्ति, प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥११॥ नित्यं पठेस्तव मिदं वर युग्म रूपं, त्रैलोक्य वश्य मिद मार्तजनानु सेव्यम् । सिद्धिर्भवेद् भगवतः कृपयाति रम्यं, प्रातः स्मरामि शिव-

शक्ति मुखार विन्दम् ॥१२॥

॥ इति प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दं स्तोत्र सम्पूर्ण ॥

प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दं का पाठ करने से गणेश जी बड़ी जल्दी प्रसन्न होकर मनोवँछित फल को प्रदान करते हैं।

प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दं के उपरान्त साधकों को गणेश कवच का पाठ करना चाहिये।

गणेश कवचम्

गौर्यवाच

एषोऽति चपलो दैत्यान् बाल्येऽपि नाशयत्यहो।
अग्रे किं कर्म कर्तेति न जाने मुनि-सत्तम ! ॥१॥
दैत्या नाना-विधा दुष्टाः साधु देव द्रुहः खलाः।
अतोऽस्य कण्ठे किञ्चित्वं रक्षार्थं बद्धुमर्हसि ॥२॥

मुनिरुवाच

ध्यानम्

ध्यायेत् सिंहगतं विनायकममुं दिग्बाहुमाद्ये युगे,
त्रेतायांतु मयूर वाहनममुं षड्बाहुकं सिद्धदम्।
द्वापारे तु गजाननं युग-भुजं रक्ताङ्ग रागं विभुं,
तुर्येतु द्विभुजं सिताङ्ग रुचिरां सर्वार्थदं सर्वदा ॥३॥

विनियोगः

अस्य श्री गणेश-कवचस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, विनायको देवता बहुविध-फल-प्राप्त्यर्थं रक्षायाञ्च जपे-पाठे विनयोगः ॥

विनायकः शिखां पातु परमात्मा परात्परः ।
अति-सुन्दर-कायस्तु मस्तकं सुमहोत्कटः ॥४॥
ललाटं कश्यपः पातु भ्रू युगं तु महोदरः ।
नयने भालचन्द्रस्तु गजास्यस्त्वोष्ठ पल्लवौ ॥५॥
जिह्वां पातु गणक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः ।
वाचं विनायकः पातु दन्तान् रक्षतु विघ्नहा ॥६॥
श्रवणौ पाश पाणिस्तु नासिकां चिन्तितार्थदः ।
गणेशस्तु मुखं कण्ठं पातु देवो गणञ्जयः ॥७॥
स्कन्धौ पातु गजस्कन्धः स्तनौ विघ्नविनाशनः ।
हृदयं गणनाथस्तु हेरम्बो जठरं महान् ॥८॥
धराधरः पातु पार्श्वौ पृष्ठं विघ्नहर शुभः ।
लिङ्गं गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबलः ॥९॥
गणक्रीडो जानु-जङ्घे ऊरु मगंलमूर्तिमान् ।
एकदन्तो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदाऽवतु ॥१०॥
क्षिप्र-प्रसादनो बाहू पाणी आशा-प्रपूरकः ।
अङ्गुलीश्च नखान् पातु पद्महस्तोऽरि-नाशनः ॥११॥
सर्वांगानि मयूरेशो विश्वव्यापी सदाऽवतु ।
अनुक्तमापि यत् स्थानं धूम्रकेतुः सदाऽवतु ॥१२॥
आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु ।
प्राचयां रक्षतु बुद्धीश ! आग्नेय्यां सिद्धि-दायकः ॥१३॥
दक्षिणस्या मुमापुत्रो नैर्ऋत्यां तु गणेश्वरः ।
प्रतीचयां विघ्नहर्ताऽव्याद् वायव्यां गजकर्णकः ॥१४॥

कौबेर्यां निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः ।
दिवाऽव्यादेक दन्तस्तु रात्रौ सन्ध्यासु विघ्नहृत् ॥१५॥
राक्षसा-ऽसुर-वेताल-ग्रह-भूत-पिशाचतः ।
पाशाङ्कुशधरः पातु रजः-सत्व-तमः-स्मृतिः ॥१६॥
ज्ञानं धर्मं च लक्ष्मीं च लज्जां कीर्तिं तथा कुलम् ।
वपुर्धनं च धान्यं च गृह-दाराः सुतान् सखीन् ॥१७॥
सर्वायुध-धरः पौत्रान् मयूरेशोऽवतात् सदा ।
कपिलोऽजाविकं पातु गजाश्वात् विकटोऽवतु ॥१८॥

फलश्रुतिः

भूर्ज पत्रे लिखित्वेदं यः कण्ठे धारयेत् सुधीः ।
न भयं जायते तस्य यक्ष-रक्षः-पिशाचतः ॥१९॥
त्रिसंध्यं जपते यस्तु वज्र सारतनु र्भवेत् ।
यात्राकाले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत् ॥२०॥
युद्धकाले पठेद्यस्तु विजयं चाप्नुयाद् ध्रुवम् ।
मारणोच्चाटना-ऽऽकर्ष-स्तम्भ-मोहन-कर्मणि ॥२१॥
सप्तवारं जपेदेतद् दिनानामेकविंशतिम् ।
तत्तत्फल मवाप्नोति साधको नाऽत्र संशयः ॥२२॥
एकविंशति वारं च पठेत् तावद्-दिनानि यः ।
कारागृहगतं सद्यो राज्ञा वध्यं च मोचयेत् ॥२३॥
राजदर्शन वेलायां पठेदेतत् त्रिवारतः ।
स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतीश्च सभां जयेत् ॥२४॥
इदं गणेश-कवचं कश्यपेन समीरितम् ।
मुद्गलाय च तेनाथ माण्डव्याय महर्षये ॥२५॥

मह्यं स प्राह कृपया कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
न देयं भक्तिहीनाय देयं श्रद्धावते शभम् ।।२६।।
अनेनाऽस्य कृता रक्षा न बाधाऽस्य भवेत् क्वचित् ।
राक्षसा-ऽसुर-वेताल-दैत्य दानव सम्भवा ।।२७।।

।। गणेश कवचं सम्पूर्णम् ।।

संङ्कष्ट चतुर्थी व्रतोपयुक्ताः अर्घ्यमन्त्राः

क्षीर सागर सम्भूत सुधा रूप निशाकर ।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं गणेश प्रीतिवर्धन ।। १ ।।
रोहिणी सहित चन्द्रो य इदमर्घ्यम्-
क्षीरोदार्णव सम्भूत सुधारूप निशाकर ।।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं रोहिण्या सहितः शशिन् ।। २ ।।
गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्व सिद्धि प्रदायक ।
संङ्कष्टं हरमे देवे गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ।। ३ ।।
कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु पूजितोसि विधूदये ।
क्षिप्र प्रसादितो देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ।। ४ ।।
सङ्कष्ट हरण गणपतये इदमर्घ्यम्-
तिथीनामुत्तमे देवि गणेश प्रिय वल्लभे ।।
सर्व सङ्कष्ट नाशाय चतुर्थ्यार्घ्यं नमोऽस्तुते ।। ५ ।।
।। अन्ते मूल मंत्रं जपेत् ।। श्री गजाननार्पणमस्तु ।।

ध्यानम्

अलि-मण्डल-मण्डित गण्डतलम् । तिलकीकृत कोमल-चन्द्रकलम् ।। असि-घात-विदारित वैरिबलम् । प्रणमामि गणाधिपतिं जटिलम् ।।

संकष्ट हरणं गणेशाष्टकम्

विनियोगः

ॐ अस्य श्री संकष्ट हरण स्तोत्र-मन्त्रस्य श्री महा गणपति देवता, संकष्ट हरणार्थे जपे-पाठे विनियोगः ।
ॐ ॐ ॐ काररूपं त्र्यहमिति च परं यत्स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीत नीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्धूर मूर्तिम् ।
योगीन्द्रा ब्रह्मरन्ध्रे सकलगुणमयं श्री हरेन्द्रेण सङ्गं,
गँ गँ गँ गँ गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति ॥१॥
वँ वँ वँ विघ्नराजं भजति निजभुजे दक्षिणे न्यस्तदण्डम्,
क्रँ क्रँ क्रँ क्रोधमुद्रा-दलित-रिपुबलं कल्पवृक्षस्य मूले ।
दँ दँ दँ दन्तमेकं दधति मुनिमुखं कामधेन्वा निषेव्य,
धँ धँ धँ धारयन्तं धनद मतिधियं सिद्धि-बुद्धि-द्वितीयम् ॥२॥ तुँ तुँ तुँ तुगंरूपम् गगनपथि गतं व्याप्नुवन्तं दिगन्तान्, क्लीं क्लीं क्लीं कारनाथं गलित-मदमिल-ल्लोल-मत्तालिमालम् । ह्रीं ह्रीं ह्रीं कारपिंगं सकल मुनिवर-ध्येय मुण्डं च शुण्डं, श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रयन्तं निखिल-निधिकुलं नौमि हेरम्बबिम्बम् ॥३॥ लौं लौं लौं कारमाद्यं प्रणवमिव पदं मन्त्र मुक्तावलीनां, शुद्धं विघ्नेश बीजं शशिकर सदृशं योगिनाँ ध्यानगम्यम् ।
डँ डँ डँ डामरूपं दलित भवभयँ सूर्य कोटि प्रकाशं,
यँ यँ यँ यज्ञनाथं जपति मुनिवरो बाह्यमभ्यन्तरं

च ॥४॥ हुं हुँ हुँ हेमवर्ण श्रुति-गणित-गुणँ शूर्पकर्ण कृपालुं, ध्येयं सूर्यस्य विम्वं ह्यु रसि च विलसत् सर्प यज्ञोपबीतम् । स्वाहा-हुँ फट् नमोऽन्तैष्ठ-ठ ठ ठ सहितैः पल्लवैः सेव्यमानं । मन्त्राणां सप्तकोटि-प्रगुणित-महिमा धारमीशं प्रपद्ये ॥५॥ पूर्व पीठं त्रिकोणं तदुपरि रुचिरं षट्क पत्रं पवित्रं, यस्योर्ध्वं शुद्धरेखा वसुदल कमलंवा स्वतेजश्चतुस्त्रम् । मध्ये हुँकार बीजं तदनु भगवतः स्वाँगषट्कं सडस्त्रे, अष्टौ शक्तिश्च सिद्धीर्बहुल गणपति र्विष्टरश्चाडष्टकं च ॥६॥ धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दशादिशि विदिता वा ध्वजालयः कपालं, तस्य क्षेत्रा-दिनाथं मुनिकुल मखिलं मन्त्रमुद्रा-महेशम् । एवं यो भक्ति युक्तो जपति गणपतिं पुष्प-धूपा-ऽक्षताद्यै-र्नैवेद्यै र्मोदकानां स्तुतियुत-विलसद्-गीतावादित्र-नादैः ॥७॥ राजानस्तस्य भृत्या इव युवतिकुलं दासवत् सर्वदास्ते, लक्ष्मीः सर्वांग युक्ता श्रयति च सदनं किङ्कराः सर्वलोकाः । पुत्राः पुत्र्यः पवित्रा रणभुवि विजयी द्यूतवादेऽपि वीरो, यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्ति भाग्यस्य रुद्रः ॥८॥

॥ संकष्ट हरणं गणेशाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

संकष्ट हरण गणेशाष्टक का पाठ करने से अमंलों का नाश होता है। और अष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

गूरू द्वारा दीक्षित साधक को चाहिये कि वह श्री महागणपति क्रम के अनुसार श्री महागणपति की उपासना प्रारम्भ करे। महागणपति सब प्रकार के फलों का दाता कहा गया है।

श्री महा गणपति क्रम प्रारम्भम्

इत्थं सद् गरोराहित दीक्षः महाबिद्याराधन-
प्रत्यू हापोहाय गण नायकीं पद्धति मामृशेत् ।।

श्रीमान् साधकः ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय श्री गुरु पादुका स्मरण पूर्वकं हृदय कमले ऊद्यदरुणकिरणपाटलस्य देवस्य करटि वदनस्य ध्यानेन परिप्लुष्ट निःशेष दोषत्वं आत्मनः तत्प्रभारुण तनुत्वञ्च भावयित्वा शय्यां त्यक्त्वा श्री महागणपति विद्या सपर्याक्रमोक्त शौचदन्तधावनादीन् कृत्वा स्नात्वाधौते वाससी परिधाय संन्ध्यावन्दनं कृत्वा,

ॐ गं आत्मतत्वाय स्वाहा ।
ॐ गं विद्या तत्वाय स्वाहा ।
ॐ गं शिव तत्वाय स्वाहा ।
ॐ गं सर्व तत्वाय स्वाहा ।

इति तत्वाचमनं कृत्वा मूलेन प्राणानायम्य "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्र तुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्" । इति गणपति गायत्रीं, ॐ सूर्यमंडल स्थाप्य महागणपतये एषोऽर्घ्यः स्वाहा, इति त्रिः अर्घ्यं दत्वा । ऋष्यादिषडङ्गन्यास पूर्वकं अष्ठोत्तर शतवारं वा अष्टार्विशति वारं वा मूलमन्त्रं जप्त्वा ।

अनेन कर्मणा भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयंताम् । इति सन्ध्यां गणपतये निवेदयेत् ।।

ऐं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हस् ख्फ्रें हसक्षमल वरयूं सहक्षमलवरयीं ह् सौः स्हौः श्री गुरू पादुकां पूजयामि ।

॥ अथ चतुरावृत्तितर्पणम् ॥

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संङ्कीर्त्य मम श्री महागणपति प्रसादसिद्धये सर्वविघ्न निवारणार्थं चतुरा वृत्ति तर्पणं करिष्ये इति संकल्प्य नद्यादौ हस्तमात्र चतुरश्रमंडलं परिगृह्य--

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्यनि ते र वे ।
तेन सत्येन मे देव ! तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति मन्त्रेथ सूर्यमभ्यर्थ्य--

आवाहयामि त्वां देवि ! तर्पणायेह सुन्दरि ।
एहि गंगे ! नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थ समन्विते ॥

इति गङ्गां प्रार्थ्य ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः इत्युच्चार्य क्रों इत्यंकुशमुद्रया गंगाऽऽदितीर्थान्यावाह्य, वं इत्युमृत बीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्र चतुरश्राष्ट दल षट् कोण त्रिकोणात्मकं महा गणपति यन्त्रं विचिन्त्य, स्वदेहे ऋष्यादि न्यासान् न्यस्य, यन्त्रे सावरण देव मावाह्य-ततः

अस्य श्री महागणपति महा मन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद् गायत्री छन्दः, महागणपति देंवता, महागणपति तर्पणे विनयोगः ।

अथ न्यास :--

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां अंगुष्ठाभ्यां-हृदयाय नमः ।

३ श्रीं गीं तर्जनीभ्यां-शिरसे स्वाहा ।

३ ह्रीं गूं मध्यमाभ्यां-शिखायै वषट् ।

३ क्लीं गैं अनामिकाभ्यां कवचाय हुं ।

३ ग्लौं गौं कनिष्ठिकाभ्यां-नेत्रत्रयाय वौषट् ।

अथ ध्यानम् :--

ध्याये हृदब्जे शोणांगं वामोत्संग विभूषया ।
सिद्ध लक्ष्म्या समाश्लिष्ट पार्श्वमर्धेन्दु शेखरम् ॥
वामाधः करतो दक्षाधः करान्तेषु पुष्करे ।
परिष्कृतं मातुलुङ्ग गदा पुण्ड्रेक्षुकार्मुकैः ॥
शूलेन शंख चक्राभ्यां पाशोत्पल युगेन च ।
शालिमञ्जरिका स्वीयदन्ताञ्जल मणीघटैः ॥
स्रवन्मदञ्च सानन्दं श्री श्री पत्यादि संवृत्तम् ।
अशेष विघ्नविध्वंसनिघ्नं विघ्नेश्वरं भजे ॥

इति ध्यात्वा तद्यन्त्रे मूर्ति च गंधपुष्प दूर्वांकुरैः पञ्चोपचारै रर्चयेत् । तद्यथा--श्री ह्रीं क्लीं महा गणपये लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्) ।

श्रीं ह्रीं क्लीं महागणपतये हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्) ।

३ महागणपतये यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्) ।

महागणपतये रं वह्नयात्मकं दीपं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्) ।

३ महागणपतये वं ऽमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्) ।

तदङ्गत्वेन ॥

३ महागणणपतये सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्) ।

॥ इति ॥

प्रथमं प्रत्यावृत्ति मूलान्ते महागणपतिं तर्पयामीति द्वादशावार तर्पयित्वा ततः स्वाहान्तेन मूलस्यैकैकेन वर्णेन चतुश्चतुर्वारं प्रति वर्णान्मावृत्तेन मूलेन च प्रागवत् चतुश्चतुर्वारं देवं त्रयोदशसु मिथुनेषु श्री श्रो पत्यादिषु एकैकां देबतां द्वितीयान्तेन तत्तन्नाम्ना चतुरचतुर्बारं प्रति देवता मावृत्तेन च मूलेन देवं चतुरचतुर्वारं तर्पयेत् । यथा--

'ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे बशमानय स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि'। (द्वादशवरम्) ।

ओं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	चतुरावृति
मूलेन	,,	,,	,,
३ श्रीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन	,,	,,	,,
३ ह्रीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेक-	,,	,,	,,

३ क्लीं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि।	चतुरावृत्ति
मूलेन–	,,	,,	,,
३ ग्लौं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेने–	,,	,,	,,
३ गं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ गं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ णं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ पं स्वाहा	,,	,,	,,
स्वाहा–	,,	,,	,,
३ तं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ यें स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ वं स्बाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ रं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ वं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,

३ रं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि।	चतुरावृत्ति
मूलेन-	,,	,,	,,
३ दं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेने-	,,	,,	,,
३ सं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ बं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ जं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ नं स्वाहा	,,	,,	,,
स्वाहा-	,,	,,	,,
३ में स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ वं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ शं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ मां स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ नं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,

३ यं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि।	चतुरावृत्ति
मूलेन–	,,	,,	,,
३ स्वां स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ हां स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ श्रीपतिं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ गिरिजां स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ गिरिजापतिं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ रतिं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ रतिपतिं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ महीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ महींपतिं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ महालक्ष्मीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,

३ महागणपतिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि।	चतुरावृत्ति
मूलेन-	,,	,,	,,
३ ऋद्धि स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ आमोदं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ समृद्धि स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ प्रमोदं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ कान्ति स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ सुमुखं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ मदनावतीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ दुर्मुखं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ मदद्रवां स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,
३ अविघ्नं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन-	,,	,,	,,

३ द्राविणीं स्वाहा महागणपतिं	तर्पयामि	चतुरावृति	
मूलेन–	,,	,,	,,
३ अविघ्नकर्तारं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ वसुधारां स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ शंखनिधि स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ वसुमतीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,
३ पद्मनिधिं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन–	,,	,,	,,

इत्याहृत्य तर्पण संखयापिण्डश्चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशती (४४४) भवति ॥

तर्पणांते उत्तरन्यासान् विधाय पुनर्नूलेन देव मुक्तरीत्या पंचौपचारैः संपूजयेत् ॥

गुह्याति गुह्यगोप्ता त्वं गृहाण कृततर्पणम् ।
सिद्धिभवंतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं बलं पृष्टिर्महद्यशः ।
कवित्वं भुक्ति मुक्ती च चतुरावृत्ति तर्पणात् ॥

अनेन कृतेन तर्पणेन भगवान् श्री सिद्ध लक्ष्मी सहितः श्री महागणपतिः प्रीयंताम् ॥

॥ इति चतुरावृत्तितर्पण विधिः ॥

अथ सपर्या पद्धति

आ ब्रह्म लोकादाशेषादा लोका लोक पर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाभ्यहम् ॥
ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्म विद्या संप्रदाय कर्तभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः । सर्वोपप्लवरहित प्रज्ञानघन प्रत्यगर्थो ब्रह्मैवाहमस्मि, सोहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ॥

श्री नाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्
वीरान्द्व्यष्ट चतुष्कठष्टि नवकं वीरावली पञ्चकम्
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

याग मन्दिर प्रवेशः

ततो यागगृहमागत्य स्थण्डिलं गोमयेनोपलिप्य याग मन्दिरं च रङ्गवल्ली पुष्प मालिका वितानादि भिरलङ्कृत्य च द्वारस्य दक्षवामभागयो उर्ध्वभागे च क्रमेण--

श्रीं ह्रीं क्लीं भद्रकाल्यै नमः ॥ दक्ष शाखायाम् ॥
३ भैरवाय नमः ॥ वाम शाखायाम् ॥
३ लम्बोदराय नमः ॥ उर्ध्व शाखायाम् ॥

इति द्वारदेवतास्संम्पूज्य

तत्वाचमनम्

ओं गं आत्म तत्वाय स्वाहा ॥

ओं गं विद्यातत्वाय स्वाहा ॥

ओं गं शिवतत्वाय स्वाहा ॥

ओं गं सर्वतत्वाय स्वाहा ॥ इत्याचम्य ॥

श्री गुरु पादुका मन्त्रः

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हंसः शिव सोहं स्वरूप निरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः अमुकानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं सोहं हंसः शिवः स्वच्छ प्रकाश विमर्श हेतवे श्री परम गुरवे नमः अमुकानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्माराम पञ्जर विलिन तेजसे श्री परमेष्ठि गुरवे नमः अमुकानन्द नाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

इति मृगीमुद्रया गुरु पादुकांमुच्चार्य सुमुख-सुवृत्त-चतुरस्त्र-मुद्गरयोन्याख्याभिः पञ्चभिर्मुद्राभिः श्री गुरुम् वामभुजे प्रणम्य गणपति मूलेन स्वदक्षभुजे योनि मुद्रया महागणपतिं प्रणमेत् ॥

घंटा पूजा

आगमार्थं च देवानां गमनार्थं च रक्षसाम् ।
कुर्याद् घंटारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम् ।।

।। इति घंटानादं कृत्वा ।।

संकल्पः

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ।।

मूलेन प्राणानायम्य । देशकालौ संकीर्त्य मम श्री सिद्धलक्ष्मी सहित महागणपति प्रीत्यर्थं यथा संभव द्रव्यैः यथा शक्ति सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वरं प्रीणयामि ।।

आत्मानमलंकृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदनः सन् प्रमुदितचितः शिवोहं इति भावयेत् ।।

आसन पूजा

आसनमास्तीर्य दक्षिण हस्ते जल मादाय सौः इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूल मन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत् ।।

अस्य श्री आसन महामन्त्रस्य-पृथिव्या मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छंदः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ।

पृथिव त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मा देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

योगासनाय नमः। वीरासनाय नमः। शरासनाय नमः।
श्रीं ह्रीं क्लीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः।
इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने उपविशेत् ॥

३ रक्त द्वादश शक्ति युक्ताय द्वीपनाथाय नमः।
इति भूमौ पुष्पाञ्जलि विकिरेत् ॥

३ समस्त गुप्त प्रकट सिद्धयोगिनी चक्र श्री पादुकाभ्यो नमः ॥
इति मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिः ॥

३ ऐं हः अस्त्राय फट्-इति अस्त्र मंत्रेण मुहुरा वृत्तेन अंगुष्ठादि कनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे चव्यापकं कुर्यात्।

दीप पूजा

स्वदक्ष भागे गन्ध पुष्पाक्षतादीन्निधाय दीपानभिदः प्रज्वाल्य।

घृयदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः।
सितवर्ति युतो दक्षो रक्त बर्तिस्तु वामतः ॥
(दक्षवाम भागौ देवस्यैव।)

३ दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा।
यावत्पूजा समाप्तिः स्यातावत्प्रज्वल सुस्थिरा ॥
इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

मूलेन यन्त्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्ष कोणेषु पुष्पाञ्जलीन् दद्यात् ॥

शिखाबन्धनादि मातृका न्यासान्तम्

श्री क्रमे वक्ष्यमाग प्रकारेण भूतशुद्धयादिमात्मनः प्राण प्रतिष्ठाञ्च विधाय विंशति षोडशधा दशधा त्रिधा वा मूलेन प्राणानायम्य ।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिता: ।
ये भूताविघ्मकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।

इति मन्त्रमुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णि भूतलाघातत्रय करास्फोटनत्रय क्रूर दृष्ट्यावलोकन पूर्वकतालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्, अथ नमः इति अंगुष्ठमन्त्रमुच्चरन् अंकुशमुद्रया शिखां वध्नीयात् ।

ततः श्री क्रमे वक्ष्यमाण प्रकारेण मातृकान्यासं श्रीं ह्रीं क्लीं इयि त्रिबीजयोजन पूर्वकं विधाय मूल मन्त्रस्य ऋषि देवतादि विनियोग पूर्वकं करषडङ्गन्यासौ विधाय मूलेन त्रिव्यापकं कृत्वा ध्यायेत् ।

अथ पात्रासादनम्

वर्धनी कलश स्थापनम्

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्त चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य--मंडलं मूलेन समभ्यर्च्य कर्पूरादि वासित जल पूरितं कलशं गंध पुष्पाक्षतैः अलंकृत्य मण्डलोपरि संस्थापयेत् ।

ओंकलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणः स्मृतः ।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ष्यर्वणः ।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः ।।

ओं आपो वा इदं सर्वं विश्वाभूता न्यापः प्राणा वा आपः पशवः आपोऽन्नंमापोऽमृतमापः साम्भ्राजयो विराडापश्छन्दां स्यापो ज्तोतीं ष्यापोयजूं ष्यापः सर्वा देवता आपो भूर्भुंव स्सुवराप ओं ।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्स न्निधिं कुरु ।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा हृदाः ।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः ।।

मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य तज्जलेन पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्षयेत् ।।

सामान्यार्घ्य विधिः

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्र गतेन जलेन बिन्दु-त्रिकोणे षट्कोणे-बृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्य मुद्रया निर्माय ।।

चतुरश्रे अग्नीशासुरवायु कोणेषु मध्ये दिक्षु च गणपतिषडङ्गं सम्पूजयेत् ।

यथा--

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।।

३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा । शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

३ ह्रीं गूं शिखायै बषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

३ क्लीं गैं कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

३ गं गः अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

षट्कोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन--

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नम ॥

३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा । शिरः षक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

३ क्लीं गैं कवचाय हुँ । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

३ गं गः अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

त्रिकोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन–

३ ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं नमः ॥

३ गणपतये वरवरद नमः ॥

३ सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः ॥

३ मूलम् नमः (बिन्दौ)

ततः अस्त्राय फट् इति सामान्यार्घ्य पात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य,

३ अं अग्नि मण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतेः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ॥

॥ इति मंडलोपरि संस्थाप्य ॥

३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

रां रीं रुं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्नि मण्डलाय नमः ।

इति अग्नि मण्डलं विभाव्य । दशवह्निकलाः सम्पूजयेत् । तद्यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ॥

३ रं ऊष्माकलायै नमः ॥

३ लं ज्वलिनी कलायै नमः ॥

३ वं ज्वालिनी कलायै नमः ॥

३ शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः ॥

३ षं सुश्री कलायै नमः ॥

३ सं सुरुपा कलायै नमः ॥
३ हं कपिला कलायै नमः ॥
३ लं हव्यवाहिनी कलायै नमः ॥
३ क्षं कव्यवाहिनी कलायै नमः ॥

अस्त्राय फट्–इति क्षालितं शंखं गृहीत्वा–

श्रीं ह्रीं क्लीं उं सूर्यमण्डलायाऽर्थप्रद द्वादश कलात्मने श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतये सामान्यार्घ्यपात्राय नमः। इति संस्थाप्य।

श्रीं ह्रीं क्लीं आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानिपश्यन्।

ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः। हमलवरयूम्। सूर्यमण्ठलाय नमः–

इति सूर्य मण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः सम्पूजयेत्। तद्यथा–

३ कं भं तपिनी कलायै नमः॥ ३ घं पं मरीचि कलायै नमः॥ ३ खं बं तापिनी कलायै नमः॥ ३ ङं नं ज्वालिनी कलायै नमः॥ ३ गं फं धूम्राकलायै नमः॥ ३ चं धं रुचिकलायै नमः॥ ३ छं दं सुषुम्नाकलायैं नमः॥ ३ ञं णं बोधिनी कलायै नमः॥ ३ जं थं भोगदा कलायै नमः॥ ३ टं ढं धारिणी कलायै नमः॥ ३ झं तं विश्वा कलायै नमः॥ ३ ठं डं क्षमा कलायै नमः॥

श्रीं ह्रीं क्लीं मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित महागणपतये: सामान्यार्घ्यामृताय नमः। इति वर्धनी सलिलमापूर्य क्षीर बिन्दुं दत्वा।

श्रीं ह्रीं क्लीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलायनमः। इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः सम्पूजयेत्।

तद्यथा---

श्रीं ह्रीं क्लीं अं अमृता कलायै नमः॥ ३ लृं चन्द्रिका कलायै नमः॥ ३ आं मानदा कलायै नमः॥ ३ लॄं कान्तिकलायै नमः॥ ३ इं पूषाकलायै नमः॥ ३ एं ज्योत्स्ना कलायै नमः॥ ३ ईं तुष्टि कलायै नमः॥ ३ ऐं श्री कलायै नमः॥ ३ उं पुष्टि कलायै नमः॥ ३ ओं प्रीति कलायै नमः॥ ३ ऊँ रति कलायै नमः॥ ३ औं अङ्गदा कलायै नमः॥ ३ ऋं धृति कलायै नमः॥ ३ अं पूर्णा कलायै नमः॥ ३ ॠं शशिनीकलायै नमः॥ ३ अः पूर्णामृताकलायै नमः॥

ततस्तस्मिन्शंखे अग्नीशासुरवायु कोणेषु मध्ये दिक्षु च्च क्रमेण षडङ्गैः सम्पूज्य, अस्त्राय फट् इति संरक्ष्य, कवचाय हुं इति अवगुण्ठ्य, धेनु योनि मुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवार मभिमन्त्र्य, तत्सलिल पृषतैः पूजोपकरणानि आत्मानं प्रोक्ष्य, शंख जलात् किंचित् वर्धन्यां क्षिपेत्॥

विशेषार्घ्य विधिः

सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दु-त्रिकोण-षट्-कोण-वृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य।

चतुरस्त्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य षट्कोणे स्वाग्र कोणादि प्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूल विद्यात्रिखण्डैरभ्यर्च्य, मूलेन बिन्दुं चाअर्चयेत्। तद्यथा-

चतुरस्त्रे अग्नीशासुर वायु कोणेषु मध्ये दिक्षु च--

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां हृदयाय नमः ॥ हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा ॥ शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् ॥ शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ क्लीं गैं कवचाय हुं ॥ कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ नेत्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ गं गः अस्त्राय फट् ॥ अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

ततः षट्कोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन--

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां हृदयाय नमः ॥ हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा। शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् ॥ शिखा शक्ति श्री पादुदां पूजयामि नमः ॥ ३ क्लीं गैं कवचाय हुं ॥ कवच शक्ति श्री

पादुकां पूजयामि नमः ।। ३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।। नेत्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।। ३ गं गः अस्त्राय फट् ।। अस्त्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।।

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन--

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं नमः ।।

श्रीं ह्रीं क्लीं गणपतये वरवरद नमः ।।

श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः ।।

३ मूलम् नमः (बिन्दौ)

अथ-३ अस्त्राय फट् इति आधारं प्रक्षाल्य ।

श्रीं ह्रीं क्लीं अं अग्नि मण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीसिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतये विशेषार्घ्य पात्राधाराय नमः । इति आधारं संस्थाप्य ।

श्रीं ह्रीं क्लीं अग्नि दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् । रां रीं रुं रैं रौं रः रमल वरयूं अग्निमण्डलाय नमः । इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत् । यथा-

श्रीं ह्रीं क्लीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ।।

३ रं ऊष्माकलायै नमः ।।

३ लं ज्वलिनी कलायै नमः ।।

३ वं ज्वालिनी कलायै नमः ।।

३ शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः ।।

३ षं सुश्री कलायै नमः ।।

३ सं सुरूपा कलायै नमः ।।

३ हं कपिलाञ्जलायै नमः ।।

३ लं हव्यवाहिनी कलायै नमः ।।

३ क्षं कव्यवाहिनी कलायै नमः ।।

ततः-श्रीं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट् इति मन्त्रेण विशेषार्घ्या पात्रं प्रक्षाल्य ।

श्रीं ह्रीं क्लीं उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रद द्वादशकलात्मने श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतये विशेषार्घ्यपात्राय नमः ।

इति आधारोपरि संस्थाप्य ।

श्रीं ह्रीं ऐं श्री महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनी ऊर्ध्वशून्य प्रवाहिनी सोम सूर्याग्नि भक्षिणी परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्र प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य ।

श्रीं ह्रीं क्लीं आसत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।

हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानिपश्यन् ।

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः

इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः पूजयेत् । यथा--

श्रीं ह्रीं क्लीं कं भं तपिनी कलायै नमः ।। ३ धं दं सुषुम्नाकलायै नमः ।। ३ खं बं तापिनी कलायै नमः ।।

३ जं थं भोगदा कलायै नमः ।। ३ गं फं धूम्रा कलायै नमः ।। ३ झं तं विश्वाकलायै नमः ।। ३ घं पं मरीचि कलायै नमः ।। ३ ञं णं बोधिनी कलायै नमः ।। ३ ङं नं ज्वालिनी कलायै नमः ।। ३ टं ढ धारिणी कलायै नमः ।। ३ चं धं रुचि कलायै नमः ।। ३ ठं डं क्षमा कलायै नमः ।।

श्रीं ह्रीं क्लीं मं सोम मण्डलाय कामप्रद षोडश कलात्मने श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतये विशेषार्घ्यामृताय नमः ।

इति तत्व मुद्रया गृहीत नागर खण्डोपरि सबिन्दु अकारादि क्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं मातृकया अर्पितेन अमृतेन आपूर्य अष्ट गंधलोलितं पुष्पं निधाय नागर खण्डं निक्षिप्य ।।

श्रीं ह्रीं क्लीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम-वृष्णियम् ।

भवावाजस्य सङ्गथे ।।

सां सीं सूं सैं सौं सः सम्लवरयूं सोममण्डलाय नमः ।

इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत् ।

यथा--

श्रीं ह्रीं क्लीं अं अमृता कलायै नमः ।। ३ लृं चन्द्रिकाकलायै नमः ।। ३ आं मानदा कलायै नमः ।।

३ लृं कान्ति कलायै नमः ।। ३ इं पूषा कलायै नमः ।। ३ एं ज्योत्स्ना कलायै नमः ।। ३ ईं तुष्टि कलायै नमः ।। ३ ऐं श्रीं कलायै नमः ।। ३ उं पुष्टि कलायै नमः ।। ३ ओं प्रीति कलायै नमः ।। ३ ॐ रति कलायै नमः ।। ३ औं अङ्गदा कलायै नमः ।। ३ ऋं धृति कलायै नमः ।। ३ अं पूर्णा कलायै नमः ।। ३ ॠं शशिनी कलायै नमः ।। ३ अः पूर्णामृता कलायै नमः ।।

ततः श्रीं ह्रीं क्लीं ओं जुं सः स्वाहा । इति अष्ट वारमभिमन्त्र्य ।।

तत्राध्यामृते स्वाग्राद्य प्रादक्षिण्येन अकथादि षोडश वर्णात्मक रेखात्रयं त्रिकोणं विलिख्य, तदन्तः स्वाग्रादि कोणेषु अप्रादक्षिण्येन हलक्षान् बहिः प्रादक्षिण्येन महा गणपति मूल खण्ड त्रय बिन्दौ सबिन्दु तुरीय स्वरं तद्वामदक्षयोः क्रमेण हंसः इति विलिख्य श्रीं ह्रीं क्लीं हंसः नमः इति आराध्य त्रिकोणस्य परितः--वृतं तद्ब-हिश्च षट्कोणं निर्माय स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन् षडङ्ग मन्त्रैः षट्कोणमभ्यर्च्य ।

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलं तां चिन्मयीं आनन्द लक्षणां अमृतकलश पिशित हस्त द्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा–इति सुधा देवीं समभ्यर्च्य तदध्यात्किं-चित् पात्रान्तरेण,

श्रीं ह्रीं क्लीं वषट् । इत्युद्धृत्य

३ स्वाहा । इति तत्रैव निक्षिप्य

३ हुं । इति अवगुठ्य

३ वौषट् । इति धेनु मुद्रया अमृतीकृत्य

३ फट् । इति संरक्ष्य

३ नमः । इति पुष्पं दत्वा

३ मूलेन गालिन्या निरीक्ष्य

३ ऐं इति योनिमुद्रया नत्वा

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य सुधादेवीं षोडशोपाचारैः सम्पूज्य तद्बिन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य सर्वं महागणपतिमयं विभावयेत् ॥

ततः विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाण गणपति गायत्र्या ऋचा च अभिमन्त्रयेत्—

तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।

तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

गणानांत्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।

जेष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम् ॥

(श्री क्रमोक्त चतुर्नवतिमन्त्राद्यभिमन्त्रणं मात्र नास्ति)

विशेषार्घ्य पात्रास्याधः त्रिकोण–वृत–चतुरस्त्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य ।

प्रथम मण्डले

श्रीं ह्रीं क्लीं हंसः शिवः सोहं-सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं हंसः नमः । इत्यभ्यर्च्यागुरुपात्रंनिधाय ।

द्वितीय मण्डले

श्रीं ह्रीं क्लीं हंसः नमः। इत्यभ्यर्च्य आत्मपात्रं निधाय।

ततः विशेषार्घ्यामृतात् किंचित् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयंयजेत्।

गुरौ सन्निहिते यदि तस्मै निवेदयेत्।

पुनः आत्मपात्रे किंचिद्विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य मूलाधारे बालाग्र मात्रं अनादिवासनारूपेन्धन प्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्टितचिदग्नि मण्डलं ध्यात्वा।

श्रीं ह्रीं क्लीं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्नि मण्डलाय नमः।

इति मनसासंपूज्य।

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलं पुण्यं जुहोमि स्वाहा

३ ,, पापं जुहोमि स्वाहा ३ ,, विकल्पं जुहोमि स्वाहा

३ ,, कृत्यं जुहोमि स्वाहा ३ ,, धर्मं जुहोमि स्वाहा

३ ,, अकृत्यं जुहोमि स्वाहा ३ ,, अधर्मं जुहोमि स्वाहा

३ ,, सङ्कल्प्यं जुहोमि स्वाहा ३ ,, अधर्मं जुहोमि वौषट्

श्रीं ह्रीं क्लीं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेह धर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा

हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा इति पूर्णाहुतिं विभाव्य ।

श्रीं ह्रीं क्लीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ।
ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि ।
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि ।
अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि ।
अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।

इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्धचा जुहुयात् ।

विशेषार्घ्यं पात्रात्किंचित्क्षीरं कारण कलशे निक्षिपेत् ॥

पीठे प्राणप्रतिष्ठा

पुरतो रक्त चन्दनादिभिः निर्मिते पीठे कलधौतादि विरचितां महा गणपति प्रतिमां वा ध्यानोक्तरूपां चतुरश्राष्टदल षड्रत्रि कोणात्मकं सिन्दुरादिना लिखितं लेखितं वा यन्त्रं धातुमयं वा निवेश्य–

श्री गणेशयन्त्रस्य प्राणाःइह प्राणाः श्री गणेशयन्त्रस्य जीव इह स्थितः श्री गणेशयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि श्री गणेशयन्त्रस्य वाङ्मनः प्राणाः इह आयान्तु स्वाहा ।

इति मन्त्रेण प्राण प्रतिष्ठां विदध्यात् ॥

पीठ शक्ति पूजा

तस्य त्रिकोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन परितो मध्ये च क्रमेण––

श्रीं ह्रीं क्लीं तीव्रायै नमः ।। श्रीं ह्रीं क्लीं उग्रायै नमः ।।
३ ज्वालिन्यै नमः ।। ३ तेजोवत्यै नमः ।।
३ नन्दायै नमः ।। ३ सत्यायै नमः ।।
३ भोगदायै नमः ।। ३ विघ्ननाशिन्यै नमः ।।
३ कामरूपिण्यै नमः ।। ३ सर्वशक्तिकमलासनायै नमः ।।
।। इति नवगणेशपीठशक्तिरभ्यर्च्य ।।

धर्माद्यष्टक पूजा

तत्रैव आग्नेय्यादि दिदिक्षु प्रागाद्यासु च दिक्षु क्रमेण–

श्रीं ह्रीं क्लीं ऋं धर्माय नमः ।। श्रीं ह्रीं क्लीं ऋं अधर्माय नमः ।।
३ ॠं ज्ञानाय नमः ।। ३ ॠं अज्ञानाय नमः ।।
३ लृं वैराग्याय नमः ।। ३ लृं अवैराग्याय नमः ।।
३ ॡं ऐश्वर्याय नमः ।। ३ ॡं अनैश्वर्याय नमः ।।
इति अर्चयेत् ।।

अन्तर्यागः

द्वादशान्ते सहस्रदलकमलकर्णिकामध्ये निविष्ट गुरु चरण युगल विगलदमृतरसविसरपरिप्लुताखिलाङ्गो हृदय कमलमध्ये ज्वलन्त मुद्यदरुण कोटिपाटलमशेष दोष निर्वेषभूतमनेकपाननं पुर्य्यष्टकाकारं साङ्ग सावरणम् भक्तानुग्रहार्थं तेजो रूपेण परिणतं प्रापय्य ब्रह्मरन्ध्रं, ब्रह्मनासापुटेन निर्गमय्य त्रिखण्डा मुद्रा मण्डित शिखण्डे कुसुमाञ्जलौ हस्ते समानीय ।

ऐक्षवे त्तलधौ द्वीपे नवरत्नमये शुभे ।
तत्तरंगोल्लसत्तोये धौते शीततलेऽमले ।।१।।
तत्तोय कर्ण संपृक्त गंधवाह निषेविते ।
कल्पपादप संशोभिभूभाग समलंकृते ।।२।।
नाना कुसुम संकीर्णे नाना पक्षिविराजिते ।
अनेक फल संकीर्णे भाविते चाप्सरोगणैः ।।३।।
उद्यद्बालातपोद्योति चन्द्रज्योत्स्ना समाकुले ।
विलसन्पद्मरागौध कुट्टिमारुणभूतले ।।४।।
कल्पपादपपुष्पस्थषट्पदस्वन् मञ्जुले ।
पारिजातं कल्पतरुं तस्य मध्ये विचिंतयेत् ।।५।।
युगपदृतुषट्केन सेवितं पुष्प शोभितम् ।
नवरत्नमयं तस्याऽधस्तात् सिंहासनं स्मरेत् ।।६।।
तन्मध्ये लिपिपद्मं च षडस्त्रं तस्य मध्यतः ।
कर्णिकायां त्रिकोणं च तत्संस्थं च महागणम् ।।७।।
नानारत्नविभूषाढयं एकदन्तं गजाननम् ।
बीजापूर गदाचापशूल चक्राम्बुजान्यपि ।।८।।
पाशोत्पले च व्रीह्यग्रं स्वदन्तं रत्नपात्रकम् ।
धारयन्तं दशभुजैः भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।।९।।
सर्वाङ्गभूषोज्वलया पद्मसंशोभिहस्तया ।
अश्लिष्ट वामपार्श्वं च देव्या वल्लभया सदा ।।१०।।
विघ्नेशं विघ्नहर्तारं फुल्लपद्माभविग्रहम् ।
पुष्करोद्धृत रत्नौघमयकुंभमुखस्नुतान् ।।११।।

मणिमुक्ता प्रवालादीन् वर्षन्तं धारयामुहुः ।
सर्वतः साधकस्याग्रे स्वदानजललोलुपान् ।।१२।।
षट्पदालीन् कर्णतालैः वारन्यतं मुहुर्मुहुः ।
अमरासुरसंसेव्यं सद्रत्न मुकुटोज्वलन् ।।१३।।
उरुदरं गजमुखं नानाभरण भूषितम् ।
इति ध्यात्वा गणपतिं यजेत् सर्वोपचारकैः ।।१४।।
बीजापूर गदक्षु कार्मुकरुजा चक्राब्ज पाशोत्पल--
ब्रीह्यग्रस्वविषाणरत्न कलश प्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।।
ध्येयो वल्लभया सपद्म करयाश्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्ति संस्थिति करो बिघ्नेश इष्टार्थदः।१५

इति ध्यात्वा, गणानांत्वेति मंत्रेण मूलमंत्रेण च अस्मिन् यंत्रे बिंवे वा श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतिं साङ्गम् सपरिवारम् सावरणम् आबाहयामि नमः ।।

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलं आवाहितो भव ।। ३ मूलं संनुखो भव ।।
३ मूलं संस्थापितो भव ।। ३ मूलं अवगुण्ठितो भव।
३ मूलं सन्निधापितो भव।। ३ मूलं सुप्रसन्नो भव।
३ मूलं संनिरुद्धो भव ।। ३ मूलं वरदो भव ।।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् ।
तावत्वं प्रीति भावेन बिंबेस्मिन् (यन्त्रेऽस्मिन्) सन्निधिं कुरू ।।

इति मन्त्रैरावाहनादि षण्मुद्राः प्रदर्श्य, वंदनधेनु योनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् ।

अथ हृदयादि षडङ्ग मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

महागणपतिप्रियपाशादि सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

अथ षोडशोपचार पूजा

श्री सिद्धलक्ष्मी सहित श्री महागणपति देवतायाः षोडशोपचारानाचरेत् ।

श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्धलक्ष्मी सहित श्री महागणपतये पाद्यं कल्पयामि नमः ॥

३	,,	,,	अर्घ्यं	,,	,	॥
३	,,	,,	आचमनीयं	,,	,,	॥
३	,,	,,	स्नानं	,,	,,	॥
३	,,	,,	वस्त्रोत्तरीयं	,,	,,	॥
६	,,	,,	भूषणम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	गंधम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	पुष्पम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	धूपम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	दीपम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	नैवेद्यं	,,	,,	॥
३	,,	,	ताम्बूलम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	नीराजनम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	प्रदक्षिणाम्	,,	,,	॥
३	,,	,,	नमस्कारान्	,,	,,	॥

श्रीं ह्रीं क्लीं दन्त पाश अंकुश विघ्न परशु लड्डुक बीजापूराह्वयाः सप्तमुद्राः गणेशस्य प्रियामताः ॥

॥ इति सप्तमुद्रा प्रदर्शयेत् ॥

चतुरायतन पूजा

विष्णु-शिवसूर्य-देव्याह्वयाः चतुरायतनदेवताः ।
ईशान-आग्नेय-नैर्ऋत-वायव्येषु ततन्मूलमन्त्रेण यजेत् ॥

श्री महागणपति तर्पणम्

ततो मूलान्ते श्रीमहागणपति श्रीपादुकां पूजयामीति वामकर तत्व मुद्रया सन्दष्ट द्वितीय शकल गृहीत क्षीर बिन्दु दक्ष करोपात्तकुसुमयुगपत्प्रक्षेपेण देवं दशवारं उपतर्पयेत् । तत्वमुद्रा उत्तरत्रापि साधारणी ।

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलं श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महा गणपति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

॥ इति दशवारं संतर्पयेत् ॥

षडङ्ग पूजा

ततो देवस्याङ्गे अग्नीशासुर वायुकोणेषु मौलौ दिक्षु च श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा । शिरशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

स्नान समये दुग्ध पञ्चामृत मधुफल रसादिना अभिषिञ्चेत् पुरुषसूक्त गणपत्युपनिषद् गणपति गायत्रयादि वेदमन्त्रान् उच्चरेत् ।

३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ क्लीं गैं कवचाय हुं । कवचशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ गं गः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

गुरु मण्डलार्चनम्

देवस्य पश्चात् प्रागपवर्ग रेखात्रये दक्षिण संस्था क्रमेण गुर्वोधत्रयं यजेत् ।।

यथा--

द्विव्यौघः १

श्रीं ह्रीं क्लीं विनायकसिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३	कवीश्वरसिद्धाचार्य	,,	,,	,,	,,	।।
३	विरूपाक्षसिद्धाचार्य	,,	,,	,,	,,	।।
३	विश्वसिद्धाचार्य	,,	,,	,,	,,	।।
३	ब्रह्मण्यसिद्धाचार्य	,,	,,	,,	,,	।।
३	निधीशसिद्धाचार्य	,,	,,	,,	,,	।।

सिद्धौघः २

श्रीं ह्रीं क्लीं गजाधिराज सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ वरप्रदसिद्धाचार्य " " " " ॥

मानवौघः ३

३ विजयसिद्धाचार्य श्रीपादुकां पूजयामि तर्प० नमः

३ दुर्जयसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ जयसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ दुःखारिसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ सुखावहसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ परमात्मसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ सर्वभूतात्मसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ महानन्दसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ फालचन्द्रसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ सद्योजातसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ बुद्धसिद्धाचार्य " " " " ॥

३ शूरसिद्धाचार्य " " " " ॥

ततः परमेष्ठि गुरु मंत्रेण परमेष्ठि गुरुं, परम गुरुमंत्रेण परमगुरुं, स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत् ॥

आवरण देवताध्यानम्

त्रिकोण बाह्ये पूर्वादि चतुर्दिक्षु समर्चयेत्
अग्रस्थ बिल्ववृक्षाधः श्रियं श्रीपतिमर्चयेत्

पद्मायुधधरा पद्मा शंखचक्रधरो हरिः
दक्षिणे वट वृक्षाधः गौरीं गौरीपतिं यजेत्
पाशांकुशधरा गौरी टङ्कशूलधरोहरः
पश्चिमे पिप्पलस्याधो रतिं रतिपतिं यजेत्
रतिरुत्पलहस्ताढ्या कोदण्डास्त्रधरः स्मरः
सौम्ये प्रियंगुवृक्षाधः महापोत्रिणमर्चयेत्
शुक्र व्रीह्य ग्रहहस्ताभूर्ग दा चक्रधरः पतिः
षट्कोणेषु च सम्पूज्याः आमोदाद्याः प्रियान्विताः
आमोदं सिद्धि सहितमग्रकोणे प्रपूजयेत्
समृद्धया युक्तमभ्यर्च्य प्रमोदं वह्नि कोणके
सुमुखं कान्ति संयुक्तमीशकोणे समर्चयेत्
दुर्मुखं मदनावत्या यजेद्वरुणकोणके
विघ्नं मदद्रवायुक्तं कोणे नैशाचरे यजेत्
वायव्ये विघ्नकर्तारं द्राविण्या सह संयजेत्
पाशांकुशाभयाऽभीष्ट धारिणोऽरूण विग्रहाः
गण्डभित्तिगलद्दानपूर धौतमुखांबुजाः
विघ्नास्तत्प्रमदास्सर्वाः मदाधूर्णित लोचनाः
एक हस्त धृताम्भोजाः इतरालिङ्गित प्रियाः
षट्कोणपार्श्वयोः पूज्यौ शंखपद्मनिधी क्रमात्
निजप्रियाभ्यां सहितौ सर्वाभरण भूषितौ
केसरेष्वंग पूजा स्यात् ब्राह्मयाद्याः पत्रमध्यगाः
बहिर्लोकेश्वराः पूज्याः वज्रादीनियथा क्रमम्

प्रथमावरणम्

त्र्यश्रषडश्रयोरन्तराले प्रागादिदिक्षु क्रमेण--

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीपति श्रीपादुकां पूज० तर्प० नमः ।।

३ गिरिजागिरिजापति ,, ,, ,, ,, ।।

३ रतिरतिपति ,, ,, ,, ,, ।।

३ महीमहीपति ,, ,, ,, ,, ।।

एताः प्रथमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । इति पुष्पंदत्वा । मूलेन देवं त्रिः संतर्प्य, पंचोपचारं कृत्वा ।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य--

अनेन प्रथमावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयंताम् ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।।

द्वितीयावरणम्

षडश्रे देवाग्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्येन तद्दक्षवाम पार्श्वयोश्च क्रमेण यजेत्--

श्रीं ह्रीं क्लीं ऋद्धयामोद श्रीपादुकां पूज० तर्प० नमः ॥

३	समृद्धि प्रमोद	,,	,,	,,	,,	॥
३	कान्ति सुमुख	,,	,,	,,	,,	॥
३	मदनावती दुर्मुख	,,	,,	,,	,,	॥
३	मदद्रवाविघ्न	,,	,,	,,	,,	॥
३	द्राविणीविघ्नकर्तु	,,	,,	,,	,,	॥
३	वसुधाराशंखनिधि	,,	,,	,,	,,	॥
३	वसुमतिपद्मनिधि	,,	,,	,,	,,	॥

एताः द्वितीयावरदेवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः ।

इति पुष्पं दत्वा । मूलेन देवं त्रिः संयर्प्य, पञ्चोपाचारं कृत्वा ।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

इति सामान्याघ्यौदकेन देवता हस्ते पूजां समर्प्य--

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयंताम् ॥

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

तृतीयावरणम्

षडस्त्रन्धि षट्के प्राग्वत् षडङ्गदेवताऽर्चनम्--

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां हृदयशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥

३ श्रीं गीं शिरशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ह्रीं गूं शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ क्लीं गैं कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ग्लौं गौं नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ गं गः अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एताः तृतीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः ॥

इति पुष्पं दत्वा । मूलेन देवं त्रिः संतर्प्य । पंचोपचारं कृत्वा ।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्ट सिद्धिमेदेहि शरणागत वत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य--

अनेन तृतीयावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयंताम् ।

इति योनि मुद्रया प्रणमेत् ॥

तुरीयावरणम्

अष्टदले पश्चिमादि दिक्षु वायव्यादि विदिक्षु च प्रादक्षिण्य क्रमेण--

श्रीं ह्रीं क्लीं आं ब्राह्मी श्री पादुकां पूज० तर्प० नमः ।।
३ ईं माहेश्वरीं ,, ,, ,, ,, ।।
३ ऊं कौमारी ,, ,, ,, ,, ।।
३ ॠं वैष्णवी ,, ,, ,, ,, ।।
३ ॡं वाराही ,, ,, ,, ,, ।।
३ ऐं माहेन्द्री ,, ,, ,, ,, ।।
३ औं चामुण्डा ,, ,, ,, ,, ।।
३ अः महालक्ष्मी ,, ,, ,, ,, ।।

एताः तुरीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः संपूजिताः सन्तर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः ।।

।। इति पुष्पं दत्वा ।।

मूलेन देवं त्रिः संतर्प्य । पंचोपचारं कृत्वा ।
श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये त्तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ।।

इति सामान्यार्ध्योदकेन देवता हस्ते पूजां समर्प्य--
अनेन तुरीयावरणार्चनेन भगवान् श्री महागणपतिः प्रीयंताम् ।

।। इति योनि मुद्रया प्रणमेत् ।।

पञ्चमावरणम्

अथ चतुरश्रस्य रेखायां प्रागाद्यासु अष्टसु दिक्षु क्रमेण--

श्रीं ह्रीं क्लीं लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावत वाहनाय सपरिवाराय नमः इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ रां अग्नये शक्ति हस्ताय तेजोधिपतये अज वाहनाय सपरिवाराय नमः अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ टां यमाय दण्ड हस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नर वाहनाय सपरिवाराय नमः निर्ऋति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकर वाहनाय सपरिवाराय नमः वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।

३ यां वायवे ध्वज हस्ताय प्राणाधिपतये रुरु वाहनाय सपरिवाराय नमः वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ सां सोमाय शंखहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्व वाहनाय सपरिवाराय नमः सोम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ हां ईशानाय त्रिशूल हस्ताय विद्याऽधिपतये बृषभ वाहनाय सपरिवाराय नमः ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एताः पंचमावरणदेवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः संपूजिताः संतर्पिता संतुष्टाः सन्तु नमः ॥ इति पुष्पं दत्वा । मूलेन देवं त्रिः संतर्प्य । पंचोपचारं कृत्वा ।

श्रीं ह्रीं क्लीं अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य अनेन पंचमावरणार्चनेन भगवान् श्री महागणपतिः प्रीयंताम् ।

॥ इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

पुनः मूलेन दशवारं संतर्पयेत्

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलं श्री सिद्धलक्ष्मी सहित श्री महा गणपति श्री पादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ।

॥ इति दशवारं संतर्पयेत् ॥

शोडषनामार्चनम्

श्रीं ह्रीं क्लीं सुमुखाय नमः ॥ ३ धूमकेतवे नमः ॥
३ एकदन्ताय नमः ॥ ३ गणाध्यक्षाय नमः ॥
३ कपिलाय नमः ॥ ३ फालचन्द्राय नमः ॥
३ गजकर्णकाय नमः ॥ ३ गजाननाय नमः ॥
३ लम्बोदराय नमः ॥ ३ वक्रतुण्डाय नमः ॥
३ विकटाय नमः ॥ ३ शूर्पकर्णाय नमः ॥
३ विघ्नराजाय नमः ॥ ३ हेरम्बाय नमः ॥
३ गणाधिपाय नमः ॥ २ स्कन्दपूर्वजाय नमः ॥

पुनः पूर्वोक्त शोड्षभिरुपचारैः पूजयेत् ।

श्रीं ह्रीं क्लीं श्री महागणपतये नमः ॥ नानाविध परिमल पत्र पुष्पाणि दूर्वादीनि समर्पयामि ॥ अथ यथावकाशं सहस्र नामादिना अर्चनं कुर्यात् ॥

धूपः

श्रीं ह्रीं क्लीं धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामस्त्वं देवानामसि स्नितमं

प्रप्रितमं जुष्ट तमं वह्निनतमं देवहूतममह्नु तमसि हविर्धानं हँ हस्व माह्वार्मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रेक्षे मभिर्मा संविक्ष्यामात्वा हिँसिषम् ।।

३ श्री सिद्धलक्ष्मी सहित श्री महा गणपतये नमः धूप माघ्रापयामि । धूपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।।

दीपः

श्रीं ह्रीं क्लीं उद्दीप्यास्व जातवेदोपघ्न न्निरृतिं मम ।
पशूँश्च मह्यमावह जीवनं च दिशोदिश ।
मानो हिँ सीजर्ातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत् ।
अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय ।।

३ श्री सिद्धलक्ष्मी सहित श्री महागणपतये नमः दीपं दर्शयामि । दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।।

ततः–दन्त–पाश–अङ्कुश–विघ्न–परशु–लड्डुक बीजापूराख्याः सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ।।

नैवेद्यम्

श्री देवाग्रे, चतुरश्रमण्डलं सामान्यार्घ्योदकेन विधाय, तत्र आधारोपरि स्थापितं, सौवर्ण रौप्य कांस्यादि स्थाली चषकभरितं भक्ष भोज्य चोष्य लेह्य पेयात्मकं रसवद् व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यं कपिलाज्यं दधि दुग्ध मधु यथा सम्भवं वा नैवेद्यं निधाय–मूलेन निरीक्ष्य ।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रः--इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य--

३ ओं जुं सः वौषट्--इति सप्तवारभभि-मंत्रित जलेन प्रोक्ष्य-

३ चक्रमुद्रां प्रदर्श्य-

३ यं-इति वायु बीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारम् जपन् तद्गतदोषान् संशोष्य---

३ रं-इति वह्नि बीजेन अधोमुख दक्षकरेण संदह्य-

३ वं-इति धेनु मुद्रया अमृतीकृत्य-

३ मूलेन विशेषार्ध्य बिन्दुभिः प्रोक्ष्य-

३ मूलेन सप्तबारमभिमन्त्र्य-

३ ओं क्लीं कामदुधे अमोघे वरदे विच्चे स्फुरस्फुर श्रीं पर श्रीं इति कामधेनु विद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य देवस्य पाद्यं अर्ध्यं आचमनीयं च दत्वा-

३ मूलेन देवं त्रिः संतर्प्य-

पात्रान्तरे विशेषार्ध्यं किंचित् गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्-

३ मूलम् साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तये श्री सिद्धलक्ष्मी सहित श्री महागणपतये नैवेद्यं कल्पयामि नमः-

इति नैवेद्यं परिसरे संस्थाप्य। कृताञ्जलिः

३ हेम पात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वर ।।
शर्करापायसापूप धृत व्यञ्जन संयुतम् ।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम् ।।

।। इति निवेद्यं ।।

ओं भूर्भुवस्सुवः+परिषिञ्चामि । अमृतोपस्तरणमसि–इति देवतायै आपोशनं दत्वा–वामकरेण ग्रास मुद्रां प्रदर्श्य, दक्षकरेण प्राणादि पञ्चमुद्रा प्रदर्शन पूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः कल्पयेत् । यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं प्रणायस्वाहा ।। श्रीं ह्रीं क्लीं उदानायस्वाहा ।।
३ अपानायस्वाहा ।। ३ समानाय स्वाहा ।।
३ व्यानायस्बाहा ।। ३ ब्रह्मणेस्वाहा ।।

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गं आत्मतत्वव्यापकः श्री सिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतिस्तृप्यंतु.

३ ओं गं विद्यातत्वव्यापकः ,, ,,
३ ओं गं शिवतत्वव्यापकः ,, ,,
३ ओं गं सर्वतत्वव्यापकः ,, ,,

इति किंचित्-किंचित् सामान्यार्ध्योदकं दद्यात् ।

श्रीं ह्रीं क्लीं चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेक भक्षणम् ।
निवेदयामि ते देव सानुगस्त्वं जुषाण तत् ।।
श्रीं ह्रीं क्लीं मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ।

माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवैरजः मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः । इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्य जातं तादात्म्येन समर्पयेत् ।

श्रीं ह्रीं क्लीं नमस्ते देव देवेश सर्व तृप्तिकरं परम् ।
अन्यानिवेदितं शुद्धं प्रकृतिस्थं सुशीतलम् ॥
अमृतानन्द सम्पूर्णं गृहाण जल मुत्तमम् ॥

३ श्री सिद्धलक्ष्मी सहिते श्री महागणपतेः अमृतपाकीय समर्पयामि ॥

देवं भुक्तवन्तं सुतृप्तं ध्यात्वा

ओं अमृतापिधानमसि । इत्पुत्तरापोशनं दत्वा--

श्रीं ह्रीं क्लीं हस्तप्रक्षालनं, गण्डूषं, पादप्रक्षालनं, आचममनीयं, कल्पयामि नमः । ताम्रबलिपात्रे निवेदन सामग्रीः किंचित्किंचिदादाय निवेदन पात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलं अस्त्रेण शोधयेत् ।

ताम्बूलम्

श्री ह्रीं क्ली बनस्पति दैबत्याय ताम्बूलाय नमः ।

इति सामान्यार्ध्योदकेन प्रोक्ष्य—

श्रीं ह्रीं क्लीं तमालदलकर्पूरपूगभाग समन्वितम् ।
एलापत्रसुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

३ श्रीसिद्ध लक्ष्मी सहित श्री महागणपतये ताम्बूलं कल्पयामि नमः ॥

अव्यर्थ

चतुर्थी—व्रत

७ लड्डू	—	श्रावण
दही	—	भाद्रपद
उपवास	—	क्वार
दूध	—	कार्तिक
निराहार	—	अगहन
गोमूत्र	—	पौष
तिल	—	माघ
घी शक्कर	—	फागुन
पंचगव्य	—	चैत्र
दूर्वारस	—	वैशाख
घी	—	ज्येष्ठ
शहद	—	आषाढ

ततः पुण्याहवाचनम्

कलश स्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य पुण्याह वाचकेभ्यो वेदविद्भ्यो नमः इति वेदविदो विप्रान् गन्धादिभिरभ्यचर्य प्रधानाचार्य बिशेषवरण द्रव्यैर्वृत्वा वरण द्रव्य चतुष्टय मादाय वरणं कुर्यात् ।

विप्रवरण संकल्पः

ॐ अद्येत्यादि अमुकोऽहं करिष्यमाण गणेश यज्ञ कर्मणः साङ्गतार्थं पुण्याहवाचन कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैः अमुकामुकगोत्रान् ऋग्यजुः सामाथर्व विदो विप्रान् अमुकामुक शर्मणो युष्मान् अहं वृणे ।

विप्रा :--वृताः स्मः । इति विप्राः प्रतिब्रूयुः ।

वरणमन्त्र :--ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

यजमान :--अवनिकृतजानु मण्डलः कमल मुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय कलशं धारयित्वाऽऽशिषं प्रार्थयेत् ।

प्रार्थना :--ॐ दीर्घानागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च ।

त्रिणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः अतो धर्माणि धारयन् तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घ मायुरस्तु ॥३॥

विप्रा :--अस्तु दीर्घमायुः ॥३॥

यजमान :--अपांमध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठतम् ।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तुमे ॥

शिवा आपः सन्तु इति विप्र हस्तेषु जलं दद्यात् ।

विप्रा :--सन्तु शिवा आपः ॥ ३ ॥ इति विप्राः प्रतियूयुः ।

यजमान :--लक्ष्मीर्वसतु पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतुवै नित्यं सौमन्स्यं तथास्तुनः ।
ॐ सौमन मस्यमस्तु ॥३॥
इति विप्र हस्तेषु पुष्पं दद्यात् ।

विप्रा :--अस्तु सौमनस्यम् । इति प्रतिवचनम् ।

यजमान :--अक्षतं चास्तुमे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके ततद्वस्तु सदामम ॥

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति विप्रहस्तेषु अक्षतान् दद्यात् ।

विप्रा :--अस्त्वक्षतमरिष्टं च ॥३॥

यजमान :-ॐ गन्धाः पान्तु इति विप्र हस्तेषु गन्धं दद्यात् ।

विप्रा :--सौमङ्गल्यं चास्तु ।

यजमान :--ॐ अक्षताः पान्तु इति विप्रहस्तेषु वक्षतान् दद्यात् ।

विप्रा :--आयुष्यमस्तु ।

यजमान :--ॐ पुष्पाणि पान्तु इति पुष्पाणि विप्र हस्तेषु दद्यात् ।

विप्रा :--सौश्रियमस्तु ।

यजमान :--ॐ ताम्बूलानि पान्तु विप्रहस्ते ताम्बूलं दद्यात् ।

विप्रा :-ऐश्वर्यमस्तु ।

यजमान :--ॐ दक्षिणाः पान्तु विप्रहस्तेषु दक्षिणां दद्यात् ।

विप्रा :--बहुदेयं चात्तु ।

यजमान :--ॐ सर्वाच्चितमस्तु विप्रहस्तेषु जलं दद्यात् ।

विप्रा :--अस्त्वर्चितम् ।

प्रार्थना--ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशोविद्या विनयो वितं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु इति विप्रान् प्रार्थयेत् ।

यजमान :--यां कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषि सम्मतं समनुज्ञातः पुण्यं पुण्याह वाचयिष्ये । इति वदेत् ।

विप्रा :--वाच्यताम् ३ ।

ऋक् :- ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तु रस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयं सत् ।

द्रविणोदा वीरवती मिषन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ॥ १ ॥

सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्ता
त्सविता धरत्तात् ।

सविता नः सुवतु सर्वतातिं सवितानो रासतां
दीर्घमायुः ॥२॥

नवो नवो भवति जायमानो ऽन्हांकेतुरुषसामेत्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचन्द्रमास्तिरते
दीर्घमायुः ॥३॥

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदाः सहते
सूर्येण ।

हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्रति
रन्तआयुः ॥४॥

यजुः

ॐ द्रविणोदा: पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत ।

नेष्ट्राद्दतु भिरिष्यत ॥१॥

सवितात्वा सवाना ँ॒ सुवतामग्नि गृहपतीना ँ॒

सोमो वनस्पती नाम् ।

बृहस्पतिर्वाच ऽ इन्द्रो ज्यैष्ठायाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः

सत्यो वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥२॥

न तद क्षा ँ॒ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानाभोजः

प्रथम् ज ँ॒ ह्ये तत् ।

यो विभर्ति दाक्षायण ँ॒ हिरण्य ँ॒ स देवेषु कृणुते

दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥३॥

उच्चाते जातमन्धसोदिवि सद्भूम्याददे ।

उग्रँ् शर्म महिश्रवः ॥४॥

उपास्मै गायता नरः पवमानायें ।

अभिदेवां २ इयक्षाते ॥५॥

५र४ २ ८ ५र
सामः–ओ३म् देवो ३ वो ३ द्रविणोदाः ।

२र १र २र १ २
पूर्णा वि व ष्ट्वा सिचम् ।

१ २ १ २र
उ द्वा सिञ्चार । ध्व मुप वा पृणध्वम् ।

१ ७ १ र २ र १ २
आ दि द्वोदेर । व ओ ह ते इ डा २३ भा ३४३ ।

१
ओ २३४५ इ । डा ॥१॥

५४ ५र र ४र ५र २ १
अद्य नो देव सवितः । औ हो वा । इ ह श्रु धायि ।

र २ र २
प्रजा वा २३ तसा वीः । सौभगाम् । परादू २३ ष्वा ३ ।

१ २ २ १ १२
हो बा २३ हा । ष्निय ँ् सू २३४५ वा ६५६ दक्षा ३

१ १ १ १ १
या २ ३ ४ ५ ॥२॥

चन्द्रमा आउवा प्सु वान्ता राउषा । सुपर्णो धाउवा । वतेदिवि ब वो हि राउवा । ण्यनायिमा याउवा । पद विन्दाउवा । ति विद्यु ताः वितंमा आउवा । स्यरोदा २३ सा ३४३ यि ओ २३४५ इ । डा ॥३॥

उच्चाता ३ यि जात मन्धसाः । दिवाई सा १ दभू २ । मिया २३ ददायि । उग्र शर्म्मा २३ यिश्रवाउ । वा ३ । स्तौष २ ३ ४ ५ ॥४॥

उ पा ऽ ५ स्मै । गा ३ या ३ तानाराः । पा ३ वामा ३ ना । या २ ३ आ । हुम्मायि । दा ३ वायि । अभिदेवां ँ इया २ क्षनाउ । वा २ ३ ४ ५ ॥५॥

अथर्वण :–ॐ धातारातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापति निधिपति र्नो अग्निः ।

त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो यजमानाय

द्रविणन्दधातु ॥ १ ॥

येन देवं सवितारम्परि देवा अधारयन् ।

तेनेदम्ब्रह्मणस्पते परिराष्ट्राय धत्तन ॥ २ ॥

अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् ।

भद्राहमस्मभ्यं राजञ्छक धूम त्वं कृधि ॥ ३ ॥

उच्चायतन्तमरुणं सुपर्णमध्ये दिवस्तरणिं

भ्राजमानम् ।

पश्यामत्वा सवितारं यमाहु रजस्त्रं ज्योतिर्यद

विंददत्त्रिः ॥ ४ ॥

यजमान :—व्रत जप नियम तपः स्वाध्यायशमदम-दयादान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयतास् इति विप्रान् प्रार्थयेत् ।

विप्रा :-समाहित मनसः स्मः ।

यजमान :-प्रसीदन्तु भवन्तः इति वदेत् ।

विप्रा :-प्रसन्ना स्मः ।

यजमान :-पूर्वोक्त रीत्याऽवनि कृत जानु मण्डलः कमल मुकुल सदृशं अञ्जलि शिरस्या धाय तत्र तमेव कलशं धारयित्वा कलश जलं अन्यस्मिन् पात्रे वक्ष्यमाण प्रकारेण प्रतिवचनं दद्यात् ।

ॐ शान्तिरस्तु अस्तु इति प्रतिवचनम् । पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु ॐ वृद्धिरस्तु ॐ अविघ्नमस्तु ॐ आयुष्यमस्तु ॐ आरोग्यमस्तु ॐ शिवमस्तु ॐ शिवं कर्मास्तु ॐ कर्म समृद्धिरस्तु ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु ॐ वेद समृद्धिरस्तु ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु ॐ धन धान्य समृद्धिरस्तु ॐ पुत्र पौत्र समृद्धिरस्तु ॐ इष्ट सम्पदस्तु (द्वितीय पात्रे) अरिष्ट निरसनमस्तु ॐ यत्पापं तत्प्रतिहतमस्तु ।

(पुनः पात्रे) ॐ यत् श्रेयस्तदस्तु ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॐ उत्तरोत्तरमहर हरभिवृद्धिरस्तु ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् । इष्ट कामाः सम्पद्यन्ताम् ॐ तिथिकरण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नाधि देवताः प्रीयन्ताम् ॐ तिथि करणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधि देवते प्रीयेताम् ॐ दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् ॐ अग्निपुरोगा विश्वे देवाः

प्रीयन्ताम् ॐ इन्द्रगपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॐ विष्णु पुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् ॐ महेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम् ॐ वसिष्ठ पुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् ॐ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम् ॐ श्री श्रद्धामेधे प्रीयेताम् ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयन्ताम् ओं भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती तुष्ठिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती वृद्धि प्रीयताम् ॐ भगवन्तौ विघ्न विनायकौ प्रीयेन्ताम् ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् ॐ सर्वाग्राम देवताः प्रीयन्ताम् ॐ सर्वाइष्ट देवताः प्रीयन्ताम् ततो जलं वहिर्देशे ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः ॐ हताश्च परिपन्थिनः ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः ॐ शत्रवः पराभवयान्तु ॐ शाम्यन्तु घोराणि ॐ शाम्यन्तु पापानि ॐ शाम्यन्त्वी-तय (पुनः पात्रे) ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम् ॐ शिवाआपः सन्तु ॐ शिवा ऋतवः सन्तु ॐ शिवा अग्नयः सन्तु ओं शिवा आहुतयः सन्तु ओं शिवः वनस्पतयः सन्तु ओं शिबः औषधयः सन्तु ओं शिवा अतिथयः सन्तु ओं अहोरात्रे शिवेस्याताम् ।

ऋक्-ओं शंवः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्ष-
त्वोषधयः प्रतिधीयतम् ॥

शन्नो द्यावा पृथिवी शम्प्रजाभ्यः शन्नो अस्तु
द्विपदे शञ्चतुष्पदे ॥

यजुः-ओं आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्म वर्च्चसी जायतामा
राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इष व्योति व्याधी महारथो
जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा
जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमान वीरो जायतां
निकामे निकामे नः पर्य्यन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ
औषधयः पच्यान्तां योग क्षेमो नः कल्पताम् ॥

साम :-ओं त्वष्टो ३४ । नो दैवियम् वचाः ।

२१ र २ १ २ १र र २
पर्जन्यो ब्रह्मणस्पा २ ३ तीः। पुत्रै भ्रातृभिरदितिर्नू
१र २ १ २ १ २
पातू २ ३ नाः। दुण्टारा २ ३ न्त्रा। मेणंवा २३ चा
१
२ ४ ३:। ओ २ ३ ४ ५ इ। डा ॥

→ अथर्वण :-ओं गणास्त्वोपगायन्तु मारुताः पर्जन्य
घोषिणः पृथक्। सर्गा वर्ष स्य वर्ष तो वर्षन्तु पृथिवी
मनु ॥

यजमान :-ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य च गृहे करिष्यमाण अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात्।

विप्रा :-पुण्य हुम् ३।

→ ऋक्-ओं उदगातेव शकुने सामगायसि ब्रह्मपुत्र
इव सवनेषु शंशसि।

वृषे व वाजी शिशु मतीरपीत्या सर्वतौ नः शकुने

भद्र मावद विश्वतो नः शकुने पुण्यमावदे ॥

यजुः-ओं पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहिमा ॥

२ २ २ १ ५
साम :--ओं पुनानः सोमा ३ धारा २ ३ ४ या।
२ २ ३ २
आपो वसानो अर्षस्या रत्नधा योनिमृतस्यसा २ यि
२ १ १ २ २ १ २ २ २
दसायि । ओ हा ३ उ वा उत्सो देवोहि रा २ ३ हायि।
१ २ २ १ २ ४ ५ ४
औ हा ३ उ वा । ण्य या। औ ३ हो वा । हो ५ इ।
डा ॥

अथर्वण:-ओं पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवोधिया।

पुनन्तु विश्वो भूतानि पवमानः पुनातुमा ॥

यजमानः -ओं पृथिव्यामुद्धतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।

ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्ततकल्याणं ब्रुवन्तुनः।

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिर्ब्रूयात् ।

विप्राः-अस्तु कल्याणम् ३ इति त्रिर्प्रतिब्रूयुः ।

ऋक्-ओं अपाः सोम मस्तमिन्द्र प्रयाहि कल्याणी-
जाया सुरणं गृहे ते ।
यत्रा रथस्य वृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो
दक्षिणा वत् ॥

यजुः-ओं यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्म राजन्याभ्या ँ शूद्राय चार्याय च
स्वाय चारणाय च ।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे
कामः समृध्यतामुपमादो नमतु ।

सामः-ओं का ५ या । नश्चा ३ यित्रा ३ आभु-

वात्। ओं। ती सदावृधः स। खा। औ ३ हो होयि।
कया २ ३ शचायि। ष्ट यौ हो ३। हुम्मा २। वा २
र्त्तो ३५ हायि॥

अथर्वणः—ओं विश्वजित् कल्याण्यै मापरि देहि।
कल्याणि द्विपाच्च सर्व न्नो रक्ष चतु-
ष्पाद्यच्च न स्वम्॥

यजमानः—ओं सागरस्यतु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः
कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धि
ब्रुवन्तुनः॥

भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक कर्मणः ऋद्धि भवन्तो ब्रुबन्तु। इति वारंत्रयं ब्रूयात्।

विप्राः—ऋद्धयताम् ३।

ऋक्—ओं ऋध्यामस्तोमं सनुयाम वाजमानो मन्त्रं
सरथे होपयातम्।

यशो पश्वं मधु गोष्वन्तरा भूतांशों अश्विनोः

काममप्राः ॥

यजुः-ओं सत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता

ऽअभूम ।

दिवम्पृथिव्या ऽ अध्यारूहामा विदाम देवान्त्स्व

ज्योतिः ॥

२र र र १ २ १र २
साम्रः-ओं औ हो वा ।३। अगन्मज्योतिः ।३।
२१ र २र १ २ १र र २र र
अमृता अभूमा ।३। अन्तरिक्षं पृथिव्या अध्यारूहाम ।३।
१ २ २र १ र २ र १ २र र १र
दिवमन्तरिक्षादध्यारूहाम ।३। अविदाम देवान् ।३।
१२र १र २ २र र र २र १ र ३
समुदेवैरगन्महि ।३। औ हो वा ।३। ।ए। सुवर्ज्योति
१ १ १ १
२ ३ ४ ५ :॥

अथर्वणः-ओं ऋघङ् मन्त्रो योनि य आबभूवा-

मृतासुर्वर्द्ध मानः सुजन्मा ।

अदब्धासु भ्राजमानो हेवन्तितो धर्तादाधारत्रीणि ॥

यजमानः–ओं स्वस्तिर्या अविनाशाख्या पुण्य
कल्याण वृद्धिदा ।
विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तुनः ॥
भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
अमुक कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिब्रूयात् ।
विप्राः–स्वस्ति ३ ।

ऋक्–ओं स्वस्ति ऋद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्ण
स्वस्त्यभि वा ममेति ।

सा नो अमासो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु
देव गोपा ॥

यजुः–स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाँ
विश्व वेदाः ।
स्वस्तिन स्ताक्ष्योऽअरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो
वृहस्पति र्दधातु ॥

२र २र ७ २
सामः-ओं त्रातारमिन्द्रमविता । रमी २३ न्द्राम् ।
१र र २ १
हवे हवे सुहव ँ् शू रमी २३ न्द्राम् । हुवाई नु शक्रं
७ २ २१ २१ र २१र
पुरुहू । तमी २३ न्द्राम् । इद ँ् स्वस्तिनो मघवा ।
२ २ ४
वा ३४३ इ । तू ३ वा ५ इन्द्रा ६५६ः ॥

अथर्वणः-ओं स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु

स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।

विश्व सुभूतं सु विदत्रन्नो अस्तु ज्योगेव दृशे दृशेम

सूर्य्यम् ॥

यजमानः-मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुव लोमशयोस्तथा ।
आयुषा तेन संयुक्ताः जीवेम शरदः शतम् ॥
इति त्रिवारं ।

विप्राः-शतं जीवन्तु भवन्तः ॥

ऋक्:-ओं शतं जीव शरदो वर्द्धमानः शत हेमन्ता

न्छतमु वसन्तान् ।

शत मिन्द्राग्नी सविता वृहस्पतिः शतायु षा हवि षेमं पुनर्दुः ॥

यजुः–ओं शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जर सन्तनूनाम् ।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता-युर्गन्तोः ॥

सामः–ओं आयु र्विश्वायु र्विश्वं विश्वमायुरशीमहि । प्रजान्त्वष्ट रधिनिधे ह्यस्मै । शतञ्जीवेमशरदो वयन्ते २३४५ ॥

अथर्वणः–ओं आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजांत्वष्ट रधि निधे ह्यस्मै ।

रायस्पोषं सविमरा सुवास्मै शतञ्जी वाति शरद

स्तवायम् ।

यजमानः-शिवगौरी विवाहे याया श्री रामे या
नृपात्मजे ।

धनदस्य गृहे या श्री रस्माकं सास्तु सद्मनि ॥

विप्राः-अस्तु श्रीः ३ ।

→ ऋक्-ओं श्रिये जातः श्रिय आविरियाय श्रिय वयो

जरितृभ्यो दधति ।

श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्यासमिथा

मितद्रौ ॥

→ यजुः-ओं मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ।

पशूना ँ रुपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम्मयि

स्वाहा ॥

→ सामः-ओं श्रायन्त इवसू ४ रायाम् । विश्वा

१ — १ —१ र २ २र
२ इद्दिन्द्रा २। स्यमा २ क्षाता। वासूनि जातो जनिमा।
२ १ २ — १ १र१ २र र १ २
नियोजा १ सा २। प्रति भागन्नदी २ धिमः। प्रा २३ ती
१र २ २ १र ३ २ १ ५
भागान्ना ३ दा। हुम्। धिमा ३ :। औ २३४ वा।
श्रिये १॥

अथर्वणः—ओं एहया तु वरुणः सोमो अग्नि वृहस्पतिवसु भिरेह यातु। अस्य श्रियमुप संयात सर्व उग्रस्य चेतुः सं मनसः सजाताः॥

यजमानः—ओं प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवान शाश्वतो नित्यं नो रक्षतु च सर्वतः।
ओं भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् इति उदक त्यागः।

ऋक्—ओं प्रजापते नत्व देतान्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

यजुः—ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वयममुष्य पिता सावस्य पिता वय ँ स्याम पतयो रयीणा ँ स्वाहा ॥

सामः—ओं हाउ । ३ । इमाः । ३ । प्रजाः । ३ । प्रजापते । होइ ॥३॥ प्रजापते । हा ३ १ उ वा २ । ऐ । हृदया ३१ उ । वा २ । प्रजारूपमजीजने । प्रजारूपमजीजने । प्रजारूपमजीजने । इट् इडा २ ३ ४ ५ ॥

अथर्वणः—ओं प्रजापते रावृ तो ब्रह्मणावर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च । जरदष्टिः कृतवीर्यो

विहायाः सहस्त्रा युः सु कृतश्चरेयाम् ।।

यजमानः–आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तुऋत्विग्भिर्वेद पारगैः ।।

विप्राः–ओं आयुष्मते स्वस्ति ३ ।

ऋक्–ओं स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः संयन्म
हीरिषं आसत्सि पूर्वीः ।
रायो वन्तारो वृहतः स्यामास्मे अस्तु भग इन्द्र
प्रजावान् ।

यजुः–ओं प्रतिपन्था मपद्महि स्वस्ति गामने हसम्।
येन विश्वाः परिद्विषो वृणक्ति विदन्ते वसु ।।

सामः–ओं त्यमूषू । वाजि । ना ३ ४ ५ म् । देव
जूता २ ३ ४ ५ सहोवानान्ता । रुता ३ । र ँ रथा-

नाम् । अरिष्टना २३४ इमीम् । पृतना ३४३ जमाशुम् ।
स्वस्त । या ३ । तार्क्ष्यमिहा ३४३ हू ३ वा ५ इ मा
६५६ ॥

अथर्वणः-ओं वेदः स्वस्तिद्रुघणः स्वस्तिः पर
शुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति ।

हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञ कामास्ते देवासो यज्ञमिमं
जुषन्ताम् ॥

यजमानः-अत्र प्रधान देवाय महाविष्णवे नमः
विष्णुः प्रीयताम् ।

इति कलश जलं अधः स्थित पात्रे पूर्ववत्
क्षिपत् ॥

ओं स्वस्ति पुण्याहवाचन कर्म समृद्धिरस्तु ।
इति त्रिः ।

विप्राः-ओं अस्तु समृद्धिः ।

अभिषेकः-चतुः स्वस्ति पयः पञ्च विष्णोः षट्-
द्वादश देवताः ।

प्रातः षट्, पञ्चभगः, पञ्चैन्द्रैः, पञ्चवारुणैः ।

षड्वातैः, शान्तिरष्टौ, जपान्मृत्युर्विनश्यति ।।

(संस्कार गणपति)

ओं स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्रश्रवाः स्वस्तिनः पूषा० पुनातु ।
ओं विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे० पुनातु ।।
ओं अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो० पुनातु ।।
ओं प्रातरग्निं प्रातारिन्द्र ँ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पति प्रातः सोममुत रुद्र ँ हुवेम् ।। पुनातु ।।
ओं भगप्रणतेर्भगसत्यराधो भगेमांधियमुदवा ददन्नः । भगप्रणो जनय गोभिरश्वैर्भगं प्रन्नृभिन्नृवन्तः स्याम ।। पुनातु ओं त्रातारभिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ हवे ह ० पुनातु ।
ओं वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भ० पुनातु ।

ओं समुद्रायत्वा वाताय स्वाहा सरिरायत्वा वाताय स्वाहा ।

अनाधृष्यायत्व वाताय स्वाहा प्रतिधृष्या यत्वा वाताय स्वाहा ।

अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा शिमिदायत्वा वाताय स्वाहा ।।

।। पुनातु ।।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति

रापः० पुनातु ओं यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु ।

शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ।।ओं शान्तिः ३।।

→ अमृताभिषेकोऽस्तु ।

विप्राः—अस्त्वमृताभिषेकः ।

→ विप्र दक्षिणा—ॐ अद्य पुण्याहवाचन साद्गुण्यार्थं मिमां दक्षिणां प्रजापति दैवतां काममुकामुक गोत्रेभ्यो-ऽमुकशर्मभ्यऽऋग्यजुः सामाथर्व विद्भ्यो विप्रेभ्यौ विभज्य दातुमहमुत्सृजे न मम ।

→ आचार्यं दक्षिणा—ॐ अद्य कृतैतत्पुण्याहबाचन सांगता सिद्ध्यर्थं मिमां दक्षिणां प्रजापति दैवताकां यथा नाम गोत्राय आचार्याय दातुमहमुत्सृजे ।।

→ आयुष्यतिलकम्—ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे खनिता यस्मै च त्वां खनाम्यहम् ।

अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ।।

→ आशीर्वादः—ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रावसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ।

घृतेन त्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्यकामाः ।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।

शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तथा ।।

ॐ श्री र्वच्चर्चस्वमायुष्य मारोग्य माविधात्पवमानं महीयते ।

धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥
अनेन पुण्याहवाचन कर्मणा भगवान् विष्णु प्रीयताम्।

॥ शुभमस्तु ॥

कुलदीपः

३ मूलम्-अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधादीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये॥

कर्पूरनीराजनम्

श्रीं ह्रीं क्लीं सोमोवा एतस्यराज्यमादत्ते।
यो राजा सम्राज्यो वा सोमेन यजते।
देव सुवामे तानि हवींषि भवन्ति।
एतावन्तो वै देवानाँ सवाः।
त एवास्मै सवान् प्रलच्छन्ति।
त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय। देवसू राजा
भवति॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्य स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठिकं राज्यं महाराज्य माधिपत्यम्। नतत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्त मनुभाति सर्वा तस्य भासा सर्वमिद विभाति।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो
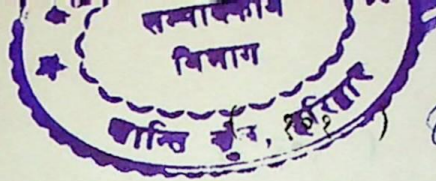
वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः । महागणपतये नमः कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।

मन्त्रपुष्पम्

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । चन्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् पशुमान् भवति । श्रीं ह्रीं क्लीं ओं तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमही ।

तन्नौ दन्तिः प्रचोदयात् ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं नमोनरगजाकृते नलिन वर्ण देहाकृते
नरासुरसुरेडित श्रुतिशिरोद्यदङ्घ्रिद्वय ।
नगेश्वरवरात्मजा नयन पद्म भानो नमः
नतार्तिहरणाङ्घ्रियुक् कलित एष पुष्पाञ्जलीः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्धलक्ष्मी सहित श्री महागणपतये नमः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

तान्त्रिक नित्य होम विधिः

साधकः स्वस्ति पद्मं विरच्य तस्मिन् गणेशं साङ्गं सावरणं षोडशोपचारैः संपूज्य तदुत्तरतः लौकिकाग्निम् प्रतिष्ठाप्य ।

तस्मिन्नग्नौ साङ्गं सावरणं गणपतिं संपूज्य अष्ट द्रव्यैः तद्वाज्य मिश्रितैः ग्रासमितैः त्रिसंख्यं पंच संख्य वाहुनेत् ।

संभृताष्ट द्रव्यं त्रिधा कृत्वा एकमंशं निवेदयेत्–द्वावंशौ जुहुयात् ।

ततः जपं कृत्वा गणपत्युपनिषदादिभिः स्तुवीत ।

पुनः पंचोपचारान् उपचर्य नीराजन प्रदक्षिण नमस्कारादि कृत्वा । अग्नेः स्वस्ति पश्चादपि गणपतिं उद्वासयेत् ।

अष्ट द्रव्यालाभेतु नारी केलेण मध्वाज्यगुड़ मिश्रितेन यथा सम्भव द्रव्येण जुहुयात् ।

इति नित्य होम विधिः ॥

विस्तरे तु गुरुपदिष्ट मार्गेण चतुष्पात्र प्रयोगेणापि होम कर्तव्यः । तस्मिन् प्रयोगे अग्नि मुखानंतरं अग्नौ गणपति मावाह्य पंचोपचारं कृत्वा गणपति मूलमंत्रेण प्रधानाहुतिं दत्वा दशवारं मूलमंत्रेण अङ्गा वरण देवतानां एकैकामाज्याहुतिं जुहुयात् ।

ततो होम शेषः ॥ स्वस्वशाखोक्त विधिना अग्नि प्रतिष्ठापनं कुर्यात् ॥

बलिदानम्

देवता दक्षभागे सामान्याध्योंदकेन वृत चतुरश्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं व्यापक मण्डलाय नमः ।

इति गन्धाक्षतै रभ्यर्च्य अर्धभक्त पूरितोदकं सक्षीरादित्रयं बलिपात्रं तत्र विन्यस्य–

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गां गीं गूं गौं गः महागणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानाय सर्वोपचार सहितं इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

इत्युच्चरन् । बलिपात्रे सामान्यार्ध्योदकं विसृजेत् । ततः पादौ प्रक्षाल्य आचम्य त्रिः प्रदक्षिण नमस्कारान् कृत्वा यथा शक्ति मूलमंत्र जपमाचरेत् । उत्तराङ्गं विधाय–

गुह्याति गुह्य गोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ।।

।। इति देवस्य हस्ते जपम् समर्पयेत् ।।

गणेशाष्टकम्

ओं विनायकैक भावना समर्चना समर्पित,
प्रमोदकैः प्रमोदकैः प्रमोदमोद मोदकम् ।
यदर्पितं समर्पितं नवन्यधान्यनिर्मितं,
न खण्डितं न खण्डितं न खण्ड मण्डनं कृतम् ।।१।।

सजातिकृद्विजाति कृत्स्व निष्ठ भेद वर्जितं,
निरञ्जनं च निर्गुणं निराकृतिं चा निष्क्रियम् ।
सदात्मकं चिदात्मकं सुखात्मकं परंपदं
भजामि तं गजाननं स्वमायया॒ऽऽत्तविग्रहम् ।।२।।

गणाधिप त्वमष्ट मूर्ति रीशसूनुरीश्वरः
त्वमम्बरं चा शम्बरं धनञ्जयः प्रभञ्जनः ।

त्वमेव दीक्षितः क्षितिं निशाकरः प्रभाकरः
चराचर प्रचारहेतुरन्तराय शान्तिकृत् ॥३॥

अनेक दंतमालनील मेकदन्त सुन्दरं,
गजाननं नुमो गजाननामृताब्धि मन्दिरम् ।
समस्त वेद बाद सत्कला कलाप मन्दिरं,
महान्तरायदुस्तमश्शमार्क माश्रितो दरम् ॥४॥

सरत्नहेम घण्टिका निनाद नूपुर स्वनैः
मृदङ्ग ताल नाद भेद साधनानुरुपतः ।
धिमिद्धिमित्तत्तोऽङ्ग तोङ्ग थेयिथेतिशब्दतो-
विनायकश्शशाङ्कशेखरा ग्रतः प्रनृत्यति ॥५॥

नमामि नाक नायकैक नायकं विनायकं
कला कलाप कल्पना निदान मादि पुरुषम् ।
गणेश्वरं गुणेश्वरं महेश्वरात्म सम्भवं
स्वपाद मूल सेविनामपार वैभव प्रदम् ॥६॥

भजे प्रचाण्ड तुन्दिलं सदन्तशूक भूषणं
सनन्द नादि वन्दितं समस्त सिद्ध सेवितम् ।
सुरा सुरौघयोस्सदा जयप्रदं भयप्रदं
समस्तविघ्न घातिनं स्वभक्त पक्षपातिनम् ॥७॥

कराम्बुजात्त कङ्कणः पदाब्ज किङ्किणी गणो-
गणेश्वरो गुणार्ण वः फणीश्वराङ्ग भूषणः ।
जगत्त्रयान्तराय शान्तिकारकोस्तुतारको-
भवार्णवादनेक दुर्गृहाच्चिदेक विग्रहः ॥८॥

योभक्ति प्रवणः परावर गुरोस्स्तोत्रं गणेशाष्टकं
शुद्ध स्संयत चेतसा यदि पठे न्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान्।
तस्य श्री रतुलास्वसिद्धि सहिता श्री शारदा सारदा
स्यातां तत्परिचारिके किल तदा काः कामनानां कथाः ॥

सुवासिनीपूजा

श्रीं ह्रीं क्लीं प्राङ्‌निमन्त्रित बटुक ममाहूय त गणपतिरूपं विभाव्य ३ वं बटुकाय अर्घ्यं कल्पयामि नमः।

इत्यादि रीत्या, अर्घ्य-आचमन-स्नान-वस्त्र-यज्ञोपवीत-गंध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात् ॥

सामयिक पूजा

ततः संनिहिते गुरौ गुरुं नत्वा गंध कुङ्कुमादिभिरूपचर्य, गुरु पादुका मन्त्रेण अभिपूज्य पात्राणि समर्पयेत्। असंनिहिते गुरौ स्वशिरसि गुरुत्रयं भजेत्। संनिहितान् सामयिकानाहूय गंध पुष्प कुङ्कुमादिभिरूपचर्य पात्राणि दद्यात्। पश्चात् तत्वशोधनं कुर्यात्। सामयिकाश्च पात्र मादाय समस्त प्रकटेत्यादि समष्टि मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्वा स्वशिरसि गुरु त्रयं, हृदये आत्मचतुष्टयं च दृष्ट्वा देवं संतर्प्य तत्वशोधनं यथोपदिष्टं कुर्युः ॥

तत्वशोधनम्

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं गं आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा ॥

३ ,, ,, विद्यातत्वं ,, ,, ॥

३ ,, ,, शिवतत्वं ,, ,, ॥

३ ,, ,, सर्वतत्वं ,, ,, ॥

पूजा समर्पण–देवतोद्वासने

श्रीं ह्रीं क्लीं साधु वाऽसाधुवा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥

३ देवनाथगुरोस्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

इति देवता वामहस्ते पूजां समर्प्य शंख मद्धृत्य देवतोपरित्रिः परिभ्राम्य, तज्जलेन हस्ते समादाय सामयिका नात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शख प्रक्षाल्य निदध्यात्। ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,

श्रीं ह्रीं क्लीं ज्ञानतोऽज्ञानतो वापियन्मयाचरितं विभो।
तवकृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥

इति क्षमाप्य, सर्वासामावरण देवातानां देवताङ्गे विलयं विभाव्य खेचरी बद्ध्वा–

श्रीं ह्रीं क्लीं हृत्पद्म कर्णिकामध्ये शक्त्या सह गजानन।
प्रविश त्वं गणेशान सर्वैरावरणैः सह ॥

इति तेजो रूपेण परिणतं देवं पूर्ववत् हृदयं नीत्वा, तत्र च मूर्ति पञ्चोपचारैः संपूज्य पुनः आत्माभिन्न-संविद्रूपेण भावयेत् ॥

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।
देशस्यं राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञांकरोतु शांति भगवान् कुलेशः ॥

नन्दन्तु साधक कुलान्यणिमाऽऽदिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरण पङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादि स्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादि शिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यन्तु ॥

इत्यादिशान्ति श्लोकान् पठित्वा-

विशेषार्घ्योद्वासनम्

मूलेन विशेषार्घ्यपात्रं आत्मस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेण आदाय आर्द्रं ज्वलन्ति इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोज-यित्वा स्वयंमपि भुक्त्वा यथा सुखं विहरेत् ॥

॥ इति शिवम् ॥

श्री गणेशपंचरत्न स्तोत्रम्

मुदाकरातमोदकं सदाविमुक्ति साधकम् ॥
कलाधराबतंसकं विलासिलोक रक्षकम् ॥
अनायकैकनायकं विनाशिते भदैत्यकम् ॥
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥१॥
नतेतरातिभीकरं नवोदितार्क भास्वरम् ॥
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ॥
सुरेश्वरं निधिश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम् ॥
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरंतरम् ॥२॥
समस्त लोक शंकरं निरस्त दैत्य कुंजरम् ॥
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ॥
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम् ॥
नमस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥३॥
अकिंचनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्ति भाजनम् ॥
पुरारिपूर्वनंदनं सुरारिगर्वचर्वणम् ॥
प्रपंचनाशभीषणं धनंजयादि भूषणम् ॥
कपोलदानवारिणं भजे पुराण वारणम् ॥४॥
अचिन्त्यरूपमंतहीनमंतरायकृन्तनं ॥
नितांतकांतिदंतकांतमंतकांतकात्मजम् ॥
हृदंतरे निरंतरं वसन्तमेव योगिनां ।
तमेकदन्तमेव संविचिंतयामि संततम् ॥५॥
महागणेश पंचरत्नमादरेण योऽन्वहम् ॥
प्रजल्पति प्रदोषके हृदि स्मरत् गणेश्वरम् ॥

अरोगताम दोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम् ।।
समाहिरायुरष्ट भूतिमभ्युमैति सोऽचिरात् ।।६।।

आरोह–क्रम

चक्र	श्वास-संख्या	समय	देव
मूलाधार	६००	४०मि.	गणेश
स्वाधिष्ठान	६०००	६घं.४०मि.	ब्रह्मा
मणिपूर	६०००	६घं.४०मि.	विष्णु
अनाहत	६०००	६घं.४०मि.	शिव
विशुद्धि	१०००	१घं.६मि.४०से.	जीव
आज्ञा	१०००	१घं.६मि.४०से.	गुरु
सहस्त्रार	१०००	१घं.६मि.४०से.	परमात्मा
योग	२१६००	२४ घंटा	

अवरोह–क्रम

चक्र	श्वास-संख्या	समय	देव
सहस्त्रार	१०००	१घं.६मि.४०से.	परमात्मा
आज्ञा	१०००	१घं.६मि.४०से.	गुरु
विशुद्धि	१०००	१घं.६मि.४०से.	जीव
अनाहत	६०००	६घं. ४०मि.	शिव
मणिपूर	६०००	६घं. ४०मि.	विष्णु
स्वाधिष्ठान	६०००	६घं. ४०मि.	ब्रह्मा
मूलाधार	६००	४०मि.	गणेश
योग	२१६००	२४ घंटा	

षट्शतं गणनाथाय ब्रह्मणे षट् सहस्त्रकम् ।
विष्णवे षट् सहस्त्रं च षट् सहस्त्रं चशम्भवे
जीवात्मने सहस्त्रं च सहस्त्रं गुरवे तथा ।
परमात्मने सहस्त्रं च जप संख्यां निवेदयेत् ।।

शक्ति साधना

'अजपा' गायत्री-शक्ति-उपासना

अजपा शक्ति मन्त्र का जप ।

इसका 'अजपा' नाम ही इसलिए पड़ा है, कि इसे जपना नहीं पड़ना, अपितु हम नित्य जो श्वासोच्छ्वास लेते हैं, उसी से यह जप बन जाता है ।

'न जप्यते नोच्चार्यते' श्वास प्रश्वास योर्गमना गमनाभ्यां सम्पद्यते इति अजपा ।'

ध्यान बिन्दुपनिषद् (६२-६३) में कहा है ।

शतानि षड् दिवारात्रं सहस्त्राण्येक विंशतिः
एतत्संख्यान्वितं मंत्रं जीवो जपति सर्वदा ।।

अर्थात् मन्त्र दिन-रात लिये जाने वाले इक्कीस हजार छः सौ श्वास प्रश्वासों में 'हंसः-हंसः' सदैव जपता रहता है ।

योग चूडामणि उपनिषद् (३१) और ध्यान बिन्दुपनिषद् (६१-७३) में लिखा है कि मनुष्य जब सांस लेता है उस समय वह 'सः' और साँस छोड़ते समय 'ह' की आवाज किया करता है । (गाढ़ निद्रा में सोते समय यह ध्वनि जोर से उठती सुनी जा सकती है ।)

यह अजपा गायत्री योगियों के लिए सदैव मोक्षप्रदा है ।

हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः हं स हं सेत्यमुं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्षदा सदा ।।

योग चूड़ामणि-उपनिषद् (३४-३५) और ध्यान बिन्दूपनिषद् (६४-६५) में इस अजपा-जप की फलश्रुति में बताया गया है कि इस सर्वोत्तम विद्या और अनुतम जप है। इससे बढ़कर पुण्य कार्य न है और न हो सकता है।

अनया सदृशी विद्या अनया सदृशो जपः
अनया सदृशं पुण्यं न भूतं न भविष्यति ।।

इस सम्बन्ध में योग बीज (१३५) और योग शिखोपनिषद् (१।१३२-३३) में एक विशेष बात बतायी गयी है कि सर्व प्रथम इस मंत्र की गुरु से दीक्षा लेनी चाहिये तदनन्तर जप करना चाहिए। इसका कारण यह बताया गया है कि वास्तव में मंत्र योग 'सोऽहम्-सोऽहम्' ही कहा गया है, किन्तु सुषुम्णा में विपरीत अर्थात् 'हंसः हंसः' ऐसा जप हुआ करता है। 'सोऽहम्' का अर्थ है, वही परब्रह्म परमात्मा में हूँ'। फिर भी 'ध्यान बिन्दू पनिषद् (६४) में कहा है कि इस प्रकार गायत्री के संकल्प मात्र से मानव पाप मुक्त हो जाता है।

अस्याः संकल्प मात्रेण नरः पापैः प्रमुच्यते ।

इससे स्पष्ट है कि गुरु से एतदर्थ प्रथम दीक्षा अनिवार्य नहीं है। यदि हो जाती है तो जप वीर्यवत्तर हो जाता है। इसी से यह भी प्रतीत होता है कि साधक 'हंसः हंसः' कहे या 'सोऽहम् सोऽहम्' उसे फल समान ही मिलता है। एक बात ध्यान देने की है कि 'हंसः, हंसः' कहने पर द्वितीय बार यह 'सोऽहम्' (हंसः (सो) हंसः) सहज ही हो जाता है।

अब इस अजपा गायत्री उपासना का प्रकार देखिये। किसी भी सत्कार्य के लिए स्नान सबसे प्राथमिक क्रिया है किन्तु अजपा गायत्री के अनुष्ठानार्थ आप मानस स्नान भी करके उसे जप सकते हैं क्योंकि पहले सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक किये गये अजपा जप का समर्पण और अग्रिम वैसे ही जप का संकल्प करने में मानस तीर्थ में स्नान ही सुविधा जनक होता है। मानसतीर्थ में स्नान शास्त्रों में प्रशस्ततम बताया गया है।

इडा भगवती गङ्गा पिङ्गला यमुना नदी ।
तयोर्मध्यगता नाड़ी सुषुम्णाख्या सरस्वती ।।
यः स्नाति मानसे तीर्थे सर्वै मुक्तोन संशय

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

संकल्प

अद्येत्यादि....... संवत्सरे.......मासि........
पक्षे.....तिथौ वासरे.....गोत्रः............नामाहं
गतदिने सूर्योदयादारभ्य अद्य सूर्योदय पर्यन्तं जाग्रदाद्य
वस्थासु श्वासोच्छवास जात षट्शताधिकैक विंशति
सहस्त्र संख्याकम जपा जपं मूलाधारादि चक्रगत गण-
पत्यादि देवता रूपि श्री परमेश्वराय निवेदयामि ॐ
तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

अद्येत्यादि........नामाऽहम् अद्यसूर्योदयादा-
रभ्यश्वस्तन सूर्योदय पर्यन्तं जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्याद्य-
वस्था सुश्वासोच्छवास रूपेण जायमानं षट्शताधिकैक
विंशति सहस्त्र संख्याकम जपाजपं श्री परमेश्वर
प्रीत्यर्थं करिष्ये ।

विनियोगः

अस्य श्री अजपा गायत्री मंत्रस्य परमहंस ऋषिः
परमात्मा देवता, अव्यक्त गायत्रीच्छन्दः, हं बीजम् सः
शक्तिः, सोऽहम् कीलकम् जपे विनियोगः ।

करन्यास

ॐ हं सां गणेशाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ हं सीं ब्रह्मणे तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ हं सूं विष्णवे मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ हं सैं शम्भवे अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ हं सौं जीवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ हं सः परमात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास

ॐ हं सां गणेशाय हृदयाय नमः ।
ॐ हं सीं ब्रह्मणे शिरसे स्वाहा ।
ॐ हं सूं विष्णवे शिखायै वषट् ।
ॐ हं सैं शम्भवेकवचाय हुम् ।
ॐ हं सौं जीवात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ हं सः परमात्मने अस्त्राय फट् ।

ध्यानं

गमागमस्थं गमनादि शून्यं
चिद्दीपदीपं तिमिरान्धनाशम् ।
पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं
नमामि हं सं परमात्मरूपम् ॥

आधारे लिङ्ग नाभौ प्रकटित हृदये तालु मूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदलदले द्वादशार्धे चतुष्के ।
वासान्ते बाल मध्ये (ड फ) कण्ठ सहिते कण्ठ देशे
स्वराणां,
हं क्षं तत्वार्थ युक्तं सकल दल गतं वर्णरूपं नमामि ।

मानस–पूजा

ॐ लं पृथ्व्यात्मकं गन्धं परमेश्वराय परिकल्पयामि।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परमेश्वराय परिकल्पयामि।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परमेश्वराय परिकल्पयामि।
ॐ रं तेजसात्मकं दीपं परमेश्वराय परिकल्पयामि।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परमेश्वराय परिकल्पयामि।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलादिं परमेश्वराय परिकल्पयामि।

षट्शतं गणनाथाय ब्रह्मणे षट् सहस्रकम्
विष्णवे षट् सहस्रं च षट् सहस्रं चशम्भवे
जीवात्मने सहस्रं च सहस्रं गुरवे तथा।
परमात्मने सहस्रं च जप संख्यां निवेदयेत्।

अजपा शक्ति-स्तुति

शिवोऽपि शक्ति युक्तश्चेत् प्रभुः कार्यायनान्यथा।
स्वमायया विनेशस्य परस्यानु भवात्मनः॥
न घटेतार्थ सम्बन्धस्ततो माया परावरा।
यस्याः प्रभावं प्रवक्तुं ब्रह्माद्या अप्यलंबलम्॥
वैष्णवीयं महामाया सुरासुर मुनि स्तुता।
शय्यां देवमयीं कृत्वा शेतेऽसावितिगीयते
सर्वे देवाश्चमुनयो विषये यां स्तुवन्ति हि।
सृष्टि स्थिति विनाशानां हेतुरेका सनातनी
विदुषोऽपि हठाच्चे तो महामोहाय यच्छति

अभक्तानां बन्ध हेतुर्भक्तानां मुक्तिदा च सा ॥
सर्वेष्वपि हि भूतेषु चेतनेत्युच्यते ततः ।
स्वात्मारामः शिवोऽप्यत्र रत्यर्थ मनु धावति ॥
माया चतुष्कपर्दा सौ युवतिर्नित्यनूतना ।
सुपेशा च धृता स्यादौ वस्तेऽस्य वयुना न्यपि ॥
भक्ति श्रद्धा धृतिह्रीः श्रीर्धीर्मेधाद्यं श्च सत्सु या ।
तृष्णालक्ष्म्याऽऽर्तिभीर्निन्द्रातन्द्रारूपै रसत्सु च ॥
क्षणे क्षणे विमुह्यन्ति वशिनोऽप्यत्र योगिनः ।
सैषानिर्वचनीयाचर्या या ह्यनादि रजा श्रुता ॥

अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः ॥ भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिः ॥ व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ स्वस्ति न इन्द्रोवृद्धश्रवाः ॥ स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः ॥ स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अथ गणेशाथर्वशीर्षव्याख्यास्यामः

ॐ नमस्ते गणपतये ॥ त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि ॥ त्वमेव केवलं कर्तासि ॥ त्वमेव केवलं धर्तासि ॥ त्वमेव केवल हर्तासि ॥ त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि ॥ त्वं साक्षादात्मासि नित्यं ॥ ऋतंवच्मि ॥ सत्यंवच्मि ॥

अवत्वं मां ।। अववक्तारं ।। अवश्रोतारं ।। अवदातारं ।। अवधातारं ।। अवानूचानमवशिष्यं ।। अवपश्चातात् ।। अवपुरस्ताम् ।। अवोत्तरात्तात् ।। अवदक्षिणात्तात् ।। अवचोर्ध्वात्तात् ।। अवाधरात्तात् ।। सर्वतोमांपाहि पाहि समंतात् ।। त्वंवाङ्‌मयस्त्वंचिन्मयः ।। त्वमानन्द मयस्त्वं ब्रह्ममय ।। त्वं सच्चिदानंदा द्वितीयोसि ।। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि ।। सर्वं जगदिदंत्वतो जायते ।। सर्वजगदिदंत्वत्तस्तिष्ठति ।। सर्वजगदिदंत्वयिलयमेष्यति ।। सर्वजगदिदंत्वयि प्रत्येति ।। त्वं भूमिरापो निलो नलो नभः ।। त्वंचत्वारिवाक् पदानि ।। त्वं गुणत्रयातीतः ।। त्वंकालत्रयातीतः ।। त्वं देह त्रयातीतः ।। त्वं मूलाधार स्थितोसि नित्यं ।। त्वं शक्ति त्रयात्मकः ।। त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यं ।। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णु स्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्तवं ब्रह्म भूर्भुव स्वरोम् ।। गणादीन् पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनंतरं ।। अनुस्वारः परतरः ।। अर्धेंदुलसितं ।। तारेणरुद्धं ।। एतत्तवमनु स्वरूपं ।। गकारः पूर्वरूपं ।। अकारो मध्यमरूपं ।। अनुस्वारश्चांत्यरूपं विंदुरूत्तररूपं ।। नादः संधानं ।। संहिता संधिः ।। सैषागणेशविद्या ।। गणक ऋषिः ।। निचृद्गायत्री छंदः ।। गणपति र्देवता ।। ॐ गं ॐ ।।

ओं एकदंताय विद्महे बक्रतुण्डाय धीमहि ।। तन्नो दन्ति प्रचोदयात् ।। एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुश

धारिणम् ।। रदंचवरदं हस्तै र्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ।। रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्त वाससं ।। रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्त पुष्पै सुपूजितम् ।। भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारण मच्युतं ।। आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृतेः पुरुषात्परं ।। एवं ध्यायति योनित्यं सयोगी योगिनांवरः ।। नमोव्रात पतये नमो गणपतये नमः प्रमथ पतये नमस्ते अस्तु लंबोदरायैक दंताय विघ्ननाशिने शिव सुताय श्री वरद मूर्तये नमः ।। एतदथर्वशीर्षयोधीते ।। सब्रह्मभूयाय कल्पते ।। ससर्वतः सुखमेधते ।। ससर्वविघ्नैर्नबाध्यते ।। संपच महापापात्प्रमुच्यते ।। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ।।

प्रातःरधीयानोरात्रि कृतं पापं नाशयति ।। सायं प्रातः प्रयुंजानोऽपापो भवति ।।

सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति ।। धर्मार्थं काममोक्षं च विंदति ।। इदमथर्वशीर्षमशिष्यायनदेयं ।।

योयदि मोहाद्दास्यति ।। सपापीयान् भवति ।।

सहस्त्रावर्तनात् यं य काममधीते ।। तं तमनेन साधयेत् ।। अनेन गणपति मभिषिचति ।। सवाग्मी भवति ।। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति ।। सविद्यावान् भवति ।। इत्यथर्वणवाक्यं ।। ब्रह्मादाचरणं विद्यात् ।। नबिभेति कदाचनेति ।। यो दूर्वां कुरैर्यजति ।। सवै श्रवणोपमो भवति ।। यो लालैर्यजति ।। सयशो-

वान्भवति ॥ समेधावान्भवति ॥ यो मोदक सहस्रेण जयति ॥ सवांछित फल मवाप्नोति ॥ यः साज्यसमिद्भिर्यजति ॥ ससर्वंलभते ससर्वंलभते ॥ अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा ॥ सूर्यवर्चस्वी भवति ॥ सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौवाजप्त्वा ॥ ससिद्ध मंत्रो भवति ॥ महा विघ्नात्प्रमुच्यते ॥ महा दोषात्प्रमुच्यते ॥ महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते ॥ महापापात्प्रमुच्यते ॥ ससर्व विद्भवति ससर्व विद्भवति ॥ य एवं वेद ॥ इत्युपनिषत् ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः० ॥१॥ स्वस्तिन इन्द्रो० ॥१॥

॥ इति गणपत्यथर्वशीर्षं समाप्तम् ॥

पुरश्चरणविधिः

एवं नित्यक्रमं प्रवर्तयन् श्यामाक्रमे वक्ष्य माणेन विधिना अष्टाविंशति सहस्रसंख्या पुरश्चरण जपः ।

प्रकृते कलियुगत्वाच्चतुर्गुणितम् । प्रथमेऽह्निसहस्रम् । ततः प्रत्यहं सहस्र संख्यञ्च कृत्वा जपदशांशेनहोमः । तद्दशांशेन तर्पणम् तदशांशेन ब्राह्मण भोजनानि च विदध्यात् । होमे द्रव्याणि च ॥

मोदकैः पृथुकैर्लाजैः सक्तुभिश्चेक्षुपर्वभिः ।
नारिकेलैस्तिलैश्शुद्धैस्सुपक्वैः कदली फलैः ॥

इत्युक्तान्यष्टौ एतेषां प्रमाणन्तु ।

मोदका अखण्डिता ग्रासमिताः पृथुकलाजसक्तवो मुष्टि परिमिताः । इक्षु प्रमाणं श्लोक एवोक्तम् । नारिकेलम् अष्टधा खण्डितम् । तिलाःचुलुक प्रमाणाः शतसंख्याका वा ।

कदली फलमल्पम् यद्य खण्डितम् । पृथु चेद्यथा रुचि खण्डितम् अमीषां द्रव्याणां मधुक्षीरघृत सिक्तानां पृथक् पृथगाहु तयो होम संख्या पिण्डाष्टम भागमिताः ३५० श्लोक पाठ मात्रेण क्रमेण भवन्ति । अष्ट द्रव्य होमात् प्रागावरण देवतानामेकैकाहुतिः प्रधान देवता याश्च दशा हुतयः ताः आज्येनैव भवन्ति । तर्पण पूर्वाङ्गन्तु चतुरावृत्ति तर्पण वदेव । इत्थं पुरश्चर्णेन सिद्ध मनुः, स्त्रात्नत्र्येगोपस्तौ च श्री क्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपरः काम्यापेक्षीचेत् श्यामाक्रमे वक्ष्य माणेन ततत्कामनु गुणेन द्रव्येणेष्ट्वा सिद्ध संकल्प्यः सुखी बिहरेत्, इति शिवम् ।

अस्य श्री महागणपति सहस्त्रनाम स्तोत्रमन्त्रस्य महागणपतये नमः शिरसि अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे श्री महागणपति देवतायै नमः हृदये गं बीजाय नमः गुह्ये हुं शक्तये नमः पादयोः स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ महागणपति प्रसाद सिद्धये जपे विनयोगाय नमः करसम्पुटे ।

ॐ गां अगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः ।।
ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा ।।

ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट् ॥
ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हूम् ॥
ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
ॐ गः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट् ॥

बीजापूर गदेक्षु कार्मुकरुजा चत्राब्जपाशोत्पल ।
ब्रीह्यग्रस्व विषाण रत्न कलश प्रद्योत्कराम्भोरूहः ॥
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया ।
विश्वोत्पत्ति विपत्ति संस्थितिकरो विघ्नेशइष्टार्थदः ॥

श्री मह गणपति सहस्रनाम स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः

व्यास उव च

कथंनाम्नां सहस्त्रं स्वं गणेश उपदिष्टवान् ॥
शिवायै तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रह तत्पर ॥१॥

ब्रह्मोवाच

देव एवं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे ।
अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल ॥२॥
मनसा स विनिर्धार्य ततस्तद्विघ्न कारणम् ।
महागणपतिं भक्त्या तमभ्यर्च्य यथाविधि ॥३॥
विघ्नप्रशमनोपायम पृच्छद पराजितः ।
संतुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम् ॥४॥

सर्वविघ्नैक हरणं सर्वकामफल प्रदम् -
ततस्तस्मै स्वकं नाम्नां सहस्त्रमिदमब्रवीत् ।।५।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्री महागणपति सहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य । महागणपतिर्ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । महागणपति देवता । गं बीजम् । हुं शक्तिः । स्वाहा कीलकम् । चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धयर्थे जपादौ विनियोगः ।

अथ न्यासः

ॐ गां अगुष्ठाभ्यां नमः ।। हृदयाय नमः ।।
ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः ।। शिरसे नमः ।।
ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः ।। शिखायै नमः ।।
ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः ।। कवचाय नमः ।।
ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।। नेत्रत्रयाय नमः ।।
ॐ करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।। अस्त्राय नमः ।।

।। इति न्यासः ।।

अथ ध्यानम्

पञ्चवक्त्रो दशभुजो भालचन्द्रः शशिप्रभः ।।
मुण्डमालः सर्पभूपो मुकुटाङ्गद भूषणः ।।
अग्न्यर्क शशिनो भाभिस्तिरस्कुर्वन्दशायुधः ।।

।। इति ध्यानम् ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः, इत्यादि ।।

श्री महागणपतिरुवाच

१ २ ३ ४
ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः ।
५ ६ ७ ८
एक दंष्ट्रो वक्रतुण्डो गजवक्त्रो महोदरः ।।१।।
९ १० ११ १२
लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननायकः ।
१३ १४ १५ १६ १७
सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः ।।२।।
१८ १९ २० २१ २२
भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः ।
२३ २४ २५ २६ २७
हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः ।।३।।
२८ २९ ३० ३१ ३२
नन्दनोऽलम्पटोऽभीरुर्मेघनादो गणञ्जयः ।
३३ ३४ ३५ ३६
विनायको विरुपाक्षो धीरशूरो वरप्रदः ।।४।।
३७ ३८ ३९
महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः ।
४० ४१ ४२ ४३
रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः ।।५।।
४४ ४५ ४६
कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः ।
४७ ४८ ४९ ५०
सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः ।।६।।

५१ ५२ ५३ ५४

अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः ।

५५ ५६ ५७ ५८ ५९

कटङ्कटो राजपुत्रः शालकः सम्मितोऽमितः ॥७॥

६० ६१ ६२ ६३

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः ।

६४ ६५ ६६ ६७

भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिरव्ययः ॥८॥

६८ ६९ ७० ७१ ७२

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्घृणिः ।

७३ ७४ ७५ ७६

कविः कवीनामृषभो ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पतिः ॥९॥

७७ ७८ ७९

ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः ।

८० ८१

हिरण्मयपुरान्तस्थः सूर्यमण्डलमध्यगः ॥१०॥

८२ ८३

कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तभित् ।

८४ ८५ ८६

उमाङ्ककेलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपालनः ॥११॥

८७ ८८ ८९ ९० ९१

किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः ।

९२ ९३

वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः ॥१२॥

९४ ९५

सद्योजातस्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत् ।

९६ ९७ ९८ ९९

दुःस्वप्नहृत्प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः ॥१३॥

१०० १०१ १०२
सुरुपः सर्बनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः ।
१०३ १०४ १०५
पिताम्बरः खण्डरदः खण्डेन्दुकृतशेखरः ॥१४॥

१०६ १०७ १०८
चित्राङ्कश्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः ।
१०९ ११० १११ ११२
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥१५॥

११३ ११४ ११५
गणाधिराजो विजयस्थिरो गजपतिध्वजी ।
११६ ११७ ११८
देवदेवः स्मरप्राणदीपको वायुकीलकः ॥१६॥

११९ १२०
विपश्चिद्वरदो नादोन्नादभिन्नबलाहकः ।
१२१ १२२ १२३
वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः ॥१७॥

१२४ १२५ १२६
इच्छाशक्तीधरो देवत्राता दैत्यविमर्दनः ।
१२७ १२८ १२९
शम्भुवक्त्रोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः ॥१८॥

१३० १३१ १३२
शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरी सुखावहः ।
१३३ १३४ १३५
उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभू स्वर्धुनीभवः ॥१९॥

१३६ १३७ १३८ १३९
यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः ।
१४० १४१ १४३ १४४
सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुपश्रुतिः ॥२०॥

१४५ १४६
ब्रह्माण्ड कुम्भश्चिद्व्योम भालः सत्थशिरोरुहः ।
१४७ १४८
जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषोऽग्न्यर्क सोमदृक् ।।२१।।

१४९ १५० १५१
गिरीन्द्रैकरदो धर्माधर्मोष्ठः सामबृंहितः ।
१५२ १५३ १५४
ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः ।।२२।।

१५५ १५६ १५७
कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः ।
१५८ १५९ १६०
नदीनद भुजः सर्पाङ्गुलीकः तारकानखः ।।२३।।

१६१ १३२
भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोत्कटः ।
१६३ १६४ १६५ १६६
व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः ।।२४।।

१६७
कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षकिन्नर मानुषः ।
१६८ १६९ १७० १७१
पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शैलोरुर्दस्रजानुकः ।।२५।।

१७२ १७३ १७४ १७५
पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयीतनुः ।
१७६ १७७
ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलो हृदयालाननिश्चलः ।।२६।।

१७८
हृत्पद्मकर्णिकाशालि वियत्केलि सरोवरः ।
१७९ १८०
सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारीनिवारितः ।।२७।।

१८१ १८२ १८३ १८४ १८५

प्रतापी कश्यपसुतो गणपो विष्टपी बली ।

१८६ १८७ १८८ १८९ १९०

यशस्वी धार्मिकः स्वोजाः प्रथमः प्रथमेश्वरः ॥२८॥

१९१ १९२

चिन्तामणिद्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः ।

१९३ १९४

रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः ॥२९॥

१९५ १९६

तीव्राशिरोधृतपदो ज्वालिनी मौलिलालितः ।

१९७ १९८

नन्दानन्दितपीठ श्रीर्भोगदा भूषितासनः ॥३०॥

१९९ २००

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः ।

२०१ २०२

तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः ॥३१॥

२६३ २०४

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः ।

२०५ २०६

लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयाश्रयः ॥३२॥

२०७ २०८ २०९

उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्ष्णिकः ।

२१० २११ २१२ २१३

पीनजङ्घः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः ॥३३॥

२१४ ११५ २१६ २१७

निम्नाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः ।

२१८ २१९ २२० २२१

पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्ब नासिकः ॥३४॥

२२२ २२३ २२४
भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः ।

२२५ २२६ २२७
ह्रस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः ॥३५॥

२२८ २२९ २३०
स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः ।

२३१ २३२
सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥३६॥

२३३ २३४
सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः ।

२३५ २३६
सर्पकक्ष्योदराबन्धः सर्पराजोत्तरीयकः ॥३७॥

२३७ २३८ २३९
रक्तो रक्ताम्बरधारो रक्तमाल्यविभूषणः ।

२४० २४१ २४२
रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठपल्लवः ॥३८॥

२४३ २४४ २४५
श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमाल्यविभूषणः ।

२४६ २४७
श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः ॥३९॥

२४८
सर्वावयवसम्पूर्ण सर्वलक्षणलक्षितः ।

२४९ २५०
सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभासमन्वितः ॥४०॥

२५१ २५२
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम् ।

२५३ २५४ २५५ २५६
सर्वदैककरः शार्ङ्गी बीजापूरी गदाधर ॥४१॥

२५७ २५८ २५९ २६०

इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणिः सरोजभृत् ।

२६१ २६२ २६३ २६४

पाशी धृतोत्पलः शालीमञ्जरी भृत्स्वदन्तभृत् ॥४२॥

२६५ २६६ २६७

कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी ।

२६८ २६९ २७०

अक्षमालाधरोज्ञान मुद्रावान्मुद्गरायुधः ॥४३॥

२७१ २७२ २७३

पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृतालिसमुद्गकः ।

२७४ २७५ २७६

मातुलिङ्गधरश्चूतकलिकाभृत्कुठारवान् ॥४४॥

२७७

पुष्करस्थस्ववर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकः ।

२७८ २७९

भारतीसुन्दरीनाथो विनायकरत्तिप्रियः ॥४५॥

२८० २८१

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मीमनोरमः ।

२८२ २८३

रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥४६॥

२८४ २८५

महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्प पश्चिमः ।

२८६ २८७

आमोदमोदजननः सप्रोमदप्रमोदनः ॥४७॥

२८८ २८९

समेधितसमृद्धिश्रीः ऋद्धि सिद्धि प्रवर्तकः ।

२९० २९१

दत्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दलिताश्रयः ॥४८॥

२९२ २९३
मदनावत्याश्रिताङ्घ्रिः कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखः ।
२९४ २९५
विघ्नसम्पल्लवोपघ्नः सेवोन्निद्रमदद्रवः ॥४९॥

२९६ २९७
विघ्नकृन्निघ्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः ।
२९८ २९९
तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥५०॥

३०० ३०१
मोहिनीमोहनो भोगदायिनी कान्ति मण्डितः ।
३०२ ३०३
कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥५१॥

३०४
वसुन्धरामदोन्नद्ध महाशंखनिधिप्रभुः ।
३०५
नमद्वसुमतीमौलि महापद्म निधिप्रभुः ॥५२॥

३०६ ३०७
सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः ।
३०८ ३०९ ३१०
ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखा पवननन्दनः ॥५३॥

३११ ३१२
अग्रप्रत्यग्रनयनो दिव्यास्त्राणां प्रयोगवित् ।
३१३
ऐरावतादि सर्वाशावारणा वरणप्रियः ॥५४॥

३१४ ३१५
वज्राद्यस्त्रपरीवारो गणचण्डसमाश्रयः ।
३१६ ३१७
जयाजयपरीवारो विजयाविजयावहः ॥५५॥

३१८ ३१९
अजितार्चित पादाब्जो नित्यानित्यावतंसितः ।

३२० ३२१
बिलासिनीकृतोल्लासः शौण्डीसौन्दर्यमण्डितः ।।५६।।

३२२ ३२३
अनन्तानन्तसुखदः सुमङ्गलसुमङ्गलः ।

३२४
इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति निषेवितः ।।५७।।

३२५ ३२६
सुभगासंश्रितपदो ललितालंलिताश्रयः ।

३२७ ३२८
कामिनीकामनः काममालिनीकेलिलालितः ।।५८।।

३२९ ३३० ३३१
सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः ।

३३२ ३३३ ३३४
गुरुगुप्तपदो बाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः ।।५९।।

३३५ ३३६ ३३७
नलिनीकामुको वामारामो ज्येष्ठा मनोरमः ।

३३८ ३३९ ३४०
रौद्रिमुद्रितपादाब्जो हुम्बीजस्तुङ्ग शक्तिकः ।।६०।।

३४१ ३४२ ३४३
विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः ।

३४४ ३४५
अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः ।।६१।।

३४६ ३४७ ३४८
उच्छिष्टगण उच्छिष्टगणेशो गणनायकः ।

३४९ ३५० ३५१
सार्वकालिकसंसिद्धि र्नित्यशैवो दिगम्बरः ।।६२।।

३५२ ३५३ ३५४ ३५५

अनपायोऽनन्तदृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः ।

३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६०

अनाविलोऽप्रतिरथोऽह्यच्युतोऽमृतमक्षरम् ॥६३॥

३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६

अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योनाधारोऽनामयोऽमलः ।

३६७ ३६८ ३६९ ३७०

अमोघसिद्धिरद्वैतमघोरोऽप्रमिताननः ॥६४॥

३७१ ३७२ ३७३

अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः ।

३७४ ३७५ ३७६

आधारपीठ आधार आधाराधेय वर्जितः ॥६५॥

३७७ ३७८ ३७९

आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः ।

३८० ३८१

इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः ॥६६॥

३८२ ३८३

इक्षुचापातिरेक श्रीरिक्षु चापनिषेवितः ।

३८४ ३८५

इन्द्रगोपसमान श्रीरिन्द्रनील समद्यु तिः ॥६७॥

३८६ ३८७

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः ।

३८८ ३८९ ३९० ३९१

इध्मप्रिये इडाभाग इराधामेन्दिराप्रियः ॥६८॥

३९२ ३९३

इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः ।

३९४ ३९५ ३९६ ३९७

ईशानमौलिरीशान ईशानसुत ईतिहा ॥६९॥

३९८ ३९९
ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः ।

४०० ४०१ ४०२
उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुण्डेरकबलिप्रियः ॥७०॥

४०३ ४०४ ४०५
उन्नतानन उत्तुङ्ग उदारत्रिदशाग्रणीः ।

४०६ ४०७ ४०८
ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः ॥७१॥

४०९ ४१०
ऋग्यजुः सामसम्भूतिर्ऋद्धिसिद्धिप्रदायक ।

४११ ४१२
ऋजुचित्तैकसुलभ ऋणत्रय विमोचकः ॥७२॥

४१३ ४१४
लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् ।

४१५ ४१६
लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः ॥७३॥

४१७ ४१८
एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः ।

४१९ ४२०
एजिताखिलदैत्य श्रीरोधिताखिलसंश्रयः ॥७४॥

४२१ ४२२ ४२३
ऐश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः ।

४२४ ४२५
ऐरम्मद समोन्मेष ऐरावतनिभाननः ॥७५॥

४२६ ४२७ ४२८ ४२९
ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः ।

४३० ४३१ ४३२
औदार्यनिधिरौद्धत्यधुर्य औन्नत्यनिस्वनः ॥७६॥

४३३ ४३४

अंकुशः सुरनागानामकुंशः सुरविद्विषाम् ।

४३५

अः समस्त विसर्गान्त पदेषु परिकीर्तितः ।।७७।।

४३६ ४३७ ४३८ ४३९

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः ।

४४० ४४१ ४४२

कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः ।।७८।।

४४३ ४४४

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्ड गणनायकः ।

४४५ ४४६ ४४७ ४४८

कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत् ।।७९।।

४४९ ४५० ४५१ ४५२

खर्वः खड्गप्रियः खड्गखान्तान्तस्थः खनिर्मलः ।

४५३ ४५४ ४५५

खल्वाट शृङ्गनिलयः खट्वाङ्गी खदुरासदः ।।८०।।

४५६ ४५७ ४५८ ४५९

गुणाढ्यो गहनो गस्थो गद्यपद्यसुधार्णवः ।

४६० ४६१ ४६२

गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः ।।८१।।

४६३ ४६४ ४६५

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरुपितः ।

४६६ ४६७ ४६८ ४६९

गुहाशयो गुहाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरोर्गुरुः ।।८२।।

४७० ४७१ ४७२

घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः ।

४७३ ४७४ ४७५ ४७६

चण्डश्चण्डेश्वर सुहृच्चण्डीशश्चण्डविक्रमः ।।८३।।

४७७ ४७८

चराचरपतिश्चिन्तामणिचर्वणलालसः ।

४७९ ४८० ४८१ ४८२

छन्दश्छन्दोवपुश्छन्दोदुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः ॥८४॥

४८३ ४८४ ४८५ ४८६

जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः ।

४८७ ४८८ ४८९ ४९०

जपो जपपरो जप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः ॥८५॥

४९१

झलभझलोल्लसद्दान झङ्कारिभ्रमराकुलः ।

४९२ ४९३

टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारिमणिनूपुरः ॥८६॥

४९४

ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रैकसिद्धिदः ।

४९५ ४९६ ४९७ ४९८

डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः ॥८७॥

४९९ ५०० ५०१

ढक्कानिनादमुदितो ढौको ढुण्ढिविनायकः ।

५०२ ५०३

तत्वानां परमं तत्वं तत्वंपदनिरूपतिः ॥८८॥

५०४ ५०५ ५०६

तारकान्तरसंस्थ ानस्तारकस्तारकान्तकः ।

५०७ ५०८ ५०९ ५१०

स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत् ॥८९॥

५११ ५१२ ५१३

दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानव मोहनः ।

५१४ ५१५ ५१६ ५१७

दयावान्दिब्य विभवो दण्डभृद्दण्डनायकः ॥९०॥

५१८ ५१९
दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः ।
५२० ५२१
दंष्ट्रालग्नद्विपघये देवार्थनृगजाकृतिः ।।९१।।

५२२ ५२३ ५२४ ५२५
धन धान्यपतिर्धन्यो धनदो धरणीधरः ।
५२६ ५२७ ५२८ ५२९
ध्यानैक प्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः ।।९२।।

५३० ५३१ ५३२ ५३३
नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्य प्रतिष्ठितः ।
५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८
निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्योनिरामय ।।९३।।

५३९ ५४० ५४१ ५४२
पर व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम् ।
५४३ ५४४ ५४५
परात्परः पशुपतिः पशुपाश विमोचकः ।।९४।।

५४६ ५४७ ५४८
पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणबुरुषोतमः ।
५४९ ५५०
पद्मप्रसन्ननयनः प्रणताज्ञानमोचनः ।।९५।।

५५१ ५५२
प्रमाणप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः ।
५५३ ५५४ ५५५ ५५६
फलहस्तः फणिपतिः फेत्कार फाणितप्रियः ।।९६।।

५५७ ५५८
बाणार्चिताङ्घ्रियुगलोबाल केलिकुतूहली ।
५५९ ५६० ५६१ ५६२
ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः ।।९७।।

५६३ ५६४ ५६५ ५६६
बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः ।

५६७ ५६८
बृहन्नादाग्रचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः ॥९८॥

५६९ ५७० ५७१ ५७२
भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः ।

५७३ ५७४ ५७५ ५७६
भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूति भूषणः ॥९९॥

५७७ ५७८ ५७९ ५८०
भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्यगोचरः ।

५८१ ५८२ ५८३ ५८४
मन्त्रो मन्त्रपतिर्मन्त्री मदमत्त मनोरमः ॥१००॥

५८५ ५८६ ५८७
मेखलावान्मन्दगतिर्मतिमत्कमलेक्षणः ।

५८८ ५८९ ५९० ५९१
महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः ॥१०१॥

५९२ ५९३ ५९४ ५९५
यज्ञों यज्ञपतिर्यज्ञ गोप्ता यज्ञ फलप्रदः ।

५९६ ५९७ ५९८ ५९९
यशस्करों योगगम्यों याज्ञिकों याजकप्रियः ॥१०२॥

६० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४
रसों रसप्रियों रस्यों रञ्जकों रावणार्चितः ।

६०५ ६०६ ६०७
रक्षोरक्षाकरों रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः ॥१०३॥

६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२
लक्ष्य लक्ष्यप्रदों लक्ष्यों लयस्थोलड्डुकप्रियः ।

६१३ ६१४ ६१५
लानप्रियों लास्यपरों लाभकृल्लोकविश्रुतः ॥१०४॥

६१६ ६१७ ६१८ ६१९
वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः ।
६२० ६२१ ६२२ ६२३
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधता विश्वतोमुखः ॥१०५॥

६२४ ६२५ ५२६
वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रविवारणः ।
६२७ ६२८
विश्वबन्धन विष्कम्भाधारो विश्वेश्वर प्रभुः ॥१०६॥

६२९ ६३० ६३१
शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्ति गणेश्वरः ।
६३२ ६३३ ६३४ ६३५
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शिखरीश्वरः ॥१०७॥

६३६ ६३७ ६३८
षडृतुकुसुमस्त्रग्वी षडाधारः षडक्षरः ।
६३९ ६४० ६४१
संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषज भेषजम् ॥१०८॥

६४२ ६४३
सृष्टि स्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदनः ।
६४४ ६४५
सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्व्यक्तिदायकः ॥१०९॥

६४६ ६४७ ६४८ ६४९
साक्षी समुद्रमथनः स्वसंवेद्यः स्वदक्षिणः ।
६५० ६५१ ६५२ ६५३
स्वतन्त्रः सत्यसंकल्पः सामगानरतः सुखी ॥११०॥

६५४ ६५५ ६५६ ६५७
हंसो हस्तिपिशाचीशो हवन हव्यकव्यभुक् ।
६५८ ६५९ ६६० ६६१
हव्यो हुतप्रियो हर्षो हृल्लेखामन्त्रमध्यगः ॥१११॥

६६२ ६६३ ६६४
क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमापर परायणं ।

६६५ ६६६ ६६७
क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः ॥११२॥

६६८ ६६९ ६७० ६७१
धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्धनः ।

६७२ ६७३ ६७४
विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्ति फलप्रद ॥११३॥

६७५ ६७६ ६७७
आभिरुप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः ।

६७८ ६७९ ६८०
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ॥११४॥

६८१ ६८२ ६८३ ६८४
मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ।

६८५ ६८६
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥११५॥

६८७ ६८८
पराभिचारशमनो दुःखभञ्जनकारकः ।

६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५
लवस्त्रुटिः कला काष्ठा निभेषस्तत्परः क्षणः ॥११६॥

६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१
घटी मुहूर्त प्रहरो दिबा नक्त महर्निशम् ।

७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८
पक्षो मासोऽयन वर्षं युगं कल्पो महालयः ॥११७॥

७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५
राशिस्तारातिथिर्योगो वारः करणमंशकम् ।

७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१
लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः ॥११८॥

७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९
राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः ।
७३० ७३१ ७३२ ७३३
कालः सृष्टि स्थितिर्विश्वंस्थावरं जङ्गमं च यत् ॥११९॥
७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१
भूरापोऽग्निर्मरु द्व्योमाहंकृतिः प्रकृतिः पुमान् ।
७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८
ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः ॥१२०॥
७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४
त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षांसि किन्नराः ।
७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६०
साद्धया विद्याधरा भूता मनुष्या पशवः खगाः ॥१२१॥
७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६
समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः ।
७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२
साङ्ख्यं पातञ्जलं योगः पुराणानिश्रुतिः स्मृतिः॥१२२।
७७३ ७७४ ७७५ ७७६
वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्याय विस्तरः ।
७७७ ७७८ ७७९ ७८०
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वं काव्यनाटकम् ॥१२३॥
७८१ ७८२ ७८३ ७८४
वैखानसं भागवतं सात्वतं पाञ्चरात्रकम् ।
७८५ ७८६ ७८७ ७८८
शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम् ॥१२४॥
७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३
शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हत संहिता ।
७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९
सदसद्व्यक्तमव्यक्त सचेतनमचेतनम् ॥१२५॥

८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७
बन्धो मोक्षः सुखं भोगोऽयोगः सत्यमणुर्महान् ।
८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६
स्वस्ति हुंफट् स्वधा स्वाहा श्रौषड्वौषड्वषण्णमः ।।१२६।
८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३
ज्ञानं विज्ञान मानन्दो बोधः संविच्छमो यमः ।
८२४ ८२५ ८२६
एक एकाक्षराधार एकाक्षर परायणः ।।१२७।।
८२७ ८२८ ८२९
एकाग्रधीरेकवीर एकाऽनेकस्वरूपधृक् ।
८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४
द्विरूपो द्विभुजो द्व्यक्षो द्विरदो द्विपरक्षकः ।।१२८।।
८३५ ८३६ ८३७ ८३८
द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वातीतो द्वयातिगः ।
८३९ ८४० ८४१
त्रिधामा त्रिकरस्त्रेतात्रिवर्ग फलदायकः ।।१२९।।
८४२ ८४३ ८४४ ८४५
त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः ।
८४६ ८४७ ८४८ ८४९
चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्मुखः ।।१३०।।
८५० ७५१
चतुर्विधोपायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ।
८५२
चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्ति प्रवर्त्तकः ।।१३१।।
८५३ ८५४
चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथि सम्भवः ।
८५५ ८५६ ८५७ ८५८
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्यकृत्
।।१३२।।

८५९ ८६० ८६१
पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः ।

८६२ ८६३ ८६४
पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवभावितः ॥१३३॥

८६५ ८६६
पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चावरणवारितः ।

८६७ ८६८ ८६९
पञ्चभक्ष्यप्रियः पञ्चबाणः पञ्चशिवात्मकः ॥१३४॥

८७० ८७१ ८७२
षट्कोणपीठः षट्चक्रधामा षड्ग्रन्थिभेदकः ।

८७३ ८७४
षडध्वध्वान्तविध्वंसी षडंगुलमहाह्रदः ॥१३५॥

८७५ ८७६ ८७७
षण्मुखः षण्डमुखभ्राता षट्शक्ति परिवारितः ।

८७८ ८७९
षड्वैरिवर्ग विध्वंसी षडूर्मिभयभञ्जनः ॥१३६॥

८८० ८८१ ८८२
षट्तर्कदूरः षट्कर्मनिरतः षड्रसाश्रयः ।

८८३ ८८४
सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥१३७॥

८८५ ८८६
सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः ।

८८७ ८८८
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणमण्डितः ॥१३८॥

८८९ ८९० ८९१
सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोता सप्तस्वराश्रयः ।

८९२ ८९३
सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः ॥१३९॥

८९४ ८९५
सप्तच्छन्दोमोदमदः सप्तच्छन्दोमुखप्रभुः ।
८९६ ८९७
अष्टमूर्तिध्येय मूर्तिरष्ट प्रकृतिकारणम् ॥१४०॥
८९८ ८९९
अष्टाङ्गयोगफलभूरष्ट पत्राम्बुजासनः ।
९०० ९०१
अष्टशक्तिसमृद्ध श्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ॥१४१॥
९०२ ९०३
अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसभावृतः ।
९०४ ९०५ ९०६
अष्ट भैरवसेव्योऽष्ट वसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत् ॥१४२॥
९०७ ९०८
अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिरष्ट द्रव्यहविः प्रियः ।
९०९ ९१०
नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासिता ॥१४३॥
९११ ९१२
नवद्वारपुराधारो नवाधारनिकेतनः ।
९१३ ९१४
नवनारायणस्तुत्यो नवदुर्गा निषेवितः ॥१४४॥
९१५ ९१६
नवनाथमहानाथो नवनागविभूषणः ।
९१७ ९१८
नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्तिशिरोद्धृतः ॥१४५॥
९१९ ९२० ९२१
दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः ।
९२२ ९२३ ९२४
दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः ॥१४६॥

६२५ ६२६
दशाक्षरमहामन्त्रो दशांशाव्यापिविग्रहः ।
६२७ ६२८
एकादशादिभी रुद्रैः स्तुत एकादशाक्षरः ॥१४७॥

६२९ ६३०
द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डो द्वादशान्त निकेतनः ।
६३१
त्रयोदशभिदाभिन्नविश्वे देवाधिदैवतम् ॥१४८॥

६३२ ६३३
चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः ।
६३४ ६३५
चतुर्दशादिविद्याढ्यश्चतुर्दशगजगत्प्रभुः ॥१४९॥

६३६ ६३७
सामपञ्चदशः पंचदशीशीतशुांनिर्मलः ।
६३८ ६३९
षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः ॥१५०॥

६४० ६४१
षोडशान्त पदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः ।
६४२ ६४३ ६४४
कलासप्तदशी सप्तदशः सप्तदशाक्षरः ॥१५१॥

६४५ ६४६
अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ।
६४७ ६४८
अष्टादशौषधी सृष्टि रष्टदश विधिस्मृतः ॥१५२॥

६४९
अष्टादशलिपि व्यष्टि समाष्टिज्ञानकोविदः ।
६५० ६५१
एकविंशः पुमानेकविंशत्यङ्गुलिपल्लवः ॥१५३॥

९५२ ९५३
चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशाख्यपूरुषः ।

९५४ ९५५
सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशति योगकृत् ॥१५४॥

९५६ ९५७
द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्लादः ।

९५८ ९५९
षट्त्रिंशत्तत्त्वसंभूतिरष्टात्रिंशत्कलातनुः ॥१५५॥

९६०
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ।

९६१ ९६२
पञ्चाशदक्षर श्रेणी पंचाशद्रुद्रविग्रहः ॥१५६॥

९६३ ९६४
पंचाशद्विष्णुशक्तीशः पंचाशन्मातृकालयः ।

९६५ ९६६
द्विपंचाशद्वपुः श्रेणी त्रिषष्टचक्षरसंश्रयः ॥१५७॥

९६७ ९६८
चतुःषष्ट्यर्णनिर्णेता चतुःषष्टिकलानिधिः ।

९६९
चतुः षष्टिमहासिद्ध योगिनीवृन्दवन्दितः ॥१५८॥

९७०
अष्टपष्टि महातीर्थक्षेत्रभैरवभावनः ।

९७१ ९७२
चतुर्नवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्यधिक प्रभुः ॥१५९॥

९७३ ९७४ ९७५
शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः ।

९७६ ९७७ ९७८
शतानीकः शतमखः शतधारावरायुधः ॥१६०॥

९७९ ९८०
सहस्त्रपत्रनिलयः सहस्त्रफणभूषणः ।

९८१ ९८२ ९८३
सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ॥१६१॥

९८४ ९८५
सहस्त्रनामसंस्तुत्यः सहस्त्राक्षवलापहः ।

९८६
दशसाहस्त्रफणभृत्फणि राजकृतासनः ॥१६२॥

९८७
अष्टाशीति सहस्त्राद्यमहर्षि स्तोत्रयन्त्रितः ।

९८८ ९८९
लक्षाधीशप्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः ॥१६३॥

९९० ९९१
चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशितः ।

९९२
चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देह संस्थितः ॥१६४॥

९९३ ९९४
कोटिसूर्य प्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः ।

९९५
शिवाभवाध्युष्ट कोटि विनायक धुरन्धरः ॥१६५॥

९९६
सप्तकोटि महामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः ।

९९७
त्रयस्त्रिंशत्कोटि सुरश्रेणीप्रणतपादुकः ॥१६६॥

९९८ ९९९ १०००
अनन्तनामानन्तश्रीरनन्ताऽनन्तसौख्यदः ॐ ॥१६७॥

पुनः ऋष्यादिक न्यासं उत्तरन्यासंमानस पूजां च कृत इति वैनायकं नाम्नां सहस्त्रमिदमीरितम् ॥

इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठति प्रत्यहं नरः ॥१॥
करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम् ।
आयुरौरोग्यमैश्वर्यं धैर्यं शौर्यं बलं यशः ॥२॥
मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमतिरुपता ।
सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशालिता ॥३॥
जगन्संयमनं विश्वसवादो वादपाटवम् ।
सभापाण्डित्य मौदार्यं गम्भीर्यं ब्रह्मवर्कसम् ॥४॥
औन्नत्यंच कुलं शीलं प्रतापोवीर्यमार्यता ।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्य विश्वातिशायिता ॥५॥
धन धान्याभिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत् ।
वश्यं चतुर्विधं नृणां जपादस्य प्रजायते ॥६॥
राज्ञा राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिणः ।
जप्यते यस्य वश्यार्थं स दासस्तस्य जायते ॥७॥
धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम् ।
शाकिनी डाकिनी रक्षोयक्षोरग भयापहम् ॥८॥
साम्राज्य सुखदं चैव समस्तरिपु मर्दनम् ।
समस्त कलहध्वंसिदग्धवीजप्ररोहणम् ॥९॥
दुःस्वप्ननाशनं क्रुद्धस्वामिचित प्रसादनम् ।
षट्कर्माष्ट महासिद्धि त्रिकालज्ञान साधनम् ॥१०॥
परकृत्या प्रशमनं परचक्रविमर्दनम् ।
सङ्ग्रामरङ्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम् ॥११॥
सर्ववन्ध्यात्वदोषघ्नं गर्भरक्षैककारणम् ।
पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम् ॥१२॥

देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च ।
न तद्गृहं जहाति श्रीर्यत्रायं पठयते स्तवः ॥१३॥
क्षयकुष्ठ प्रमेहार्शभगन्दरविषूचिकाः ।
गुल्मंप्लीहानमश्मानमतिसारं महोदरम् ॥१४॥
कासं श्वासं गुदावर्तं शूलं शोफादिसंभवम् ।
शिरोरोगं वमिं हिक्कां गण्डमालामरोचकम् । १५॥
वातपित्तकफद्वन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् ।
आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकहिकादिकम् ॥१६॥
इत्याद्युक्त मनुक्तं वा रोगं दोषादि सम्भवम् ।
सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपः ॥१७॥
सकृत्पाठेन संसिद्धः स्त्रीशूद्रपतितैरपि ।
सहस्त्रनाममन्त्रोयं जपितव्यः शुभाप्तये ॥१८॥
महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम् ।
इच्छया सकलान्भोगाननुभूयेह पार्थिवान् ॥१९॥
मनोरथ फलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ।
चन्द्रेन्द्र भास्करोपेन्द्र ब्रह्मशर्वा दिसद्मसु ॥२०॥
कामरूपः कामगतिः कामतो बिचरन्निह ।
भुक्त्वा यथेप्सिता भोगानभीष्टान्सहबन्धभिः ॥२१॥
गणेशानुचरो भूत्वा महागणपतेः प्रियः ।
नन्दीश्वरादिसानन्दी नन्दितः सकलैर्गणैः ॥२२॥
शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः ।
शिवभक्तः पूणकामो गणेश्वरवरात्पुनः ॥२३॥

जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते ।
निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः ॥२४॥
योगसिद्धि परा प्राप्य ज्ञान वैराग्य संस्थितः ।
निरन्तरोदि.ानन्दे परमानन्दसंविदि ॥२५॥
विश्वोतीर्णे परेपारे पुनरावृत्तिर्वजिते ।
लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृतः ॥२६॥
यो नामभिर्हुनेदेतैरर्चयेत्पूजयेन्नरः ।
राजानोवश्यतां यान्ति रिपवो यान्तिदासताम् ॥२७॥
मन्त्राः सिध्यन्ति सर्वेपि सुलभास्तस्यसिद्धयः ।
मूलमन्त्रादपि स्तोत्रमिदं प्रियतरं मम ॥२८॥
नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि ।
दूर्वाभिर्नामभिः पूजा तर्पणं विधिवच्चरेत् ॥२९॥
अष्ट द्रव्यैर्विशेषेण जुहुयाद्भक्ति संयुतः ।
तस्येप्सिता सर्वाणि सिध्यन्त्यत्र न संशयः ॥३०॥
इदं प्रजप्तं पठितं पाठितं श्रावितं श्रुतम् ॥३१॥
व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिनन्दितम् ।
इहामुत्र च सर्वेषां विश्वैश्वर्यं प्रदायकम् ॥३२॥
स्वच्छन्दचारिणाप्येष येनायन्धार्यते स्तवः ।
स रक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्युष्ट कोटिभिः ॥३३॥
पुस्तकलिखितं यत्र गृह स्तोत्रं प्रपूजयेत् ।
तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधते निरन्तरम् ॥३४॥
दानैरशेषैरखिलैव्रतैश्चातीर्थैरशेषैरखिलैर्मखैश्च ।
नतत्फलं विन्दति यद्गणेशसहस्रनाम्नां स्मरणेन सद्यः ।

एतन्नाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने ।
सायं मध्यं दिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततंवाजनोयः ।३५।
सस्यादैश्वर्यं धुर्यः प्रभवति च सतां कीर्तिमुच्चैस्तनोति ।
प्रत्यूहंहन्तिविश्वंवशयतिसुचिरंवर्धतेपुत्रपोत्रैः ॥३६॥

अकिञ्चनोपि मत्प्राप्तिचिन्तको नियताशनः ।
जपेत्तु चतुरो मासान् गणेशार्चनतत्परः ॥३७॥

दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि ।
लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥३८॥

आयुष्यं वीतरोगं कुलमतिविमलं संपदश्चार्तदानाः ।
कीर्तिर्नित्यावदाताभणितिरभिनवाकान्तिरव्याधि-
भव्यो पुत्राः सन्तः कलत्रंगुणवदभिमतंयद्यदेतच्चसत्यं ।
नित्यंयः स्तोत्रमेतत्पठतिगणपतेस्तस्यहस्तेसमस्तम् ॥३९॥

ॐ गणञ्जयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः ।
महागणपतिर्लक्षप्रदः क्षिप्रप्रसादनः ॥४०॥

अमोघसिद्धिरमृतो मन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः ।
सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदः शिवः ॥४१॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढि विनायकः ।
मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान् ॥४२॥

यः स्तौति मद्गतमनो मदाराधनतत्परः ।
स्तुतो नाम्नां सहस्रेण तेनहंनात्र संशयः ॥४३॥

नमोनमः सुखरपूजिताङ्घ्रये,
नमो नमो निरूपममङ्गलात्मने ॥

नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये,
नमो नमः करिकलभाननाय ते ।।४४।।
।। इति श्री गणेशपुराणे उपासना खण्डे महागणपति
प्रोक्त गणेश सहस्त्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्री महागणपतिसहस्त्र नामावलिः

अद्येत्यादिपूर्वोच्चरित एवं गुणा विशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं मम ऐहिकामुष्मिक सकल सिद्धिषयोप भोग प्राप्त्यर्थं च सहस्त्रनामभि सहस्त्रदूर्वा पूजन कल्पोक्त फल प्राप्ति दुबारा ऋद्धिसिद्धि सहित श्री महागणपति प्रीत्यर्थं सहस्त्र नामभिः सहस्त्र दूर्वाङ्कुरैः वा शमी पत्रैः वा मन्दार पुष्पैः पूजनमहं करिष्ये ।

अथ कीलम्

ॐ अस्य श्रीमहागणपति सहस्त्रनाम स्तोत्र मंत्रस्य । महागणपतिः ऋषिः । अनुष्टुप छन्दः । गं बीजं हुं शक्तिः स्वाहा ।। इति कीलम् ।।

अथ न्यासः

ॐ गां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।। हृदयाय नमः ।।
ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः ।। शिरसे नमः ।।
ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः ।। शिखायै नमः ।।

ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः ।। कवचाय नमः ।।
ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।। नेत्रत्रयाय नमः ।।
ॐ गः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।। अस्त्राय नमः ।।

।। इति न्यासः ।।

अथ ध्यानम्

पञ्चवक्त्रो दशभुजो भालचन्द्रः शशिप्रभः ।।
मुण्डमालः सर्पभूषो मुकुटाङ्गद भूषणः ।।
अग्न्यर्कशशिनोभाभिस्तिरस्कुर्वन् दशायुधः ।।

।। इति ध्यानम् ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य

१. ॐ गणेश्वराय नमः । २. ॐ गणक्रीडाय नमः ।
३. ॐ गणनाथाय नमः । ४. ॐ गणाधिपाय नमः ।
५. ॐ एक दंष्ट्राय नमः । ६. ॐ वक्रतुण्डाय नमः ।
७. ॐ गजवक्त्राय नमः । ८. ॐ महोदराय नमः ।
९. ॐ लम्बोदराय नमः । १०. ॐ धूम्रवर्णाय नमः ।
११. ॐ विकटाय नमः । १२. ॐ विघ्नायकाय नमः ।
१३. ॐ सुमुखाय नमः । १४. ॐ दुर्मुखाय नमः ।
१५. ॐ बुद्धाय नमः । १६. ॐ विघ्नराजाय नमः ।
१७. ॐ गजाननाय नमः । १८. ॐ भीमाय नमः ।
१९. ॐ प्रमोदाय नमः । २०. ॐ आमोदाय नमः ।
२१. ॐ सुरानन्दाय नमः । २२. ॐ मदोत्कटाय नमः ।

२३. ॐ हेरम्बाय नमः । २४. ॐ शम्बराय नमः ।
२५. ॐ शम्भवे नमः । २६. ॐ लम्बकर्णाय नमः ।
२७. ॐ महाबलाय नमः । २८. ॐ नन्दनाय नमः ।
२९. ॐ अलम्पटाय नमः । ३०. ॐ अभीखे नमः ।
३१. ॐ मेघनादाय नमः । ३२. ॐ गणञ्जयाय नमः ।
३३. ॐ विनायकाय नम. । ३४. ॐ विरुपाक्षाय नमः ।
३५. ॐ धीरशूराय नमः । ३६. ॐ वरप्रदाय नमः ।
३७. ॐ महागणपतये नमः । ३८. ॐ बुद्धिप्रियाय नमः ।
३९. ॐ क्षिप्रप्रसादनाय नमः । ४०. ॐ रुद्रप्रियाय नमः ।
४१. ॐ गणाध्यक्षाय नमः । ४२. ॐ उमापुत्राय नमः ।
४३. ॐ अघनाशनाय नमः । ४४. ॐ कुमारगुरवे नमः ।
४५. ॐ ईशानपुत्राय नमः । ४६. ॐ मूषकवाहनासनमः
४७. ॐ सिद्धिप्रियाय नमः । ४८. ॐ सिद्धिपतये नमः ।
४९. ॐ सिद्धाय नमः । ५०. ॐ सिद्धि विनायकाय
नमः । ५१. अविघ्नाय नमः । ५२. ॐ लुम्बुखे नमः ।
५३. ॐ सिंह वाहनाय नमः । ५४. ॐ मोहिनी प्रियाय
नमः । ५५. ॐ कटङ्कटाय नमः । ५६. ॐ राजपुत्राय
नमः । ५७. ॐ शालकाय नमः । ५८. ॐ सम्मिताय
नमः । ५९. ॐ अमिताय नमः । ६०. ॐ कूष्माण्ड
साम सम्भूतये नमः । ६१. ॐ दुर्जयाय नमः । ६२. ॐ
धूर्जयाय नमः । ६३. ॐ जयाय नमः । ६४. ॐ भूपतये
नमः । ६५. ॐ भुवनपतये नमः । ६६. ॐ भूतानाम्पतये
नमः । ६७. ॐ अव्ययाय नमः । ६८. ॐ विश्वकर्त्रे नमः ।

६९. ॐ विश्वमुखाय नमः। ७०. ॐ विश्वरूपाय नमः। ७१. ॐ निधये नमः। ७२. ॐ घृणये नमः। ७३. ॐ कवये नमः। ७४. ॐ कवीनामृषभाय नमः। ७५. ॐ ब्रह्मणां पतये नमः। ७६. ॐ ब्रह्मण स्पतये नमः। ७७. ॐ ज्येष्ठ राजाय नमः। ७८. ॐ निधिपतये नमः। ७९. प्रियपतिप्रियाय नमः।८०. ॐ हिरण्मय पुरान्तस्थाय नमः। ८१. ॐ सूर्यमण्डलमध्यगाय नमः। ८२. ॐकराहतिध्वस्त सिन्धु सलिलाय नमः। ८३. ॐ पूषदन्तभिदे नमः। ८४. ॐ उमाङ्ककेलिकुतुकिने नमः। ८५. ॐ मुक्तिदाय नमः। ८६. ॐ कुलपालनाय नमः। ८७. ॐ किरीटिने नमः। ८८. ॐ कुण्डलिने नमः। ८९. ॐ हारिणे नमः। ९०. ॐ वनमालिने नमः। ९१. ॐ मनोमयाय नमः। ९२. ॐ वैमुख्यहतदैत्यश्रिये नमः। ९३. ॐ पादाहतिजितक्षितये नमः। ९४. ॐ सद्योजातस्वर्ण मुञ्जमेखलिने नमः। ९५. ॐ दुर्निमितहृते नमः। ९६. ॐ दुःस्वप्नहृते नमः। ९७. ॐ प्रसहनाय नमः। ९८. ॐ गुणिने नमः। ९९. ॐ नाद प्रतिष्ठिताय नमः। १००. ॐ सुरूपाय नमः। १०१. ॐ सर्वनेत्राधिवासाय नमः। १०२. ॐ वीरासनाश्रयाय नमः। १०३. ॐ पीताम्बराय नमः। १०४. ॐ खण्डरदाय नमः। १०५. ॐ खण्डेन्दुकृतशेखराय नमः। १०६. ॐ चित्राङ्कश्याम दशनाय नमः। १०७. ॐ भालचन्द्राय नमः। १०८. ॐ चतुर्भुजाय नमः। १०९. ॐ योगाधिपाय नमः।

११०. ॐ तारकस्थाय नमः । १११. ॐ पुरुषाय नमः । ११२. ॐ गजगर्णकाय नमः । ११३. ॐ गणाधिराजाय नमः। ११४. ॐ विजयस्थिराय नमः । ११५. ॐ गजपतिर्ध्वजिने नमः । ११६. ॐ देवदेवाय नमः । ११७. ॐ स्मरप्राण दीपकाय नमः । ११८. ॐ वायु कीलकाय नमः । ११९. ॐ विपश्चिद्वरदाय नमः । १२०. ॐ नादोन्नादभिन्न बलाहकाय नमः । १२१. ॐ वराहरदनाय नमः । १२२. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः । १२३. ॐ व्याघ्राजिनाम्बराय नमः । १२४. ॐ इच्छा शक्ति धराय नमः । १२५. ॐ देवत्रात्रे नमः । १२६. ॐ दैत्यविमर्दनाय नमः । १२७. शम्भुवक्त्रोद्भवाय नमः । १२८. शम्भुकोपघ्ने नमः । १२९. ॐ शम्भु-हास्यभुवे नमः । १३०. शम्भुतेजसे नमः । १३१. ॐ शिवाशोकहारिणे नमः । १३२. ॐ गौरी सुखावहाय नमः । १३३. ॐ उमाङ्ग मलजाय नमः । १३४. ॐ गौरीतेजोभवे नमः । १३५. ॐ स्वर्धुनीभवाय नमः । १३६. ॐ यज्ञकायाय नमः । १३७. ॐ महानादाय नमः। १३८. ॐ गिरिवर्ष्मणे नमः । १३९. ॐ शुभाननाय नमः । १४०. ॐ सर्वात्मने नमः । १४१. ॐ सर्व देवात्मने नमः । १४२. ॐ ब्रह्ममूर्ध्ने नमः । १४३. ॐ ककुप् श्रुतये नमः । १४४. ॐ ब्रह्माण्डकुम्भाय नमः । १४५. ॐ चिद्व्योमभालाय नमः । १४६. ॐ सत्यशिरो-रुहाय नमः । १४७. ॐ जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषाय

नमः । १४८. ॐ अग्न्यर्क सोमदृशे नमः । १४९. ॐ गिरिन्द्रैकरदाय नमः: । १५०. ॐ धर्माधर्मोष्ठाय नमः। १५१. ॐ सामबृंहिताय नमः । १५२. ॐ ग्रहर्क्षदशनाय नमः । १५३. ॐ वाणीजिह्वाय नमः । १५४. ॐ वासवनासिकाय नमः । १५५ ॐ कुलाचलांसाय नमः । १५६. ॐ सोमार्कघण्टाय नमः । १५७. ॐ रुद्रशिरोधराय नमः । १५८. ॐ नदीनदभुजाय नमः । १५९. ॐ सर्पांगुलीकाय नमः । १६०. ॐ तारकानखाय नमः । १६१. ॐ भ्रू मध्य संस्थित कराय नमः । १६२. ॐ ब्रह्मविद्यामदोत्कटाय नमः । १६३. ॐ व्योमनाभये नमः । १६४. ॐ श्री हृदयाय नमः । १६५. ॐ मेरु पृष्ठाय नमः । १६६. ॐ अर्णवोदराय नमः । १६७. ॐ कुक्षिस्थयक्ष गन्धर्व रक्षः किन्नर मानुषाय नमः । १६८. ॐ पृथ्वीकटये नमः । १६९. ॐ सृष्टि लिंगाय नमः । १७०. ॐ शैलोरवे नमः । १७१. ॐ दस्त्रजानुकाय नमः । १७२. ॐ पातालजङ्घाय नमः । १७३. ॐ मुनिपदे नमः । १७४. ॐ कालांगुष्ठाय नमः । १७५. ॐ त्रयीतनवे नमः । १७६. ॐ ज्योति मण्डललाङ्गूलाय नमः । १७७. हृदयालान निश्चलाय नमः । १७८. ॐहृत्पद्मकर्णिका शालिवियत् केलिसरोवराय नमः । १७९. ॐ सद्भक्त ध्यान निगडाय नमः । १८०. ॐ पूजावारी निवारिताय नमः । १८१, ॐ प्रतापिने नमः । १८२. ॐ कश्यप सुताय नम । १८३. ॐ गणपाय नमः । १८४. ॐ

विष्टपिने नमः । १८५. ॐ बलिने नमः । १८६. ॐ यशस्विने नमः । १८७. ॐ धार्मिकाय नमः । १८८. ॐ स्वोजसे नमः । १८९. ॐ प्रथमाय नमः । १९०. ॐ प्रथमेश्वराय नमः । १९१. ॐ चिन्तामणि द्वीपपतये नमः । १९२. ॐ कल्पद्रुमवनालयाय नमः । १९३. ॐ रत्नमण्डपमध्यस्थाय नमः । १९४. ॐ रत्नसिंहासना-श्रयाय नमः । १९५. तीव्राशिरोधृत पदाय नमः । १९६. ॐ ज्वालिनीमौलिलालिताय नमः । १९७. ॐ नन्दा-नन्दित पीठश्रिये नमः । १९८. ॐ भोगदा भूषिता सनाय नमः । १९९. ॐ सकामदायिनी पीठाय नमः । २००. ॐ स्फुर दुग्रासनाश्रयाय नमः । २०१. ॐ तेजोवती शिरो रत्नाय नमः । २०२. ॐ सत्यानित्यावतं सिताय नमः । २०३. ॐ सविघ्न नाशिनी पीठाय नमः । २०४. ॐ सर्वशक्तयम्बुजाश्रयाय नमः । २०५. ॐ लिपिपद्मासना धाराय नमः । २०६. ॐ वह्निधामत्रया श्रयाय नमः । २०७. ॐ उन्नत प्रपदाय नमः । २०८. ॐ गूढ़ गुल्फाय नमः । २०९. ॐ संवृतपार्ष्णिकाय नमः । २१०. ॐ पीन जंघाय नमः । २११. ॐ श्लिष्ट जानवे नमः । २१२. ॐ स्थूलोरवे नमः । २१३. ॐ प्रोन्न-मत्कटये नमः । २१४. ॐ निम्ननाभये नमः । २१५. ॐ स्थूलकुक्षये नमः । २१६. ॐ पीनवक्षसे नमः । २१७. ॐ बृहद्भुजाय नमः । २१८. ॐ पीन स्कन्धाय नमः । २१९. ॐ कम्बुकण्ठाय नमः । २२०. ॐ लम्बो-

ष्ठाय नमः । २२१. ॐ लम्बनासिकाय नमः । २२२. ॐ भग्नवामरदाय नमः । २२३. ॐ तुङ्गसव्यदन्ताय नमः । २२४. ॐ महाहनवे नमः । २२५. ॐ ह्रस्व नेत्रत्रयाय नमः । २२६. ॐ शूर्पकर्णाय नमः । २२७. ॐ निबिडमस्तकाय नमः । २२८. ॐ स्तबकाकार कुम्भाग्राय नमः । २२९. ॐ रत्नमौलये नमः । २३०. ॐ निरङ्कुशाय नमः । २३१. ॐ सर्पहारकटि सूत्राय नमः । २३२. ॐ सर्पयज्ञोपवीतवते नमः । २३३. ॐ सर्पकोटीरकटकाय नमः । २३४. ॐ सर्पग्रैवेयकाङ्गदाय नमः । २३५. ॐ सर्पकक्ष्योदराबन्धाय नमः । २३६. ॐ सर्प राजोत्तरीयकाय नमः । २३७. ॐ रक्ताय नमः । २३८. ॐ रक्ताम्बर धराय नमः । २३९. ॐ रक्त माल्या विभूषणाय नमः । २४०. ॐ रक्तेक्षणाय नमः । २४१. ॐ रक्तकराय नमः । २४२. ॐ रक्तताल्वोष्ठ पल्लवाय नमः । २४३. ॐ श्वेताय नमः । २४४. ॐ श्वेताम्बरधराय नमः । २४५. ॐ श्वेतमाल्य विभूणाय नमः । २४६. ॐ श्वेतातपत्ररुचिराय नमः । २४७. ॐ श्वेतचामर वीजिताय नमः । २४८. ॐ सर्वावयव सम्पूर्णं सर्वलक्षण लक्षिताय नमः । २४९. ॐ सर्वाभरण शोभाढयाय नमः । २५०. सर्वशोभा समन्विताय नमः । २५१. ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्याय नमः । २५२. ॐ सर्व कारण कारणाय नमः । २५३. ॐ सर्वदैककराय नमः । २५४. ॐ शार्ङ्गिणे नमः । २५५. ॐ बीजापूरिणे नमः ।

२५६. ॐ गदाधराय नमः । २५७. ॐ इक्षुचापधराय नमः । २५८. ॐ शूलिने नमः । २५९. ॐ चक्रपाणये नमः । २६०. ॐ सरोजभृते नमः । २६१. ॐ पाशिने नमः । २६२. ॐ धृतोत्पलाय नमः । २६३. ॐ शाली मञ्जरी भृते नमः । २६४. ॐ स्वदन्त भृते नमः । २६५. ॐ कल्पवल्ली धराय नमः । २६६. ॐ विश्वाभयदैककराय नमः । २६७. ॐ वशिने नमः । २६८, ॐ अक्षमालाधराय नमः। २६९. ॐ ज्ञानमुद्रावते नमः । २७०. ॐ मुद्गरायुधाय नमः । २७१. ॐ पूर्णपात्रिणे नमः । २७२. ॐ कम्बुधराय नमः । २७३. ॐ विधृता लिसमुद्गकाय नमः । २७४. ॐ मातुलिङ्ग धराय नमः । २७५. ॐ चूतकलिकाभृते नमः । २७६. ॐ कुठारवते नमः । २७७. ॐ पुष्करस्थ स्वर्ण घटी पूर्ण रत्नाभिवर्ष काय नमः । २७८. ॐ भारती सुन्दरी नाथाय नमः । २७९. ॐ विनायकरति प्रियाय नमः । २८०. ॐ महा लक्ष्मी प्रियतमाय नमः । २८१. ॐ सिद्ध लक्ष्मी मनोरमाय नमः । २८२. ॐ रमा रमेशपूर्वाङ्गाय नमः । २८३. ॐ दक्षिणोमामहेश्वराय नमः । २८४. ॐ मही वराहवामाङ्गाय नमः । २८५. ॐ रति कन्दर्पपश्चिमाय नमः । २८६- ॐ आमोदमोद जननाय नमः । २८७. ॐ सप्रमोद प्रमोद नाथ नमः । २८८. ॐ समेधित समृद्धि श्रिये नमः । २८९. ॐ ऋद्धिसिद्धि प्रवर्तकाय नमः । २९०. ॐ दत्त सौमुख्य सुमुखाय नमः । २९१. ॐ

कान्तिकन्दलिता श्रयाय नमः। २९२. ॐ मदनावत्याश्रितांघ्रये नमः। २९३. ॐ कृतदौर्मुख्यदुर्मुखाय नमः। २९४. ॐ विघ्न सम्पल्लवो पघ्नाय नमः। २९५. ॐ सेवोन्निद्रमदद्रवाय नमः। २९६. विघ्नकृन्निघ्न चरणाय नमः। २९७. ॐ द्राविणी शक्ति सत्कृताय नमः। २९८. ॐ तीव्राप्रसन्ननयनाय नमः। २९९. ॐ ज्वालिनी पालितैकदृशे नमः। ३००. ॐ मोहिनी मोहनाय नमः। ३०१. ॐ भोगदायिनी कान्ति मण्डिताय नमः। ३०२. ॐ कामिनीकान्त वक्त्र श्रिये नमः। ३०३. ॐ अधिष्ठित वसुन्धराय नमः। ३०४. ॐ वसुन्धरामदोन्नद्ध महाशङ्खनिधि प्रभवे नमः। ३०५. ॐ नमद्वसुमती मौलि महापद्म निधि प्रभवे नमः। ३०६. ॐ सर्वसत् गुरुसंसेव्याय नमः। ३०७. ॐ शोचिष्के शहृदा श्रयाय नमः। ३०८. ॐ ईशानमूर्ध्ने नमः। ३०९. ॐ देवेन्द्रशिखाय नमः। ३१०. ॐ पवननन्दनाय नमः। ३११. ॐ अग्रप्रत्यग्रनयनाय नमः। ३१२. ॐ दिव्यास्त्राणां प्रयोग विदे नमः। ३१३. ॐ ऐरावतादि सर्वाशा वारणा वरण प्रियाय नमः। ३१४. ॐ वज्राद्यस्त्रपरीवाराय नमः। ३१५. ॐ गणचण्ड समाश्रयाय नमः। ३१६. ॐ जयाजय परीवाराय नमः। ३१७. ॐ विजया विजया वहाय नमः। ३१८. ॐ अजितार्चित पादाब्जाय नमः। ३१९. ॐ नित्यानित्यावतंसिताय नमः। ३२०. ॐ विलासिनी कृतोल्लासाय नमः।

३२१. ॐ शौण्डी सौन्दर्य मण्डिताय नमः । ३२२- ॐ अनन्तानन्तसुखदाय नमः । ३२३. ॐ सुमङ्गल सुमङ्गलाय नमः । ३२४. ॐ इच्छाशक्ति ज्ञान शक्ति क्रिया शक्ति निषेविताय नमः । ३२५. ॐ सुभगासंश्रित पदाय नमः । ३२६. ॐ ललिता ललिताश्रयाय नमः । ३२७. ॐ कामिनी कामनाय नमः । ३२८. ॐ काम मालिनी केलिलालिताय नमः । ३२९. ॐ सरस्वत्या श्रयाय नमः । ३३०. ॐ गौरी नन्दनाय नमः । ३३१. ॐ श्री निकेतनाय नमः । ३३२. ॐ गुरु गुप्तपदाय: नमः । ३३३. ॐ वाचासिद्धाय नमः । ३३४- ॐ वागीश्वरी पतये नमः । ३३५. ॐ नलिनी कामुकाय नमः । ३३६. ॐ वामारामाय नमः । ३३७. ॐ ज्येष्ठा मनोरमाय नमः । ३३८. ॐ रौद्री मुद्रित पादाब्जाय नमः । ३३९. ॐ हुं बीजाय नमः । ३४० ॐ तुङ्गशक्तिकाय नमः । ३४१. ॐ विश्वादिजन त्राणाय नमः । ३४२. ॐ स्वाहाशक्तये नमः । ३४३. ॐ सकीलकाय नमः । ३४४. ॐ अमृताब्धि-कृता वासाय नमः । ३४५. ॐ मदघूर्णित लोचनाय नमः । ३४६. ॐ उच्छिष्ट गणाय नमः । ३४७. ॐ उच्छिष्ट गणेशाय नमः । ३४८. ॐ गणनायकाय नमः । ३४९. ॐ सर्वाकालिका संसिद्धये नमः । ३५०. ॐ नित्यशैवाय नमः । ३५१. ॐ दिगम्बराय नमः । ३५२. ॐ अनपायाय नमः । ३५३. ॐ अनन्त

हृव्ये नमः । ३५४. ॐ अप्रमेयाय नमः । ३५५. ॐ अजरामराय नमः । ३५६. ॐ अनाविलाय नमः । ३५७. ॐ अप्रतिरथाय नमः । ३५८. ॐ अह्यच्युताय नमः । ३५९. ॐ अमृताय नमः । ३६०. ॐ अक्षराय नमः । ३६१. ॐ अप्रतर्क्याय नमः । ३६२. ॐ अक्षयाय नमः । ३६३. ॐ अजय्याय नमः । ३६४. ॐ अनाधाराय नमः । ३६५. ॐ अनामयाय नमः । ३६६. ॐ अमलाय नमः । ३६७. ॐ अमोघ सिद्धये नमः । ३६८. ॐ अद्वैताय नमः । ३६९. ॐ अघोराय नमः । ३७०. ॐ अप्रमितानताय नमः । ३७१. ॐ अनाकाराय नमः । ३७२. ॐ अब्धिभूम्यग्निबलघ्नाय नमः । ३७३. ॐ अव्यक्त लक्षणाय नमः । ३७४. ॐ आधार पीठाय नमः । ३७५. ॐ आधाराय नमः । ३७६. ॐ आधाराधेय वर्जिताय नमः । ३७७. ॐ आखुकेतनाय नमः । ३७८. ॐ आशापूरकाय नमः । ३७९. ॐ आखुमहारथाय नमः । ३८०. ॐ इक्षुसागर मध्य स्थाय नमः । ३८१. ॐ इक्षु भक्षण लालसाय नमः । ३८२. ॐ इक्षु चापातिरेक श्रिये नमः । ३८३. ॐ इक्षु चाप निषेविताय नमः । ३८४. ॐ इन्द्रगोप समान श्रिये नमः । ३८५. ॐ इन्द्रनील समद्यु तये नमः । ३८६. ॐ इन्दीवरदल श्यामाय नमः । ३८७. ॐ इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः । ३८८. ॐ इध्म प्रियाय नमः । ३८९. ॐ इडा भागाय नमः । ३९०. ॐ इडाधाम्ने नमः । ३९१. ॐ इन्दिरा

प्रियाय नमः। ३९२. ॐ इक्ष्वाकुविघ्न विध्वसिने नमः। ३९३. ॐ इति कर्तव्यतेप्सिताय नमः। ३९४. ॐ ईशान मौलये नमः। ३९५. ॐ ईशानाय नमः। ३९६. ॐ ईशान सुताय नमः। ३९७. ॐ ईतिघ्ने नमः। ३९८. ॐ ईषणात्रय कल्पान्ताय नमः। ३९९. ॐ ईहामात्र विवर्जिताय नमः। ४००. ॐ उपेन्द्राय नमः। ४०१. ॐ उडुभृन्मौलये नमः। ४०२. ॐ उण्डेरक बलि प्रियाय नमः। ४०३. ॐ उन्नताननाय नमः। ४०४. ॐ उत्तुङ्गाय नमः। ४०५. ॐ उदारत्रिदशाग्रण्यै नमः। ४०६. ॐ ऊर्जस्वते नमः। ४०७. ॐ ऊष्मलमदाय नमः। ४०८. ॐ ऊहापोहदुरासदाय नमः। ४०९. ॐ ऋग्यजुः सामसम्भूतये नमः। ४१०. ॐ ऋद्धिसिद्धि प्रदायकाय नमः! ४११. ॐ ऋजुचित्तैकसुलभाय नमः। ४१२. ॐ ऋणत्रय विमोचकाय नमः। ४१३. ॐ लुप्त विघ्नायस्व भक्तानां नमः। ४१४. ॐ लुप्तशक्तयेसुर द्विषां नमः। ४१५. ॐ लुप्तश्रियो विमुखार्चानां नमः। ४१६. ॐ लूता विस्फोट नाशनाय नमः। ४१७. ॐ एकार पीठ मध्यस्थाय नमः। ४१८. ॐ एकपादकृता सनाय नमः। ४१९. ॐ एजिता खिल दैत्य श्रियो नमः। ४२०. ॐ एधिता खिल संश्रयाया नमः। ४२१. ॐ एश्वर्य निधये नमः। ४२२. ॐ ऐश्वर्याया नमः। ४२३. ॐ ऐहिकामुष्मिक प्रदाया नमः। ४२४, ॐ ऐरम्मद समोन्मेषाया नमः। ४२५. ॐ ऐरावत निभाननाय

नमः । ४२६, ॐ ओङ्कार वाच्याय नमः । ४२७ ॐ ओङ्काराय नमः । ४२८, ॐ ओजस्वते नमः । ४२९. ॐ ओषधीपतये नमः । ४३०. ॐ औदार्य निधये नमः । ४३१. ॐ औद्धत्यधुर्याय नमः । ४३२. ॐ औन्नत्यनिस्वनाय नमः । ४३३. ॐ अंकुशाय सुरनागानां नमः । ४३४. ॐ अंकुशाय सुरविद्विषां नमः । ४३५. ॐ अः समस्त विसर्गान्त पदेषु परिकीर्तिताय नमः । ४३६. ॐ कमण्डलुधराय नमः । ४३७. ॐ कल्पाय नमः । ४३८. ॐ कपर्दिने नमः । ४३९. ॐ कलभाननाय नमः । ४४०. ॐ कर्मसाक्षिणे नमः । ४४१. ॐ कर्मकर्त्रे नमः । ४४२. ॐ कर्मा कर्मफल प्रदाय नमः । ४४३. ॐ कदम्ब गोलकाकाराय नमः । ४४४. ॐ कूष्माण्ड गणनायकाय ननः । ४४५. ॐ कारुण्य देहाय नमः । ४४६. ॐ कपिलाय नमः । ४४७. ॐ कथकाय नमः । ४४८. ॐ कटिसूत्र भृते नमः । ४४९. ॐ खर्वाय नमः । ४५०. ॐ खड्गप्रियाय नमः । ४५१. ॐ खड्गखान्तांतस्थाय नमः । ४५२. ॐ ख निर्मलाय नमः । ४५३. ॐ खल्वाट शृंगनिलयाय नमः । ४५४. ॐ खट्वांगिने नमः । ४५५. ॐ खुदरासदाय नमः । ४५६. ॐ गुणाढ्याय नमः । ४५७. ॐ गहनाय नमः । ४५८. ॐ गस्थाय नमः । ४५९. ॐ गद्य पद्य सुधार्णवाय नमः । ४६०. ॐ गद्यगान प्रियाय नमः । ४६१, ॐ गर्जाय नमः । ४६२. ॐ गीतगीर्वाणि पूर्वजाय नमः । ४६३.

गुह्याचाररताय नमः। ४६४. ॐ गुह्याय नमः। ४६५. ॐ गुह्याम मनिरुपिताय नमः। ४६६. ॐ गुहाशायाय नमः। ४६७. ॐ गुहाब्धिस्थाय नमः। ४६८. ॐ गुरुगम्याय नमः। ४६९. ॐ गुरोर्गुरवे नमः। ४७०. ॐ घण्टाघर्घरिकामालिने नमः। ४७१. ॐ घटकुम्भाय नमः। ४७२. ॐ घटोदराय नमः। ४७३. ॐ चण्डाय नमः। ४७४. ॐ चण्डेश्वर सुहृदे नमः। ४७५. ॐ चण्डीशाय नमः। ४७६. ॐ चण्ड विक्रमाय नमः। ४७७. ॐ चराचरपतये नमः। ४७८. ॐ चिन्तामणि चर्वण लालसाय नमः। ४७९. ॐ छन्दसे नमः। ४८०. ॐ छन्दोवपुषे नमः। ४८१. ॐ छन्दोदुर्लक्ष्याय नमः। ४८२. ॐ छन्द विग्रहाय नमः। ४८३. ॐ जगद्योनये नमः। ४८४. ॐ जगत्साक्षिणे नमः। ४८५. ॐ जगदीशाय नमः। ४८६. ॐ जगन्मयाय नमः। ४८७. ॐ जपाय नमः। ४८८. ॐ जपपराय नमः। ४८९. ॐ जप्याय नमः। ४९०, ॐ जिह्वासिंहासन प्रभवे नमः। ४९१. ॐ झलत्झल्लोल्लस छानझङ्कारि भ्रमरा कुलाय नमः। ४९२. ॐ टङ्कारस्फार संरावाय नमः। ४९३. ॐ टङ्कारिमणिनू पुराय नमः। ४९४. ॐ ठद्वयी पल्लवान्त स्थ सर्वमन्त्रैकसिद्धिदाय नमः। ४९५. ॐ डिण्डि मुण्डाय नमः। ४९६. ॐ डाकिनीशाय नमः। ४९७. ॐ डामराय नमः। ४९८. डिण्डिम प्रियाय नमः। ४९९. ॐ ढक्वानिनाद मुदिताय नमः। ५००. ॐ

ढौकाय नमः । ५०१. ॐ ढुण्ढि विनायकाय नमः । ५०२. ॐ तत्वानां परमायतत्वाय नमः । ५०३. ॐ तत्वंपद निरुपिताय नमः । ५०४. ॐ तारकान्तर संस्थानाय नमः । ५०५. ॐ तारकाय नमः । ५०६. ॐ तारकान्तकाय नमः । ५०७. ॐ स्थाणवे नमः । ५०८. ॐ स्थाणुप्रियाय नमः । ५०९. ॐ स्थात्रे नमः । ५१०. ॐ स्थावराय जंगमाय जगते नमः । ५११. ॐ दक्षयज्ञ प्रमथनाय नमः । ५१२. ॐ दात्रे नमः । ५१३. ॐ दानव मोहनाय नमः । ५१४. ॐ दयावते नमः । ५१५. ॐ दिव्यविभवाय नमः । ५१६. ॐ दण्डभृते नमः । ५१७. ॐ दण्डनायकाय नमः । ५१८. ॐ दन्त प्रभिन्ना भ्रमालाय नमः । ५१९. ॐ दैत्यवारण दारणाय नमः । ५२०. ॐ दंष्ट्रालग्नद्विप घटाय नमः । ५२१. ॐ देवार्थ नृगजाकृतये नमः । ५२२. ॐ धन धान्य पतये नमः । ५२३. ॐ धन्याय नमः । ५२४. ॐ धनदाय नमः । ५२५. ॐ धरणी धराय नमः । ५२६. ॐ ध्यानैक प्रकटाय नमः । ५२७. ॐ ध्येयाय नमः । ५२८. ॐ ध्यानाय नमः । ५२९. ॐ ध्यान परायणाय नमः । ५३०. ॐ नन्द्याय नमः । ५३१. ॐ नन्दि प्रियाय नमः । ५३२. ॐ नादाय नमः । ५३३. ॐ नाद मध्या प्रतिष्ठिताय नमः । ५३४. ॐ निष्कलाय नमः । ५३५. ॐ निर्मलाय नमः । ५३६. ॐ नित्याय नमः । ५३७. ॐ नित्या नित्याय नमः । ५३८. ॐ निरामयाय नमः ।

५३६- ॐ परस्मैव्योम्ने नमः । ५४०. ॐ परस्मैधाम्ने नमः । ५४१. ॐ परमात्मने नमः । ५४२. ॐ परस्मै-पदाय नमः । ५४३. ॐ परात्पराय नमः । ५४४. ॐ पशुपतये नमः । ५४५. ॐ पशु पाश विमोचकाय नमः। ५४६. ॐ पूर्णानन्दाय नमः । ५४७. ॐ परानन्दाय ५४८. ॐ पुराण पुरुषोत्तमाय नमः । ५४६. ॐ पद्म प्रसन्न नयनाय नमः। ५५०. ॐ प्रणता ज्ञान मोचनाय नमः । ५५१. प्रमाण प्रत्यातीताय नम. । ५५२. ॐ प्रणतार्ति निवारणाय नमः। ५५३. ॐ फलहस्ताय नमः । ५५४, ॐ फणिपतये नमः ! ५५५. ॐ फेत्तका-राय नमः । ५५६. ॐ फाणितप्रियाय नमः । ५५७. ॐ बाणार्चिताङ्घ्रियुगलाय नमः ।५५८. ॐ बालकेलिकुतू-हलिने नमः। ५५६. ॐ ब्रह्मणे नमः । ५६०. ॐ ब्रह्मार्चितप्रदाय नमः । ५६१. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः । ५६२. ॐ बृहस्पतये नमः । ५६३, ॐ बृहत्तमाय नमः । ५६४. ॐ ब्रह्मपराय नमः । ५६५. ॐ ब्रह्मण्याय नमः । ५६६ ॐ ब्रह्मवित् प्रियाय नमः । ५६७. ॐ बृहन्नादास्य-चीत्काराय नमः। ५६८. ॐ ब्रह्माण्डावलि मेखलाय नमः । ५६६. ॐ भ्रूक्षेप दत्त लक्ष्मीकाय नमः । ५७०. ॐ भर्गाय नमः । ५७१- ॐ भद्राय नमः । ५७२: ॐ भयापहाय नमः । ५७३- ॐ भगवते नमः । ५७४- ॐ भक्ति सुलभाय नमः । ५७५- ॐ भूतिदाय नमः। ५७६- ॐ भूति भूषणाय नमः । ५७७- ॐ भव्याय नमः ।

५७८. ॐ भूतालयाय नमः। ५७९. ॐ भोगक्षत्रे नमः। ५८०. ॐ भूमध्यगोत्त्राय नमः। ५८१. ॐ मन्त्राय नमः। ५८२. ॐ मन्त्रपतये नमः। ५८३. ॐ मन्त्रिणे नमः। ५८४. ॐ मदमत्तमनोरमाय नमः। ५८५. ॐ मेखलावते नमः। ५८६. ॐ मन्दगतये नमः। ५८७. ॐ मतिमत्कमलेक्षणाय नमः। ५८८. ॐ महाबलाय नमः। ५८९. ॐ महावीर्याय नमः। ५९०. ॐ महाप्राणाय नमः। ५९१. ॐ महामनसे नमः। ५९२. ॐ यज्ञाय नमः। ५९३. ॐ यज्ञपतये नमः। ५९४. ॐ यज्ञगोपत्रे नमः। ५९५. ॐ यज्ञफलप्रदाय नमः। ५९६. ॐ यश-स्कराय नमः। ५९७. ॐ योनगम्याय नमः। ५९८. ॐ याज्ञिकाय नमः। ५९९. ॐ याजक प्रियाय नमः। ६००. ॐ रसाय नमः। ६०१. ॐ रसप्रियाय नमः। ६०२. ॐ रस्याथ नमः। ६०३. ॐ रञ्जकाय नमः। ६०४. ॐ रावणार्चिताय नमः। ६०५. ॐ रक्षोरक्षा-कराय नमः। ६०६. ॐ रत्नगर्भाय नमः। ६०७. ॐ राज्य सुख प्रदाय नमः। ६०८. ॐ लक्षाय नमः। ६०९. ॐ लक्ष्यप्रदाय नमः। ६१०. ॐ लक्ष्याय नमः। ६११. लयस्थाय नमः। ६१२. ॐ लड्डुक प्रियाय नमः। ६१३. ॐ लानप्रियाय नमः। ६१४. ॐ लास्यपराय नमः। ६१५. लाभकृल्लोक विश्रुताय नमः। ६१६. ॐ वरेण्याय नमः। ६१७. ॐ वह्निवदनाय नमः। ६१८. ॐ वन्द्याय नमः। ६१९. ॐ वेदान्त गोचराय नमः।

६२०. ॐ विकर्त्रे नमः। ६२१. ॐ विश्वतश्चक्षुषे नमः। ६२२. ॐ विधात्रे नमः। ६२३. ॐ विश्वतो-मुखाय नमः। ६२४. ॐ वामदेवाय नमः। ६२५. ॐ विश्वनेत्रे नमः। ६२६. ॐ वज्रि वज्र निवारणाय नमः। ६२७. ॐ विश्वबन्धन विष्कम्भाधाराय नमः। ६२८. ॐ विश्वेश्वर प्रभवे नमः। ६२९. ॐ शब्द ब्रह्मणे नमः। ६३०. ॐ शम प्राप्याय नमः। ६३१. ॐ शम्भु शक्ति गणेश्वराय नमः। ६३२. ॐ शास्त्रे नमः। ६३३. ॐ शिखाग्रनिलयाय नमः। ६३४. ॐ शरण्याय नमः। ६३५. ॐ शिखरीश्वराय नमः। ६३६. ॐ षड् ऋतुकुसुमस्त्रग्विणे नमः। ६३७. ॐ षडाधाराय नमः। ६३८. ॐ षडक्षराय नमः। ६३९. ॐ संसार वैद्याय नमः। ६४०. ॐ सर्वज्ञाय नमः। ६४१. ॐ सर्व-भेषज भेषजाय नमः। ६४२. ॐ सृष्टि स्थितिलय क्रीडाय नमः। ६४३. ॐ सुरकुञ्जर भेदनाय नमः। ६४४. ॐ सिन्दूरित महाकुम्भाय नमः। ६४५. ॐ सदसद्व्यक्तिदायकाय नमः। ६४५. ॐ साक्षिणे नमः। ६४७. ॐ समुद्रमथनाय नमः। ६४८. ॐ स्वसंवेद्याय नमः। ६४९. ॐ स्वदक्षिणाय नमः। ६५०. ॐ स्व-तन्त्राय नमः। ६५१. ॐ सत्य सङ्कल्पाय नमः। ६५२- ॐ सामागानरताय नमः। ६५३- ॐ सुखिने नमः। ६५४- ॐ हंसाय नमः। ६५५- ॐ हस्ति पिशाचीशाय नमः। ६५६- ॐ हवनाय नमः। ६५७- ॐ हव्यकव्य-

भुजे नमः । ६५८. ॐ हव्याय नमः । ६५९. ॐ हुत-प्रियाय नमः । ६६०. ॐ हर्षाय नमः । ६६१. ॐ हृल्लेखा मन्त्र मध्यगाय नमः । ६६२. ॐ क्षेत्राधिपाय नमः । ६६३. ॐ क्षमाभर्त्रे नमः । ६६४. ॐ क्षमापर परायणाय नमः । ६६५. ॐ क्षिप्रक्षेम कराय नमः । ६६६. ॐ क्षेमानन्दाय नमः । ६६७. ॐ क्षोणीसुर-द्रुमाय नमः । ६६८. ॐ धर्मप्रदाय नमः । ६६९. ॐ अर्थदाय नमः । ६७०. ॐ कामदात्रे नमः । ६७१. ॐ सौभाग्यवर्धनाय नमः । ६७२. ॐ विद्याप्रदाय नमः । ६७३. ॐ विभवदाय नमः । ६७४. ॐ भुक्तिमुक्ति फल प्रदाय नमः । ६७५. ॐ अभिरुप्यकराय नमः । ६७६. ॐ वीर श्री प्रदाय नमः । ६७७. ॐ विजयप्रदाय नमः । ६७८. ॐ सर्ववश्यकराय नमः । ६७९. ॐ गर्भ दोषघ्ने नमः । ६८०. ॐ पुत्रपौत्रदाय नमः । ६८१. ॐ मेधादाय नमः । ६८२. ॐ कीर्तिदाय नमः । ६८३. ॐ शोकहारिणे नमः । ६८४. ॐ दौर्भाग्य नाशनाय नमः । ६८५. ॐ प्रतिवादिमुख स्तम्भाय नमः । ६८६. ॐ रुष्ट चित प्रसादनाय नमः । ६८७. ॐ पराभिचार शमनाय नमः । ६८८. ॐ दुःख भञ्जन कारकाय नमः । ६८९. ॐ लवाय नमः । ६९०. ॐ त्रुटयै नमः । ६९१. ॐ कलायै नमः । ६९२. ॐ काष्ठायै नमः । ६९३. ॐ निमेषाय नमः । ६९४. ॐ तत्पराय नमः । ६९५. ॐ क्षणाय नमः । ६९६. ॐ घटयै नमः । ६९७. ॐ मुहूर्ताय

नमः । ६६८. ॐ प्रहराय नमः । ६६९. ॐ दिवा नमः । ७००. ॐ नक्तं नमः । ७०१. ॐ अहर्निशं नमः । ७०२. ॐ पक्षाय नमः । ७०३. ॐ मासाय नमः । ७०४. ॐ अयनाय नमः । ७०५. ॐ वर्षाय नमः । ७०६. ॐ युगाय नमः । ७०७. ॐ कल्पाय नमः । ७०८. ॐ महालयाय नमः । ७०९. ॐ राशये नमः । ७१०. ॐ तारायै नमः । ७११. ॐ तिथये नमः । ७१२. ॐ योगाय नमः । ७१३. ॐ वाराय नमः । ७१४. ॐ करणाय नमः । ७१५. ॐ अशंकाय नमः । ७१६. ॐ लग्नाय नमः । ७१७. ॐ होरायै नमः । ७१८. ॐ कालचक्राय नमः । ७१९. ॐ मेखे नमः । ७२०. ॐ सप्तर्षिभ्यो नमः । ७२१: ॐ ध्रुवाय नमः । ७२२. ॐ राहवे नमः । ७२३. ॐ मन्दाय नमः । ७२४. ॐ कवये नमः । ७२५. ॐ जीवाय नमः । ७२६. ॐ बुधाय नमः । ७२७. ॐ भौमाय नमः । ७२८. ॐ शशिने नमः । ७२९. ॐ रवये नमः । ७३०. ॐ कालाय नमः । ७३१. ॐ सृष्टये नमः । ७३२. ॐ स्थितये नमः । ७३३- ॐ विश्वस्मै स्थावराय जंगमाय च यते नमः । ७३४- ॐ भुवे नमः । ७३५- ॐ अद्भ्यो नमः । ७३६- ॐ अग्नये नमः । ७३७- ॐ मरुते नमः । ७३८- ॐ व्योम्ने नमः । ७३९- ॐ अहङ्कृतये नमः । ७४०- ॐ प्रकृत्यै नमः । ७४१. ॐ पुंसे नमः । ७४२- ॐ ब्रह्मणे नमः । ७४३. ॐ विष्णवे नमः । ७४४. ॐ शिवाय नमः । ७४५.

ॐ रुद्राय नमः। ७४६. ॐ ईशाय नमः। ७४७- ॐ शक्त्यै नमः। ७४८- ॐ सदा शिवाय नमः। ७४९- ॐ त्रिदशेभ्यो नमः। ७५०- पितृभ्यो नमः। ७५१- ॐ सिद्धेभ्यो नमः। ७५२. ॐ यक्षेभ्यो नमः। ७५३- ॐ रक्षोभ्यो नमः। ७५४. ॐ किन्नरेभ्यो नमः। ७५५. ॐ साध्येभ्यो नमः। ७५६. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः। ७५७. ॐ भूतेभ्यो नमः। ७५८- ॐ मनुष्येभ्यो नमः। ७५९. ॐ पशुभ्यो नमः। ७६०. ॐ खगेभ्यो नमः। ७६१. ॐ समुद्रेभ्यो नमः। ७६२. ॐ सरिद्भ्यो नमः। ७६३. ॐ शैलेभ्यो नमः। ७६४. ॐ भूताय नमः। ७६५. ॐ भव्याय नमः। ७६६. ॐ भवोद्भवाय नमः। ७६७. ॐ साङ्ख्याय नमः। ७६८. ॐ पातञ्जलाय नमः। ७६९. ॐ योगाय नमः। ७७०. ॐ पुराणेभ्यो नमः। ७७१. ॐ श्रुतये नमः। ७७२. ॐ स्मृतये नमः। ७७३. ॐ वेदाङ्गेभ्यो नमः। ७७४. ॐ सदाचाराय नमः। ७७५. ॐ मीमांसायै नमः। ७७६. ॐ न्याय विस्तराय नमः। ७७७. ॐ आयुर्वेदाय नमः। ७७८. ॐ धनुर्वेदाय नमः। ७७९. ॐ गान्धर्वाय नमः। ७८०. ॐ काव्यनाटकाय नमः। ७८१. ॐ वैखानसाय नमः। ७८२. ॐ भागवताय नमः। ७८३. ॐ सात्वताय नमः। ७८४. ॐ पाञ्चरात्रकाय नमः। ७८५. ॐ शैवाय नमः। ७८६. ॐ पाशुपताय नमः। ७८७. ॐ कालामुखाय नमः। ७८८. ॐ भैरवशासनाय नमः। ७८९.

ॐ शाक्ताय नमः । ७९०. ॐ वैनायकाय नमः । ७९१. ॐ सोराय नमः । ७९२. ॐ जैनाय नमः । ७९३. ॐ आर्हतसंहितायै नमः । ७९४. ॐ सते नमः । ७९५, ॐ असते नमः । ७९६. ॐ व्यक्ताय नमः । ७९७. ॐ अव्यक्ताय नमः । ७९८. ॐ सचेतनाय नमः । ७९९. ॐ अचेताय नमः । ८००. ॐ बन्धाय नमः । ८०१. ॐ मोक्षाय नमः । ८०२. ॐ सुखाय नमः । ८०३. ॐ भोगाय नमः । ८०४. ॐ अयोगाया नमः । ८०५. ॐ सत्याया नमः । ८०६. ॐ अणवे नमः । ८०७ ॐ महते नमः । ८०८. ॐ स्वस्ति नमः । ८०९. ॐ हुं नमः । ८१०. ॐ फण्णमः नमः । ८११. ॐ स्वधा नमः । ८१२. ॐ स्वाहा नमः । ८१३. ॐ श्रौषण्णमः नमः । ८१४. ॐ वौषण्णमः नमः । ८१५- ॐ वषण्णमः नमः । ८१६- ॐ नमो नमः । ८१७- ॐ ज्ञानाय नमः । ८१८- ॐ विज्ञानाय नमः । ८१९- ॐ आनन्दाया नमः । ८२०- ॐ बोधाया नमः । ८२१- ॐ संविदे नमः । ८२२- ॐ शमाया नमः । ८२३- ॐ यमाय नमः । ८२४- ॐ एकस्मै नमः । ८२५- ॐ एकाक्षरा धाराय नमः । ८२६- एकाक्षर परायणाय नमः । ८२७- ॐ एकाग्रधिये नमः । ८२८- ॐ एक वीराय नमः । ८२९- ॐ एकानेकस्वरुप धृषे नमः । ८३०- ॐ द्विरुपाया नमः । ८३१- ॐ द्वि भुजाया नमः । ८३२- ॐ द्वयक्षाया नमः । ८३३- ॐ द्विरदाया नमः । ८३४- ॐ द्विपरक्षकाया नमः । ८३५-

ॐ द्वैमातुराय नमः। ८३६. ॐ द्विवदनाय नमः। ८३७· ॐ द्वन्द्वातीताय नमः। ८३८. ॐ द्वयातिगाय नमः। ८३९. ॐ त्रिधाम्ने नमः। ८४०. ॐ त्रिकराय नमः। ८४१. ॐ त्रेतात्रिवर्गफलदायकाय नमः। ८४२. ॐ त्रिगुणात्मने नमः। ८४३. ॐ त्रिलोकादये नमः। ८४४. ॐ त्रिशक्तीशाय नमः। ८४५. ॐ त्रिलोचनाय नमः। ८४६. ॐ चतुर्बाहवे नमः। ८४७. ॐ चतुर्दन्ताय नमः। ८४८. ॐ चतुरात्मने नमः। ८४९. ॐ चतुर्मुखाय नमः। ८५०. ॐ चतुर्विधोपायमयाय नमः। ८५१. ॐ चतुर्वर्णाश्रमाश्रयाय नमः। ८५२ ॐ चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृतिप्रवर्तकाय नमः। ८५३. ॐ चतुर्थी पूजन प्रीताय नमः। ८५४. ॐ चतुर्थी तिथि सम्भवाय नमः। ८५५. ॐ पञ्चाक्षरात्मने नमः। ८५६. ॐ पञ्चात्मने नमः। ८५७. ॐ पञ्चास्याय नमः। ८५८. ॐ पञ्चकृत्यकृते नमः। ८५९. ॐ पञ्चाधाराय नमः। ८६०. ॐ पञ्चवर्णाय नमः। ८६१. ॐ पञ्चाक्षरपरायणाय नमः। ८६२. ॐ पञ्चतालाय नमः। ८६३. ॐ पञ्चकराय नमः। ८६४. ॐ पञ्चप्रणवभावितायं नमः। ८६५. ॐ पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तये नमः। ८६६. ॐ पञ्चावरणवारिताये नमः। ८६७. ॐ पञ्चभक्ष्य प्रियाय नमः। ८६८. ॐ पञ्चबाणाय नमः। ८६९. ॐ पञ्च शिवात्मकाय नमः। ८७०. ॐ षट्कोणपीठाय नमः। ८७१. ॐ षट्चक्राधाम्ने नमः।

८७२. ॐ षट्ग्रन्थिभेदकाय नमः । ८७३. ॐ षडध्व-ध्वान्तविध्वंसिने नमः । ८७४. ॐ षडंगुलमहाव्हदाय नमः । ८७५. ॐ षण्मुखाय नमः । ८७६. ॐ षण्मुख भ्रात्रे नमः । ८७७. ॐ षट्शक्तिपरिवारिताय नमः । ८७८. ॐ षड्वैरिवर्गविध्वंसिने नमः । ८७९. ॐ षड्-र्भिभयभञ्जनाय नमः । ८८०. ॐ षट्तर्कदूराय नमः । ८८१. ॐ षट्कर्मनिरताय नमः । ८८२. ॐ षड्साश्रा-याय नमः । ८८३. ॐ सप्तपातालचरणाय नमः । ८८४. ॐ सप्तद्वीपोरुमण्डलाय नमः । ८८५. ॐ सप्त-स्वर्लोकमुकुटाय नमः । ८८६. ॐ सप्तसप्तिवरप्रदाय नमः । ८८७. ॐ सप्ताङ्गराज्यसुखदाय नमः । ८८८. ॐ सप्तर्षिगणमण्डिताय नमः । ८८९. ॐ सप्तच्छन्दो-निधये नमः । ८९०. ॐ सप्तहोत्रे नमः । ८९१. ॐ सप्तस्वराश्रयाय नमः । ८९२. ॐ सप्ताब्धिकेलिकासा-राय नमः । ८९३. ॐ सप्तमातृनिषेविताय नमः । ८९४. ॐ सप्तच्छन्दोमोदमदाय नमः । ८९५. ॐ सप्तछन्दो-मखप्रभवे नमः । ८९६. ॐ अष्टमूर्तिध्येयमूर्तये नमः । ८९७. ॐ अष्टप्रकृतिकारणाय नमः । ८९८. ॐ अष्टा-ङ्गयो फलभुवे नमः । ८९९. ॐ अष्टपत्राम्बुजासनाय नमः । ९००. ॐ अष्टशक्ति समृद्धश्रिये नमः । ९०१. ॐ अष्टैश्वर्यप्रदायकाय नमः । ९०२. ॐ अष्टपीठोपपीठ श्रिये नमः । ९०३. ॐ अष्टमातृ समावृत्ताय नमः । ९०४. ॐ अष्टभैरवसेव्याय नमः । ९०५. ॐ अष्ट

वसुवन्द्याय नमः । ९०६. ॐ अष्टमूर्तिभृते नमः । ९०७. ॐ अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तये नमः । ९०८. ॐ अष्टद्रव्यहविः प्रियाय नमः । ९०९. ॐ नवनागासनाध्यासिने नमः । ९१०. ॐ नवनिध्यनुशासित्रे नमः । ९११. ॐ नवद्वार पुराधाराय नमः । ९१२. ॐ नवधारनिकेतनाय नमः । ९१३. ॐ नवनारायणस्तुत्याय नमः । ९१४. ॐ नव दुर्गानिषेविताय नमः । ९१५. ॐ नवनाथ महानाथाय नमः । ९१६. ॐ नवनागविभूषणाय नमः । ९१७. ॐ नवरत्नविचित्राङ्गाय नमः । ९१८. ॐ नवशक्ति शिरोधृताय नमः । ९१९. ॐ दशात्मकाय नमः । ९२०. ॐ दशभुजाय नमः । ९२१. ॐ दश-दिक्पतिवन्दिताय नमः । ९२२. ॐ दशाध्यायाय नमः । ९२३. ॐ दशप्राणाय नमः । ९२४. ॐ दशेन्द्रिय नियामकाय नमः । ९२५. ॐ दशाक्षर महामन्त्राय नमः । ९२६. ॐ दशाशाव्यापि विग्रहाय नमः । ९२७. ॐ एकादशादिभीरुद्रैः स्तुताय नमः । ९२८. ॐ एका-दशाक्षराय नमः । ९२९. ॐ द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डाय नमः । ९३०. ॐ द्वादशान्तनिकेतनाय नमः । ९३१. ॐ त्रयो-दशभिदाभिन्नविश्वेदेवाधि दैवताव नमः । ९३२. ॐ चतुर्दशेन्द्रवरदाय नमः । ९३३. ॐ चतुर्दशमनुप्रभवे नमः । ९३४. ॐ चतुर्दशादि विद्याढ्याय नमः । ९३५. ॐ चतुर्दशजगत्प्रभवे नमः । ९३६. ॐ सामपञ्चदशाय नमः । ९३७. ॐ पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलाय नमः । ९३८. ॐ षोडशाधार निलयाय नमः । ९३९. ॐ

षोडशस्वरमातृकाय नमः । ६४०. ॐ षोडशान्तपदा वासाय नमः । ६४१. ॐ षाडशेन्दुकलात्मकाय नमः । ६४२. ॐ कलासप्तदश्यै नमः । ६४३. ॐ सप्तदशाय नमः । ६४४. ॐ सप्तदशाक्षराय नमः । ६४५. ॐ अष्टादशद्वीपपतये नमः । ६४६. ॐ अष्टादशपुराणकृते नमः । ६४७. ॐ अष्टादशौषधीसृष्टये नमः । ६४८. ॐ अष्टादशविधिस्मृताय नमः । ६४६. ॐ अष्टादशलिपिव्यष्टि समष्टि ज्ञानकोविदाय नमः । ६५०. ॐ एकविंशाय-पुंसे नमः । ६५१. ॐ एकविंशत्यङ्गुलिपल्लवाय नमः । ६५२. ॐ चतुर्विंशतितत्वात्मने नमः । ६५३. ॐ पञ्चविंशाख्य पूरुषाय नमः । ६५४. ॐ सप्तविंशतिता रेशाय नमः । ६५५. ॐ सप्तविंशतियोग कृते नमः । ६५६. ॐ द्वात्रिंशत्भैरवाधीशाय नमः । ६५६. ॐ चतुस्त्रिशन्महाह्रदाय नमः । ६५७. ॐ षट्त्रिंशतत्व सम्भूतये नमः । ६५८. ॐ अष्टात्रिंशतकलातनवे नमः । ६६०. ॐ नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलाय नमः । ६६१. ॐ पञ्चाशदक्षरश्रेण्यै नमः । ६६२. ॐ पञ्चाशद्रुद्रविग्रहाय नमः । ६६३. ॐ पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशाय नमः । ६६४. ॐ पञ्चाशन्मातृकालयाय नमः । ६६५. ॐ द्विपञ्चाशद्वपुश्रेणये नमः । ६६६. ॐ त्रिषष्ट्यक्षर संश्रयाय नमः । ६६७. ॐ चतुःषष्टयर्ण निर्णेत्रे नमः । ६६८. ॐ चतुःषष्टि कलानिधये नमः । ६६६. चतुःषष्टि महासिद्धयोगिनीवृन्दवन्दिताय नमः । ६७०. ॐ अष्ट-

षष्टि महातीर्थ क्षेत्र भैरवभावनाय नमः । ९७१. ॐ चतुर्नवति मन्त्रात्मने नमः । ९७२. ॐ षण्णवत्यधिक प्रभवे नमः । ९७३. ॐ शतानन्दाय नमः । ९७४. ॐ शतधृते नमः । ९७५. ॐ सतपत्रायतेक्षणाय नमः । ९७६. ॐ शतानीकाय नमः । ९७७. ॐ शतमखाय नमः । ९७८. ॐ शतधारावरायुधाय नमः । ९७९. ॐ सहस्रपत्रनिलयाय नमः । ९८०. ॐ सहस्रफणभूषणाय नमः । ९८१. ॐ सहस्रशीर्ष्णे पुरुषाय नमः। ९८२. ॐ सहस्राक्षाय नमः । ९८३. ॐ सहस्रपदे नमः । ९८४. ॐ सहस्रनामसंस्तुत्याय नमः । ९८५. ॐ सहस्राक्ष-बलापहाय नमः । ९८६. ॐ दशसाहस्र फणभृत्यणि राजकृत सनाय नमः। ९८७. ॐ अष्टाशीतिसहस्राद्य-महर्षिस्तोत्र यन्त्रिताय नमः। ९८८. ॐ लक्षाधीश-प्रिया धाराय नमः । ९८९. ॐ लक्षाधारमनोमयाय नमः । ९९०. ॐ चतुर्लक्षजपप्रीताय नमः । ९९१. ॐ चतुर्लक्ष प्रकाशिताय नमः। ९९२. ॐ चतुरशीति लक्षाणां जीवानां देह संस्थिताय नमः । ९९३. ॐ कोटि सूर्य प्रतीका काशाय नमः । ९९४. ॐ कोटि चन्द्रांशु निर्मलाय नमः। ९९५. ॐ शिवाभवाध्युष्ट कोटि विनायक धुरन्धराय नमः। ९९६. ॐ सप्तकोटि महामन्त्र मन्त्रितावय वद्युतये नमः । ९९७. ॐ त्रय-स्त्रिंशत्कोटि सुरश्रेणी प्रणत पादुकाय नमः । ९९८.

ॐ अनन्तनाम्ने नमः। ९९९. ॐ अनन्तश्रिये नमः।
१०००. ॐ अनन्तानन्त सौख्यदाय नमः।

॥ श्री गुरू गणेशार्पणमस्तु ॥

गणेशस्तवराजः

श्री भगवानुवाच

गणेशस्य स्तवं वक्ष्ये कलौ झटिति सिद्धिदम्।
न न्यासो न च संस्कारो न होमो न च तर्पणम् ॥१॥
न मार्जनं च पञ्चाशत् सहस्त्र जप मात्रतः।
सिद्धयत्यर्चनतः पञ्चशत ब्राह्मण भोजनात् ॥२॥

विनियोगः

अस्य श्री गणेशस्तवराज मन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री महागणपति देवता श्री महागणपति प्रीत्यर्थं जपे-पाठे विनियोगः ॥

विनायकैक भावना-समर्चना-समर्पितं
प्रमोदकैः प्रमोदकैः प्रमोद-मोद-मोदकम्।
यदर्पितं सदर्पितं नवान्य-धान्य-निर्मितं,
न कण्डितं न खण्डितं न खण्डमण्डनं कृतम् ॥३॥
सजातिकृद्-विजातिकृत्-स्वनिष्ठ-भेदवर्जितं,
निरञ्जनं च निर्गुणं निराकृतिं ह्यनिष्क्रियम्।
सदात्मकं चिदात्मकं सुखात्मकं परं पदं,
भजामि तं गजाननं स्वमाययात्त विग्रहम् ॥४॥

गणाधिप ! त्वमष्टमूर्तिरीश सूनुरीश्वर-
स्त्वमम्बरं च शम्वरं धनञ्जयः प्रभञ्जनः ।
त्वमेव दीक्षितःक्षितिर्निशाकरः प्रभाकर-
श्चराऽचर-प्रचार-हेतुरन्तराय-शान्तिकृत् ॥५॥

अनेकदं तमाल-नीलमेकदन्त-सुन्दरं,
गजाननं नमोऽगजानना-ऽमृताब्धि-मन्दिरम् ।
समस्त-वेदवादसत्कला - कलाप-मन्दिरं,
महान्तराय-कृत्तमोऽर्कमाश्रितोऽन्दुरूं परम् ॥६॥

सरत्नहेम-घण्टिका-निनाद-नूपुरस्वनै-
र्मृदङ्ग-तालनाद-भेदसाधनानु रूपतः ।
धिमि-द्धिमि-तथोङ्ग-थोङ्ग-थैयि-थैयि शब्दतो,
विनायकः शशाङ्कशेखरः प्रहृष्य नृत्यति ॥७॥

सदा नमामि नायकैक नायकैक नायकं,
कला कलाप-कल्पना-निनादमादि पूरुषम् ।
गणेश्वरं गुणेश्वर महेश्वरात्म सम्भवं,
स्वपादपद्म-सेविनामपार-वैभव प्रदम् ॥८॥

भजे प्रचण्ड-तुन्दिलं सदन्दशूकभूषणं,
सनन्दनादि-वन्दितं समस्त-सिद्धसेविताम् ।
सुराऽसुरौघयोः सदा जयप्रदं भयप्रदं,
समस्त विघ्न-घातिनं स्वभक्त-पक्षपातिनम् ॥९॥

कराम्बुजात-कङ्कणः पदाब्ज-किङ्किणी गणो,
गणेश्वरो गुणार्णवः फणीश्वराङ्ग भूषणः ।

जगत्त्रयान्तराय-शान्तिकारकोऽस्तु तारको,
भवार्णवस्थ-घोर दुर्गहा चिदेक विग्रहः ॥१०॥

फलश्रुतिः

यो भक्ति प्रवणश्चरा-ऽचर-गुरोः स्तोत्रं गणेशाष्टकं,
शुद्धः संयत चेतसा यदि पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान्।
तस्य श्रीरतुला स्वसिद्धि-सहिता श्री शारदा सर्वदा,
स्यातां तत्परिचारिके किल तदा काः कामनानां कथाः ॥

॥ गणेश स्तवराजः सम्पूर्णः ॥

श्री गणेश्वरैकविंशति नामानि

१. ओं गणंजयाय नमः २, ओं गणपतये नमः ३. ओं हेरंवाय नमः ४. ओं धरणीधराय नमः ५. ओं महा गणपतये नमः ६. ओं लक्षप्रदाय नमः ७. ओं क्षिप्त प्रसादनाय नमः ८. ओं अमोघ सिद्धये नमः ९. ओं अमितायः नमः १०. ओं मन्त्राय नमः ११. ओं चिन्ता-मणये नमः १२. ओं निधने नमः १३. ओं सुमंगलाय नमः १४. ओं बीजाय नमः १५. ओं आशापूरकाय नमः १६. ओं वरदाय नमः १७. ओं शिवाय नमः १८. ओं काश्यपाय नमः १९. ओं नन्दनाय नमः २०. ओं बाचा सिद्धाय नमः २१. ओं ढुण्ढि विनायकाय नमः ।

इति एकविंशति नामानि

गणंजयो गणपतिर्हेरंबोधरणीधरः ।
महागणपतिर्लक्षप्रदः क्षिप्रप्रसादनः ॥

अमोघ सिद्धिरमितो मन्त्रश्चिन्तामणि निधिः ।
सुमंगलो बीजमाशापूरको वरदः शिवः ॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढि विनायकः ।
मोदकैरे भिरत्रैक विंशत्या नामभि पुमान् ॥

यः स्तौति मद्गतमना मदाराधन तत्परः ।
स्तुतो नाम्नां सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः ॥

नमो नमः सुरवर पूजितांध्रये नमो नमो निरुपम-
मंगलात्मने ।
नमो नमो विपुलपदैक सिद्धये नमो नमः करिकलभान
नायते ॥

——

॥ तान्त्रिक प्रयोगः प्रारम्भम् ॥

अथ गणेश गीता प्रारम्भः

❀ प्रथमोऽध्यायः ❀

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

॥ क उवाच ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

एवमेव पुरापृष्टः शौनकेन महात्मना ।
स सूतः कथयामास गीतां व्यास मुखाच्छ्रुताम् ।१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

सूत उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

अष्टादशपुराणोक्त ममृतं प्राशितं त्वया ।
ततोऽति रसवत्पातुमिच्छाम्य मृत मुतमम् ।।२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

येना मृतमयो भूत्वा पुमान्ब्रह्मामृतं यतः ।
योगामृतं महाभागतन्मे करुणया वद ।।३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

व्यास उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अथ गीतां प्रवक्ष्यामि योग मार्ग प्रकाशिनीम् ।
नियुक्ता पृच्छते सूत राज्ञे गजमुखे नया ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

विघ्नेश्वर महाबाहो सर्व विद्या विशारद ।
सर्व शास्त्रार्थ तत्वज्ञयोगं मे वक्तुमर्हसि ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

श्री गजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

सम्यग्व्यवसिता राजन्मयिस्तेऽनुग्रहान्मम ।
शृणु गीतां प्रवक्ष्यामि योगामृतमयीं नृप ।।६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

न योगं योगमित्याहु र्योगोयोगो न च श्रियः ।
न योगो विषयै र्योगो न च मात्रादिभिस्तथा ।।७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

योगो यः पितृमात्रादेर्न स योगोनराधिपः ।
यो योगो बन्धु पुत्रादेर्यश्चाष्ट भूतिभिः सहः ।।८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

न स योगस्त्रिया योगो जगदद्भुत रुपया ।
राज्य योगश्चनो योगो न योगो गज वाजिभिः ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानल स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

योगोनेन्द्र पद स्यापि योगो योगार्थिनः प्रियः ।
योगो यः सत्यलोकस्य न स योगो मतोमम ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरबरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

शैवस्य योगो नो योगो वैष्णवस्य पदस्य यः ।
न योगो भूप सूर्यत्वं चन्द्रत्वं च कुबेरता ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

नानिलत्वं नानलत्वं नामरत्वं न कालता ।
न वारुण्यं न नैर्ऋत्यं न योगः सार्व भौमता ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

योगं नानाविधं भूप युञ्जन्ति ज्ञानिनस्ततम् ।
भवन्ति वितृषा लोके जिताहारा विरेतसः ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

पावयन्त्यखिलान्लोकान्वशीकृत जगत्त्रयाः ।
करुणापूर्ण हृदया बोधयन्त्यपि कांश्चन ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

जीवन्मुक्ता ह्रदे मग्नाः परमानन्दरूपिणी ।
निमील्याक्षीणि पश्यन्तः पर ब्रह्म हृदि स्थितम् ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ध्यायन्तः परमं ब्रह्मचिते योगवशीकृतम् ।
भूतानि स्वात्मना तुल्यं सर्वाणि गणयन्ति ते ।।१६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

येन केन चिदाच्छिन्ना येन केन चिदा हृताः ।
येनकेन चिदाकृष्टा येनकेन चिदाश्रिताः ।।१७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

करुणापूर्ण हृदया भ्रमन्ति धरणी तले ।
अनुग्रहाय लोकानां जितक्रोधा जितेन्द्रियाः ।।१८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

देहमात्र भृतो भूप समलोष्टाश्मकाञ्चनाः ।
एतादृशामहाभाग्याः स्युश्चक्षुर्गोचराः प्रिय ॥१९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तमिदानीमहं वक्ष्ये शृणु योगमनुत्तमम् ।
श्रुत्वा यं मुच्यते जन्तुः पापेभ्यो भवसागरात् ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

शिवे विष्णौ च शक्तौ च सूर्येमयि नराधिप ।
याऽभेद बुद्धि योंगः स सम्यग्योगो मतोमम ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अहमेव जगद्यस्मात्सृजामि पालयामि च ।
कृत्वा नानाविधं वेषं संहरामि स्वलीलया ॥२२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अहमेव महाविष्णुरहमेव सदाशिवः ।
अहमेव महाशक्तिरहमेवार्य मा प्रिय ॥२३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अहमेको नृणां नाथो जातः पञ्चविधः पुरा ।
अज्ञानान्माँ न जानन्ति जगत्कारणकारणम् ॥२४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

मत्तोऽग्निरापोधरणी मत्त आकाश मारुतौ ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च लोक पालाद्दिशोदश ॥२५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

वसवो मनवो गावो मनवः पशवोऽपि च ।
सरितः सागरा यक्षा वृक्षाः पक्षिगणा अपि ॥२६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तथैक विंशतिः स्वर्गा नागाः सप्त वनानि च ।
मनुष्याः पर्वताः साध्याः सिद्धा रक्षोगणा स्तथा ॥२७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अहं साक्षी जगच्चक्षुरलिप्तः सर्वकर्मभिः ।
अविकारोऽप्रमेयोऽहमव्यक्तो विश्वगोऽव्ययः ॥२८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अहमेव परं ब्रह्माव्ययानन्दात्मकं नृप ।
मोहयत्यखिलान्मायाश्रेष्ठान्ममनरानमून् ॥२९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

सर्वदाषड्विकारेषुतानियं यो जयेद्भृशम् ।
हित्वाजपटलं जन्तुरनेकैर्जन्मभिः शनैः ॥३०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

विरज्य विन्दति ब्रह्म विषयेषु सुबोधतः ।
अच्छेद्यं शस्त्र संघातैरदाह्य मनलेन च ॥३१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अक्लेद्यं भूप भुवनैर शोष्यं मारुते न च ।
अबध्यं बध्यमानेऽपि शरीरेऽस्मिन्नराधिप ॥३२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यामिमां पुष्पितां वाचां प्रशंसन्ति श्रुतीरिताम् ।
त्रयी वादरतामूढास्ततोऽन्यन्मन्वतेऽपिन ॥३३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कुर्वन्ति सततं कर्म जन्ममृत्यु फल प्रदम् ।
स्वर्गैश्वर्यरता ध्वस्त चेतना भोग बुद्धयः ॥३४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजन में वशमानय स्वाहा ॥

संपादयन्ति ते भूप स्वात्मना निजबन्धनम् ।
संसार चक्रं युञ्जन्ति जडाः कर्मपरा नराः ॥३५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ग गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानाय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यस्य यद्विहितं कर्म तत्कर्तव्यं मदर्पणम् ।
ततोऽस्य कर्म बीजानामुच्छिन्नाः स्युर्महांकुराः ॥३६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्री ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

चित्त शुद्धिश्चमहत्ती विज्ञान साधिका भवेत् ।
विज्ञानेन हि विज्ञातं परं ब्रह्म मुनीश्वरैः ॥३७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तस्मात्कर्माणिकुर्वीत बुद्धि युक्तो नरापि ।
न त्व कर्माभवेत्कोऽपिस्व धर्म त्याग वां स्तथा ॥३८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

जहाति यदि कर्माणिततः सिद्धि न विन्दति ।
आदौ ज्ञाने नाधिकारः कर्मण्येव स युज्यते ॥३९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कर्मणा शुद्ध हृदयोऽभेद बुद्धि मुपेष्यति ।
स च योगः समाख्यातोऽमृतत्वायहि कल्पते ॥४०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

योगमन्यं प्रवक्ष्यामि शृणु भूप तमुत्तमम् ।
पशौ पुत्रे तथा मित्रे शत्रौ बन्धौ सुहृज्जने ।।४१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

बहिर्दृष्टया च समयाहृत्स्थया लोक योत्पुमान् ।
सुखे दुःखे तथाऽमर्षेहर्षे भीतौ समो भवेत् ।।४२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

रोगाप्तौ चैव भौगाप्तौ जये वा विजयेऽपि च ।
प्रियोऽप्योगे च योगे च लाभालाभे मृतावपि ।।४३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

समो मां वस्तुजातेषु पश्यन्नन्तर्बहिः स्थितम् ।
सूर्ये सोमे जले वह्नौ शिवे शक्तौ तथा निले ॥४४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

द्विजे हृदि महा नद्यां तीर्थे क्षेत्रेऽघनाशिनी ।
विष्णौ च सर्व देवेषु तथा यक्षोरगेषु च ॥४५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

गन्धर्वेषु मनुष्येषु तथातिर्यग्भवेषु च ।
सततं मां हि यः पश्येत्सोऽयं योग विदुच्यते ॥४६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

संपराहृत्य स्वार्थेभ्य इन्द्रियाणि विवेकतः ।
सर्वत्र समताबुद्धिः स योगो भूप मेमतः ॥४७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

आत्मानात्मविवेकेन या बुद्धि दैंवयोगतः ।
स्वधर्मा सक्तचित्तस्य तद्योगो योग उच्यते ॥४८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

धर्माधर्मौ जहातीह तया त्यक्त उभावपि ।
अतो योगाय युञ्जीत योगोवैधेषु कौशलम् ॥४९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

धर्माधर्मफले त्यक्त्वा मनीषी विजितेन्द्रियः ।
जन्मबन्ध विनिर्मुक्तः स्थानं संयात्यनामयम् ॥५०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यदा ह्यज्ञान कालुष्यं जन्तोर्बुद्धिः क्रमिष्यति ।
तदासौ याति वैराग्यं वेदवाक्यादिषु क्रमात् ।।५१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

त्रयी विप्रतिपन्नस्य स्थाणु त्वां यास्यते यदा ।
परात्मन्यचला बुद्धि स्तदासौ योग माप्नुयात् ।।५२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

मानसानखिलान्कामान्यदा धीमांस्त्यजेत्प्रिय ।
स्वात्मनि स्वेन संतुष्टः स्थिर बुद्धिस्तदोच्यते ।।५३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गजपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

वितृष्णः सर्व सौख्येषु नोद्विग्नो दुःख संगमे ।
गत साध्व सरूड़ागः स्थिर बुद्धि स्तदोच्यते ।।५४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यथाऽयं कमठोऽङ्गानिसंकोचयति सर्वतः ।
विषयेभ्य स्तथा खानि संकर्षेद्योगतत्परः ॥५५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

व्यावर्तन्तेऽस्य विषयास्त्यक्ता हारस्य वर्ष्मणः ।
विना रागं च रागोऽपिदृष्ट्वा ब्रह्म विनश्यति ॥५६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

विपश्चिद्यतते भूप स्थिति मास्थाय योगिनः ।
मन्थयित्वेन्द्रियाण्यस्य हरन्ति बलतो मनः ॥५७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

युक्तस्तानि वशे कृत्वा सर्वदा मत्परो भवेत् ।
संयतानीन्द्रियाणीह यस्या सौ कृतधीर्मतः ॥५८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

चिन्तयानस्य विषयान्संगस्तेषूप जायते ।
कामः संजायते तस्माततः क्रोधौऽभिवर्धते ॥५९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

क्रोधाद ज्ञान संभूति विभ्रमस्तु ततः स्मृतेः ।
भ्रंशात्स्मृतेर्मतेर्ध्वं सस्तद्भ्वंसात्सोऽपि नश्यति ।।६०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

बिना द्वेषं च रागं च गोचरान्यस्तु खैश्चरेत् ।
स्वाधीन हृदयो वश्यैः संतोषं स समृच्छति ॥६१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतयी-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

त्रिविधस्यापि दुःखस्य संतोषे विलयो भवेत्।
प्रज्ञया संस्थितश्चायं प्रसन्न हृदयो भवेत् ॥६२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

विना प्रसादं न मति विना मत्या न भावना ।
विना तां न शमो भूप विना तेन कुतः सुखम् ॥६३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

इन्द्रियाश्वान्हि चरतो विषयाननुवर्तते ।
यन्मनस्तन्मतिं हन्यादप्सुनावं मरुद्यथा ॥६४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

या रात्रिः सर्वभूतानां तस्यां निद्राति नैव सः ।
न स्वपन्तीहतो यत्र सा रात्रिस्तस्य भूमिप ॥६५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

सरितां पति मायान्ति वानानि सर्वतो यथा ।
आयान्ति यं तथा कामा न स शान्ति क्वचिल्लभेत् ॥६६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अतस्तानीह संरुध्य सर्वतः खानि मानवः ।
स्वस्वार्थेभ्यः प्रधावन्ति बुद्धिरस्य स्थिरा तदा ॥६७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ममताहंकृतीत्यक्त्वा सर्वान्कामाँश्चयस्त्यजेत् ।
नित्यं ज्ञान रतो भूत्वा ज्ञानान्मुक्ति स यास्यति ॥६८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

एवं ब्रह्मधियं भूप यो विजानाति दैवतः ।
तुर्या मवस्थां प्राप्यापि जीवन्मुक्ति प्रयास्यति ।।६९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

।। ॐ तत्सदिति श्रीमद्‌गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु
योगामृतार्थ शास्त्रे श्री मन्महागणेश पुराणे
उत्तर खण्डे बालचरिते गजानन वरेण्यं
सं० सांख्य सारार्थ योगो नाम
प्रथमोऽध्यायः ।।१।।

● ● ●

* द्वितीयोऽध्यायः *

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ज्ञान निष्ठा कर्म निष्ठा द्वयं प्रोक्तं त्वया विभो ।
अवधार्य वदैकं मे निःश्रेयसकरं नु किम् ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

गजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अस्मिश्चराचरे स्थित्यौ पुरोक्ते द्वे मयाप्रिय ।
सांख्यानां बुद्धि योगेन वैध योगेन कर्मणाम् ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतयी-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अनारम्भेण वैधानां निष्क्रयः पुरुषो भवेत् ।
न सिद्धि याति स त्यागात्केवलात्कर्मणो नृप ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कदाचिद क्रियः कोऽपि क्षणं नैवावतिष्ठते ।
अस्वतंत्रः प्रकृतिजैर्गुणैः कर्म च कार्यते ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कर्मकारीन्द्रिय ग्रामं नियम्यास्ते स्मरन्पुमान् ।
तद्गोचरान्मन्दचित्तोधिगाचारः भ भाष्यते ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तद्ग्रामं संनियम्यादौ मनसा कर्म चारभेत् ।
इन्द्रियैः कर्मयोगं यो वितृष्णः स परो नृप ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ग गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानाय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अकर्मणः श्रेष्ठतमं कर्मानीहाकृतं तु यत् ।
कर्मणः स्थितिरप्यस्या कर्मणो नैव सेत्स्यति ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

असमर्प्य निबध्यन्तो कर्म तेन जना मयि ।
कुर्वीत सततं कर्मानाशोऽसंगो मदर्पणम् ।।८।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

मदर्थे यानि कर्माणि तानि बध्नन्ति न क्वचित् ।
सवासनमिदं कर्म बध्नाति देहिनं बलात् ।।९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

वर्णासृष्ट्वावदं चाहं सयज्ञांस्तान्पुराप्रिय ।
यज्ञेन ऋद्धयतामेष कामदः कल्पवृक्षवत् ।।१०।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

सुरांश्चान्नेन प्रीणध्वं सुरास्ते प्रीणयन्तु वः ।
लभध्वं परमं स्थानमन्योन्य प्रीणनार्तिस्थरम् ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

इष्टा देवाः प्रदास्यन्ति भोगानिष्टान्सुतर्पिताः ।
तैर्दत्तांस्तान्नरस्तेभ्योऽदत्वाभुङ्क्ते स तस्करः ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

हुता वशिष्ट भोक्तारो मुक्ताः स्युः सर्व पातकैः ।
अदन्त्येनो महापापा आत्महेतोः पचन्ति ये ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ऊर्जो भवन्ति भूतानि देवादन्नस्य संभवः ।
यज्ञाच्चदेव संभूतिस्तदुत्पत्तिश्च वैधतः ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ब्रह्मणो वैधमुत्पन्नं मत्तो ब्रह्म समुद्भवः ।
अतो यज्ञे च विश्वस्मिन् स्थितं मां विद्धि भूमिप ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

संसृतीनां महाचक्रं क्रामितव्यं विचक्षणैः ।
स मुदा प्रीणते भूपेन्द्रिय क्रीडोऽधमो जनः ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अन्तरात्मनि यः प्रीत आत्मारामोऽखिल प्रियः ।
आत्म तृप्तो नरो यः स्यातस्यार्थो नैव विद्यते ॥१७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कार्याकार्यकृतीनां सनै वाप्नोति शुभाशुभे ।
किंचिदस्य न साध्यं स्या त्सर्वजन्तुषु सर्वदा ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अतोऽसक्त तया भूप कर्तव्यं कर्म जन्तुभिः ।
सक्तोऽगतिमवाप्नोति माम वाप्नोति तादृशः ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

परमां सिद्धि मापन्नाः पुरा राजर्षयो द्विजाः ।
संग्रहाय हि लोकानां तादृशं कर्म चारभेत् ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

श्रयास्यत्कुरुते कर्मतत्करोत्य खिलो जनः ।
मनुते यत्प्रमाणं सत देवानु सरत्यसौ ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

विष्टपे मे न साध्योऽस्ति कश्चिदर्थो नराधिप ।
अनलब्धश्चलब्धव्यः कुर्वे कर्म तथाप्यहम् ।।२२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

न कुर्वेऽहं यदा कर्म स्वतन्त्रोऽल सभावितः ।
करिष्यन्ति मम ध्यानं सर्ववर्णा महामते ।।२३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

भविष्यन्ति ततो लोका उच्छिन्नाः संप्रदायिनः ।
हंता स्यामस्य लोकस्य विधाता संकरस्य च ।।२४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

कामिनो हि सदा कामैरज्ञानात्कर्म कारिणः ।
लोकानां संग्रहा यैतद्विद्वान् कुर्यादसक्तधीः ।।२५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

विभिन्न त्वमति जह्यादज्ञानां कर्म चारिणाम् ।
योग युक्तः सर्वकर्माण्यर्पयेन्मयि कर्मकृत् ।।२६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

अविद्या गुण साचिव्यात्कुर्वन्कर्माण्य तन्द्रितः ।
अहंकाराद्भिन्न बुद्धि रहं कर्तेति योऽब्रवीत् ।।२७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

यस्तु वेत्त्यात्मन स्तत्त्वं विभागाद्गुण कर्मणोः ।
करणं विषये वृत्त मिति मत्वा न सज्जते ।।२८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

कुर्वन्ति सफलं कर्म गुणैस्त्रि भिर्विमोहिताः ।
अविश्वस्तः स्वात्मद्रुहो विश्वविन्नैव लङ्घयेत् ।।२९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

नित्यं नैमित्तिकं तस्मान्मयि कर्मार्पयेद् बुधः ।
त्यक्त्वाहंममता बुद्धिं परां गतिमवाप्नुयात् ॥३०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अनीर्ष्यन्तो भक्ति सन्तोषे मयोक्त मिदं शुभम् ।
अनुतिष्ठन्ति ये सर्वे मुक्तास्तेऽखिल कर्मभिः ॥३१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ये चैव नानुतिष्ठन्ति त्वा शुभाहत चैसः ।
ईर्ष्य मानान्महामूढान्नष्टांस्तान्विद्धि मेरिपून् ॥३२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तुल्यं प्रकृत्या कुरुते कर्म यज्ज्ञान वानपि ।
अनुयाति च तामे वाग्रहस्तत्र सुधामतः ॥३३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

कामश्चैव तथा क्रोधः खानामर्थेषुजायते ।
नैतयोर्वश्यतां यायादस्य विध्वंसकौ यतः ॥३४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

शस्तोऽगुणो निजोधर्मः सांगादन्यस्य धर्मतः ।
निजे तस्मिन्मृतिः श्रेयोऽपरत्रभयदः परः ॥३५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

पुमान्यत्कुरुते पापं स हि केन नियुज्यते ।
अकाङ्क्षन्नपि हेरम्ब प्रेरितः प्रबलादिव ॥३६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्री गजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कामक्रोधौ महापापौ गुणद्वय समुद्भवौ ।
नयन्तौ वश्यतां लोकान् विध्द्येतौ द्वेषिणौ वरौ ॥३७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

आवृणोति यथा माया जगद्बाष्पो जलं यथा ।
वर्षा मेघो यथा भानुं तद्वत्कामो खिलांश्चरुट् ॥३८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

प्रतिपत्तिमतो ज्ञानं छादितं सततं द्विषा ।
इच्छात्मकेन तरसा दुष्पोष्योण च शुष्मिणा ॥३९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

आश्रित्य बुद्धि मनसी इन्द्रियाणि स तिष्ठति ।
तैरेवाच्छादित प्रज्ञो ज्ञानिनं मोहयत्यसौ ॥४०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

तस्मान्नियम्य तान्यादौ स मनांसि नरो जयेत् ।
ज्ञान विज्ञानयोः शान्तिकरं पापं मनोभवम् ॥४१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

यतस्तानि पराण्या हुस्तेभ्यश्च परमं मनः ।
ततोऽपि हि परा बुद्धिरात्मा बुद्धेः परो मतः ॥४२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

बुद्ध्ववसात्मनात्मानं संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
हत्वा शत्रुं कामरूपं परं पदमवाप्नुयात् ॥४३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

॥ ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूप निषदर्थ गर्भासु योगामृतार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर खण्डे गजानन वरेण्य संवादे कर्म योगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

—❀—

तृतीयोऽध्यायः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

पुरा सर्गादि समये त्रैगुण्यं त्रितनू रहम् ।
निर्माय चैनमवदं विष्णवे योगमुत्तमम् ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अर्यम्णे सोऽब्रवीत्सोऽपि मनवे निज सूनवे ।
ततः परं परायातं विदुरे नं महर्षयः ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कालेन बहुना चायं नष्टः स्याच्चरमे युगे ।
अश्रद्धेयो ह्यविश्वास्यो विगीतव्यश्च भूमिप ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

एवं पुरातनं योगंश्रुतवानसि मन्मुखात् ।
गुह्याद्गुह्यतरं वेद रहस्यं परमं शुभम् ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

सांप्रतं चावतीर्णोऽसि गर्भतस्त्वं गजानन ।
प्रोक्तवान्कथमेतं त्वं बिष्णवे योगमुत्तमम् ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

गणेश उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अनेकानि च ते जन्मान्यतीतानि ममापि च ।
संस्मरे तानि सर्वाणि न स्मृति स्तव वर्त्तते ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

मत्त एव महाबाहो जाता विष्णवादयः सुराः ।
मय्येव च लयं यान्ति प्रलयेषु युगे युगे ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अहमेव परो ब्रह्म महारुद्रोऽहमेव च ।
अहमेव जगत्सर्वं स्थावरं जङ्गमं च यत् ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अजोऽव्ययोऽहं भूतात्माऽनादि रीश्वर एव च ।
आस्थाय त्रिगुणां मायां भवामि बहु योनिषु ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अधर्मोऽपचयो धर्मापचयो हि यदा भवेत् ।
साधून्संरक्षितुं दुष्टा स्ताडितुं संभगाम्यहम् ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

उच्छिद्या धर्म निचयं धर्मं संस्थापयामि च ।
हन्मि दुष्टांश्च दैत्यांश्च नानालीलाकरो मुदा ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वर्णाश्रमान्मुनीन्साधून्पालये बहुरुपधृक् ।
एवं यो वेत्ति संभूतीर्मम दिव्या युगे युगे ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तत्तत्कर्म च वीर्यं च मम रूपं समासतः ।
त्यक्त्वाहं ममता बुद्धि न पुनर्भूः स जायते ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

निरीहा निर्भया रोषामल्परामव्द्यपाश्रया: ।
विज्ञान तपसा शुद्धा अनेके मामुपागता: ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

येन येन हि भावेन संसेवन्ते नरोत्तमा: ।
तथा तथा फलं तेभ्य: प्रयच्छाम्यव्यय: स्फुटम् ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

जना: स्युरितरे राजन्मम मार्गानुयायिन: ।
तथैव व्यवहारं ते स्वेषु चान्येषु कुर्वते ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कुर्वन्ति देवता प्रीतिकाङ्क्षन्त: कर्मणां फलम् ।
प्राप्नुवन्तीह तेलोके शीघ्रं सिद्धिं हि कर्मजाम् ॥१७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

चत्वारो हि मया वर्णा रजः सत्वतमोंऽशतः ।
कर्मांशतश्च संतुष्टा मृत्युलोके मयानघ ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

कर्तारमपि तेषां मामकर्त्तारं विदुर्बुधाः ।
अनादिमीश्वरं नित्यमलिप्तं कर्म जैर्गुणैः ॥१९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये=-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

निरीहं योऽभिजानाति कर्म बध्नाति नैवतम् ।
चक्रुः कर्माणि बुद्धैवं पूर्वं पूर्वं मुमुक्षवः ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

वासना सहितादाद्यात्संसारकारणाद्दृढात् ।
अज्ञान बन्धनाज्जन्तुर्बुद्ध्वायं मुच्यतेऽखिलात् ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तदकर्म च कर्मापि कथयाम्यधुना तव ।
यत्र मौन गता मोहादृषयो बुद्धि शालिनः ॥२२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तत्त्वं मुमुक्षुणाज्ञेयं कर्माकर्म विकर्मणाम् ।
त्रिविधानीह कर्माणि सुनिम्नैषां गतिः प्रिय ॥२३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

क्रियायाम क्रिया ज्ञानम क्रियायां क्रियामतिः ।
यस्य स्यात्सहि मर्त्येऽस्मिँल्लोके मुक्तोऽखिलार्थकृत् ॥२४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतयो--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कर्मांकुरवि योगेन यः कर्माण्यारभेन्नरः ।
तत्वदर्शननिर्दग्धक्रियमाहुर्बुधाबुधम् ॥२५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

फल तृष्णां विहाय स्यात्सदा तृप्तो विसाधनः ।
उद्युक्तोऽपि क्रिया कर्तुं किंचिन्नैव करोति सः ॥२६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

निरीहो निगृहीतात्मा परित्यक्त परिग्रहः ।
केवलं वै गृहं कर्माचरन्नायाति पातकम् ॥२७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अद्वन्द्वोऽमत्सरो भूत्वा सिध्द्यासिध्द्योः समश्चयः ।
यथा प्राप्त्येह संतुष्टः कुर्वन्कर्म न बध्यते ॥२८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अखिलैर्विषयैर्मुक्तो ज्ञान विज्ञान वानपि ।
यज्ञार्थं तस्य सकलं कृतं कर्म विलीयते ॥२९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अहमग्निर्हविर्होताहुतं यन्मयि चार्पितम् ।
ब्रह्माप्तव्यं च तेनाथ ब्रह्मण्येव यतोरतः ॥३०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

योगिनः केचिदपरे दिष्टं यज्ञं वदन्ति च ।
ब्रह्माग्नि रेव यज्ञो वै इति केचन मेनिरे ॥३१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

संयमाग्नौ परे भूप इन्द्रियाण्युपजुह्वति ।
वाग्निष्वन्यो तद्विषयाञ्छब्दादीनुपजुह्वति ।।३२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

प्राणानामिन्द्रियाणां च परे कर्माणि कृत्स्नशः ।
निजात्मरतिरुपेऽग्नौ ज्ञानदीप्ते प्रजुह्वत्ति ।।३३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

द्रव्येण तपसा वापि स्वाध्यायेनापि केचन ।
तीव्रव्रतेन यतिनो ज्ञानेनापि यजन्ति माम् ।।३४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

प्राणेऽपानं तथा प्राणमपाने प्रक्षिपन्ति ये ।
रुद्ध्वा गतीश्चोभयोस्ते प्राणायाम परायणाः ।।३५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

जित्वा प्राणान्प्राणगतीरूपजुह्वति तेषु च ।
एवं नानायज्ञरता यज्ञध्वंसितपातकाः ।।३६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजन में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

नित्यं ब्रह्म प्रयान्त्येते यज्ञशिष्टामृताशिनः ।
अयज्ञ कारिणोलोको नायमन्यः कुतो भवेत् ।।३७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

कायिकादि त्रिधा भूत्तान्यज्ञान्वेदे प्रतिष्ठितान् ।
ज्ञात्वा तान खिलान्भूप मोक्ष्य सेऽखिलबन्धनात् ।।३८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

सर्वेषां भूप यज्ञानां ज्ञान यज्ञः परो मतः ।
अखिलं लीयते कर्म ज्ञाने मोक्षस्य साधने ।।३९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तज्ज्ञेयं पुरुष व्याघ्र प्रश्नेन नतितः सताम् ।
शुश्रूषया वदिष्यन्ति संतस्तत्त्व विशारदाः ॥४०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

नानासंगाज्जनः कुर्वन्नेकं साधु समागमम् ।
करोति तेन संसारे बन्धनं समुपैत्ति सः ॥४१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

सत्संगाद्गुण संभूतिरापदां लय एव च ।
स्वाहितं प्राप्यते सर्वैरिह लोके परत्रच ॥४२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

इतरत्सुलभं राजन्सत्संगोऽतीव दुर्लभः ।
यज्ज्ञात्वान पुनर्बन्धमेति ज्ञेयं ततस्ततः ॥४३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ततः सर्वाणि भूतानि स्वात्मन्ये वाभि पश्यति ।
अति पाप रतो जन्तु स्तत स्तस्मात्प्रमुच्यते ॥४४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

द्विविधान्यपि कर्माणि ज्ञानाग्निर्दहत्ति क्षणात् ।
प्रसिद्धोऽग्निर्यथा सर्वं भस्मतां नयत्ति क्षणात् ॥४५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

न ज्ञान समतामेत्ति पवित्रमितरन्नृप ।
आत्मन्येवावगच्छन्ति योगात्कालेन योगिनः ॥४६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

भक्तिमानिन्द्रियजयी तत्परो ज्ञान माप्नुयात् ।
लब्ध्वा तत्परमं मोक्षं स्वल्प कालेन यात्यसौ ॥४७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

भक्ति हीनोऽश्रद्दधानः सर्वत्र संशयी तु यः ।
तस्यशं नापि विज्ञानमिह लोकोऽथ वा परः ॥४८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

आत्मज्ञान रतंज्ञान नाशिताखिल संशयम् ।
योगास्ताखिल कर्माणं बध्नन्ति भूप तानि न ॥४९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ज्ञानखड्ग प्रहारेण संभूतामज्ञतां बलात् ।
छित्त्वान्तः संशयं तस्माद्योग युक्तो भवेन्नरः ॥५०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु
योगामृतार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर०
श्रीमद्गजाननवरेण्य संवादे विज्ञान प्रति
पादनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

—•—

* चतुर्थोऽध्यायः *

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

संन्यस्तिश्चैव योगश्च कर्मणा वर्ण्यते त्वया ।
उभयोर्निश्चितं त्वेकं श्रेयो यद्वद मे प्रभो ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

क्रियायोगो वियोगश्चाप्युभौ मोक्षस्य साधने ।
तयो र्मध्ये क्रियायोगस्त्यागात्तस्य विशिष्यते ।।२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

द्वन्द्व दुःख सहोऽद्वेष्टा यो न काङ्क्षति किंचन ।
मुच्यते बन्धनात्सद्यो नित्यं संन्यास वान्सुखम् ।।३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

वदन्ति भिन्न फलकौ कर्मणस्त्याग संग्रहौ ।
मूढाल्पज्ञास्तयोरेकं संयुञ्जीत विचक्षणः ।।४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यदेव प्राप्यते त्यागात्तदेव योगतः फलम् ।
संग्रहं कर्मणो योगं यो विन्दति स विन्दति ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

केवलं कर्मणां न्यासं संन्यासं न विदुर्बुधाः ।
कुर्वन्ननिच्छया कर्म योगी ब्रह्मैव जायते ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

निर्मलो यत चित्तात्मा जितखो योग तत्परः ।
आत्मानं सर्वभूतस्थं पश्यन्कुर्वन्न लिप्यते ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तत्वविद्योगयुक्तात्मा करोमीति न मन्यते ।
एकादशानीन्द्रियाणि कुर्वन्ति कर्मसंख्यया ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तत्सर्वमर्पयेद्ब्रह्मण्यपि कर्म करोति यः ।
न लिप्यते पुण्य पापैर्भानुर्जलगतो यथा ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कायिकं वाचिकं बौद्धमैन्द्रियं मानसं तथा ।
त्यक्त्वाशां कर्म कुर्वन्ति योगज्ञाश्चित्त शुद्धये ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

योगहीनो नरः कर्म फले हया करोत्यलम् ।
बध्यते कर्मबीजैः स ततो दुःखं समश्नुते ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

मनसा सकलं कर्म त्यक्त्वा योगी सुखं वसेत् ।
न कुर्वन्कार यन्वापि नन्दन्श्वभ्रे सुपत्तने ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

न क्रिया न च कर्तृत्वं कस्य चित्सृज्यते मया ।
न क्रिया बीज संपर्कः शक्त्या तत्क्रियतेऽखिलम् ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

कस्यचित्पुण्य पापानि न स्पृशामि विभुर्नृप ।
ज्ञानमूढा बिमुह्यन्ते मोहेना वृत्त बुद्धयः ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये=-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

विवेकेनात्मनोऽज्ञानं येषां नाशितमात्मना ।
तेषां विकाश मायाति ज्ञान मादित्य वत्परम् ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

मन्निष्ठामद्धियोऽष्यन्तं मच्चित्ता मयि तत्पराः ।
अपुनर्भवमायान्ति विज्ञानान्नाशितैनसः ।।१६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ज्ञान विज्ञान संयुक्ते द्विजे गवि गजादिषु ।
समेक्षणा महात्मानः पण्डिताः श्वपचेशुनि ।।१७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

वश्यः स्वर्गो जगत्तेषां जीवन्मुक्ताः समेक्षणाः ।
यतोऽदोष ब्रह्म समं तस्मात्तैर्विषयीकृतम् ।।१८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

प्रियाप्रिये प्राप्य हर्षद्वेषौ ये प्राप्नुवन्ति न ।
ब्रह्माश्रिता असमूढा ब्रह्मज्ञाः समबुद्धयः ।।१९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

किं सुखं त्रिषु लोकेषु देवगन्धर्व योनिषु ।
भगवन्कृपया तन्मेवद विद्या विशारद ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्री गजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

आनन्दमश्नुतेऽसक्तः स्वात्मारामो निजात्मनि ।
अविनाशि सुखं तद्धि न सुखं विषयादिषु ॥२१॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

विषयोत्थानि सौख्यानि दुःखानां तानि हेतवः ।
उत्पत्ति नाश युक्तानि तत्रासक्तो न तत्त्ववित् ॥२२॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कारणे सति कामस्य क्रोधस्य सहते च यः ।
तौ जेतुं वर्ष्म विरहात्स सुखं चिरमश्नुते ॥२३॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अन्तर्निष्ठोऽन्तः प्रकाशोऽन्तः सुखोऽन्त रतिर्लभेत् ।
असंदिग्धोऽक्षयं ब्रह्म सर्वभूतहितार्थ कृत् ॥२४॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

जेतारः षड्रिपूणां ये शमिनो दमिनस्तथा ।
तेषां समंततो ब्रह्म स्वात्मज्ञानां विभात्यहो ॥२५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

आसनेषु समासीनस्त्यक्त्वे मान्विषयान्बहिः ।
संस्तभ्य भृकुटी मास्ते प्राणायाम परायणः ॥२६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

प्राणायाम तु संरोधं प्राणापान समुद्भवम् ।
वदन्ति मुनयस्तं च त्रिधाभूतं विपश्चितः ॥२७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

प्रमाणं भेदतो विद्धि लघु मध्यममुत्तमम् ।
दशभिर्द्व्यधिकैर्वर्णैः प्राणायामो लघुः स्मृतः ॥२८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

चतुर्विंशत्यक्षरो यो मध्यमः स उदाहृतः ।
षट्त्रिंशल्लघुवर्णो य उत्तमः सोऽभिधीयते ॥२९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

सिंहं शार्दूलकं वापि मत्तेभं मृदुतां यथा ।
नयन्ति प्राणिनस्तद्वत्प्राणापानौ सुसाधयेत् ॥३०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

पीडयन्ति मृगांस्तेन लोकान्वश्यंगतान्नृप ।
दहत्येन स्तथा वायुः संस्तब्धोन च तत्तनुम् ॥३१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यथा यथा नरः कश्चित्सोपानावलिमाक्रमेत् ।
तथा तथा वशीकुर्यात्प्राणापानौ हि योगवित् ॥३२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

पूरकं कुम्भकं चैवरेचकं च ततोऽभ्यसेत् ।
अतीतानागत ज्ञानी ततः स्याज्जगतीतले ॥३३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

प्राणायामै द्वादशभिरुत्तमैर्धारणा मता ।
योगस्तु धारणे द्वे स्याद्योगीशस्ते सदाभ्यसेत् ॥३४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

एवं यः कुरुते राजंस्त्रि कालज्ञः स जायते ।
अनायासेन तस्य स्याद्वश्यं लोकत्रयं नृप ॥३५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ब्रह्मरूपं जगत्सर्वं पश्यति स्वान्तरात्मनि ।
एवं योगश्च संन्यासः समानफल दायिनौ ॥३६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

जन्तूनां हितकर्तारं कर्मणां फलदायिनम् ।
मां ज्ञात्वा मुक्ति माप्नोति त्रैलोयक्यस्येश्वरं विभुम् ॥३७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु
योगामृतार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर०
श्रीगजाननवरेण्य संवादे वैधसंन्यास
योगोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

—●—

❋ पञ्चमोऽध्यायः ❋

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रौतस्मार्त्तानि कर्माणि फलं नेच्छन्समाचरेत् ।
शस्तः स योगी राजेन्द्र अक्रियाद्योगमाश्रितात् ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

योग प्राप्त्यै महाबाहो हेतुः कर्मैव मे मतम् ।
सिद्धियोगस्य संसिध्द्यै हेतु शमदमौ मतौ ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

इन्द्रियार्थांश्च संकल्प्य कुर्वन्स्वस्यरिपुर्भवेत् ।
एतानन्निच्छन्यः कुर्वन्सिद्धि योगी स सिध्द्यति ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

सुहृत्वे च रिपुत्वे च उद्धारे चैव बन्धने ।
आत्मनैवात्मनो ह्यात्मा नात्मा भवति कश्चन ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

मानेऽपमाने दुःखे च सुखे सुहृदि साधुषु ।
मित्रेऽमित्रेऽप्युदासीने द्वेष्ये लोष्टे च काञ्चने ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

समो जितात्मा विज्ञानी ज्ञानीन्द्रियजया वहः ।
अभ्य सेत्सततं योगं यदा युक्ततमो हि सः ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तप्तः श्रान्तो व्याकुलो वा क्षुधि तो व्यग्र चितकः ।
कालेऽति शीतेऽत्युष्णे वानिलाग्न्यम्बु समाकुले ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

सध्वनावतिजीर्णे गोः स्थाने साग्नौ जलान्तिके ।
कूप कूले श्मशाने च नद्यां भितौ च मर्मरे ।।८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

चैत्ये सवल्मिके देशे पिशाचादि समावृत्ते ।
नाभ्यसेद्योग विद्योगं योग ध्यान परायणः ।।९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

स्मृति लोपश्च मूकत्वं बाधिर्यं मन्दता ज्वरः ।
जडता जायते सद्यो दोषाज्ञानाद्धि योगिनः ।।१०।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

एते दोषाः परित्याज्या योगाभ्यसनशालिना ।
अनादरे हि चैतेषां स्मृतिलोपादयो ध्रुवम् ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

नातिभुञ्जन्सदा योगी नाभुञ्जन्नातिनिद्रितः ।
नाति जाग्रत्सिद्धिमेति भूप योगं सदाभ्यसन् ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

संकल्पजांस्त्यजेत्कामान्नियताहारजागरः ।
नियम्य खगणं बुध्द्या विरमेत शनैः शनैः ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ततस्ततः कृषेदेतद्यत्र यत्रानुगच्छति ।
धृत्यात्म वशगं कुर्याच्चितं चञ्चल मारुतः ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

एवं कुर्वन्सदा योगी परां निर्वृत्ति मृच्छति ।
विश्वस्मिन्निजमात्मानं विश्वं च स्वात्मनीक्षते ।।१५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

योगेन यो मामुपैति तमुपैम्यह मादरात् ।
मोचयामि न मुञ्चामि तमहं मां स न त्यजेत् ।।१६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

सुखेऽसुखेतरे द्वेषे क्षुधि तोषे समस्तृषि ।
आत्मसाम्येन भूतानि सर्वगं मां च वेत्ति यः ।।१७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये=-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

जीवन्मुक्तः स योगीन्द्रः केवलं मयि संगतः ।
ब्रह्मादीनां च देवानां स वंद्यः स्याज्जगत्त्रये ।।१८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

द्विविधोऽपि हि योगोऽयमसंभाव्यो हि मे मतः ।
यतोऽन्तःकरणं दुष्टं चञ्चलं दुर्ग्रहं विभो ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

यो निग्रहं दुर्ग्रहस्य मनसः संप्रकल्पयेत् ।
घटी यन्त्र समादस्मान्मुक्तः संसृतिचक्रकात् ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

विषयैः क्रकचैरेतत्संसृष्टं चक्रकं दृढम् ।
जनश्छेत्तुं न शक्नोति कर्मकीलैः सुसंवृतम् ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अति दुःखं च वैराग्यं भोगाद्वैतृष्ण्य मेव च ।
गुरू प्रसादः सत्सङ्ग उपायास्तज्जये अमी ॥२२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अध्यासाद्वा वशी कुर्यान्मनो योगस्य सिद्धये ।
वरेण्य दुर्लभो योगो विनास्य मनसो जयात् ॥२३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

योगभ्रष्टस्य को लोकः का गतिः किं फलं भवेत् ।
विभो सर्वज्ञ मे छिन्धि संशयं बुद्धि चक्रभृत् ।।२४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

दिव्य देह धरो योगाद्भ्रष्टः स्वर्भोग मुत्तमम् ।
भुक्त्वा योगिकुले जन्म लभेच्छुद्धिमतां कुले ।।२५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

पुनर्योगी भबत्येष संस्कारात्पूर्व कर्मजात् ।
न हि पुण्य कृतां काश्चिन्नरकं प्रति पद्यते ॥२६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ज्ञान निष्ठातपो निष्ठात्कर्म निष्ठान्नराधिप ।
श्रेष्ठो योगी श्रेष्ठ तमोभक्तिमान्मयि तेषुयः ॥२७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु
योगामृत्तार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर खण्डे
गजाननवरेण्य संवादे योगावृत्ति
प्रशंसनोनाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

—●—

* षष्ठोऽध्याय: *

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ईदृशं विद्धि मे तत्त्वं मद्गतेनान्तरात्मना ।
यज्ज्ञात्वा माम संदिग्धं वेत्सि मोक्ष्य सिसर्वगम् ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तत्तेऽहं श्रृणु वक्ष्यामि लोकानां हित काम्यया ।
अस्ति ज्ञेयं यतो नान्यन्मुक्तेश्च साधनं नृप ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ज्ञेया मत्प्रकृति: पूर्वं तत्त: स्याज्ज्ञान गोचर: ।
ततो विज्ञान संपत्तिर्मयि ज्ञाते नृणां भवेत् ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

क्वनलौ खमहंकारः कं चित्तं धी समीरणौ ।
रवीन्दू यागकृच्चैकादशधा प्रकृत्तिर्मम ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अन्यांमत्प्रकृतिं वृद्धा मुनयः संगिरन्ति च ।
तथा त्रिविष्ट पं व्याप्तं जीवत्वं गतयानया ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

आभ्यामुत्पाद्यते सर्वं चराचरमयं जगत् ।
संगाद्विश्वस्य संभूतिः परित्राणं लयोऽप्यहम् ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तत्वमेतन्निबोद्धुं मे यतते कश्चिदेव हि ।
वर्णाश्रमवतां पुंसां पुरा चीर्णेन कर्मणा ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

साक्षात्करोति मां कश्चिद्यत्न वत्स्वपितेषु च ।
मत्तोऽन्यन्नेक्षते किंचिन्मयि सर्वं च वीक्षते ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

क्षितौ सुगन्ध रुपेण तेजो रुपेण चाग्निषु ।
प्रभा रुपेण पूष्ण्यब्जे रस रुपेण चाप्सु च ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

धीतपो बलिनां चाहं धीस्तपोबल मेव च ।
त्रिविधेषु विकारेषु मदुत्पन्नेष्वहं स्थितः ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

न मां विन्दति पापी यान्माया मोहित चेतनः ।
त्रिविकारा मोहयति प्रकृतिर्मे जगत्त्रयम् ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यो मे तत्त्व विजानाति मोहं त्यजति सोऽखिलम् ।
अनेकैर्जन्मभिश्चैवं ज्ञात्वा मां मुच्यते ततः ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अन्ये नाना विधान्देवान्भजन्ते तान्व्रजन्ति ते ।
यथा यथा मतिं कृत्वा भजते मां जनोऽखिलः ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तथा तथास्य तं भावं पूरयाम्यहमेव तम् ।
अहं सर्वं विजानामि मां न कश्चिद्विबुध्यते ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अव्यक्तं व्यक्ति मापन्नं न विदुः काम मोहिताः ।
नाहं प्रकाशतां यामि अज्ञानां पापकर्मणाम् ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यः स्मृत्वा त्यजति प्राणमन्ते मां श्रद्धयान्वित. ।
स यात्यपुनरावृत्ति प्रसादान्मम भू भुज ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यं यं देवं स्मरन्भक्तया त्यजति स्वं कलेवरम् ।
तत्तत्सालोक्य मायाति तत्तद्भक्त्या नराधिप ॥१७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अतश्चाहर्निशं भूप स्मर्त व्योऽनेकरूपवान् ।
सर्वेषामप्यहं गम्यः स्रोत सामर्णवो यथा ।।१८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ब्रह्म विष्णु शिवेन्द्राद्याँल्लोकान्प्राप्य पुनः पतेत् ।
यो मामुपैत्य संदिग्धः पतनं तस्य न क्वचित् ।।१९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

अनन्यशरणो यो मां भक्त्या भजति भूमिप ।
योग क्षेमौ च तस्याहं सर्वदा प्रतिपादये ।।२०।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

विविधा गति रुद्दिष्टा शुल्का कृष्णा नृणां नृप ।
एकया परमं ब्रह्म परया याति संसृतिम् ।।२१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूपनिषदर्थं गर्भासु
योगामृतार्थं शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर
खण्डे श्री गजानन वरेण्य संवादे
बुद्धियोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

—●—

* सप्तमोऽध्यायः *

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

का शुक्ला गति रुदिष्टा का च कृष्णा गजानन ।
किं ब्रह्म संसृतिः का मे वक्तुमर्हस्यनुग्रहात् ।।१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

श्री गजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अग्नि ज्योतिरहः शुक्ला कर्मार्हमयनं गतिः ।
चान्द्रं ज्योतिस्तथा धूमो रात्रिश्च दक्षिणायनम् ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कृष्णैते ब्रह्म संसृत्योरवाप्तेः कारणं गती: ।
दृश्यादृश्यमिदं सर्वं ब्रह्मैवेत्यवधारय ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

क्षरं पञ्चात्मकं विद्धि तदन्तरक्षरं स्मृतम् ।
उभाभ्यां यदतिक्रान्तं शुद्धं विद्धि सनातनम् ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अनेक जन्म संभूतिः संसृतिः परिकीर्तिता ।
संसृतिं प्राप्नुवन्त्येते ये तु मां गणयन्ति ते ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ये मां सम्यगुपासन्ते परं ब्रह्म प्रयान्ति ते ।
ध्यानाद्यै रूपचारैर्मां तथा पञ्चामृतादिभिः ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

स्नान वस्त्राद्यलंकार सुगन्ध धूप दीपकैः ।
नैवेद्यैः फलताम्बूलैर्दक्षिणाभिश्च योऽर्चयेत् ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

भक्त्यैक चेतसा चैव तस्येष्टं पूरयाम्यहम् ।
एवं प्रतिदिनं भक्त्या मद्भक्तो मां समर्चयेत् ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अथवा मानसीं पूजां कुर्वीत स्थिर चेतसा ।
अथवा फलपत्राद्यैः पुष्प मूल जलादिभिः ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

पूजयेन्मां प्रयत्नेन तत्तदिष्टं फलं लभेत् ।
त्रिविधास्वपि पूजासु श्रेयसी मानसी मत्ता ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

साप्युत्तमा मता पूजानिच्छया या कृता मम ।
ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थो यतिश्च यः ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

एकां पूजां प्रकुर्वाणोऽप्यन्यो वा सिद्धि मृच्छति ।
मद्न्यदेव यो भक्त्या द्विषन्मामन्य देवताम् ।।१२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

सोऽपि मामेव यजते परं त्वविधितो नृप ।
यो ह्यन्यदेवतां मां च द्विषन्नन्यां समर्चयेत् ।।१३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

याति कल्प सहस्त्रं स निरयान्दुःखभाक् सदा ।
भूतशुद्धि विधायादौ प्राणानां स्थापनं ततः ।।१४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

आकृष्य चेतसो वृतिं ततो न्यास मुप क्रमेत् ।
कृत्वान्त र्मातृका न्यासं बहिश्चाथ षडङ्गकम् ।।१५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

न्यासं च मूल मंत्रस्य ततो ध्यात्वा जपेन्मनुम् ।
स्थिरचित्तो जपेन्मन्त्रं यथा गुरू मुखागतम् ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

जपं निवेद्य देवाय स्तुत्वा स्तोत्रैरनेकधा ।
एवं मां य उपासीत स लभेन्मोक्षमव्ययम् ॥१७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

य उपासनया हीनोधिङ्नरो व्यर्थजन्मभाक् ।
यज्ञोऽहमौषधं मन्त्रोऽग्निराज्यं च हविर्हुतम् ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ध्यानं ध्येयं स्तुतिं स्तोत्रं नतिर्भक्तिरुपसना ।
त्रयी ज्ञेयं पवित्रं च पितामह पितामहः ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐकारः पावनः साक्षी प्रभुर्मित्रं गतिर्लयः ।
उत्पत्तिः पोषको बीजं शरणं वास एव च ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

असन्मृत्युः सदमृतमात्मा ब्रह्माहमेव च ।
दानं होम स्तपो भक्तिर्जपः स्वाध्याय एव च ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यद्यत्करोति तत्सर्वं स मे मयि निवेदयेत् ।
योषितोऽथ दुराचाराः पापास्त्रैवर्णिकास्तथा ॥२२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

मदाश्रया विमुच्यन्ते किं मद्भक्त्या द्विजादयः ।
न विनश्यति मद्भक्तो ज्ञात्वेमा मद्वि भूतयः ॥२३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

प्रभवं मे विभूतीश्च न देवा ऋषयो विदुः ।
नाना विभूतिभि रहं व्याप्य विश्वं प्रतिष्ठितः ॥२४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

यद्यच्छ्रेष्ठतमं लोके सा विभूति र्निबोध मे ॥२५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु
योगामृतार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर खण्डे
श्री गजाननवरेण्य संवादे उपासनायोगो
नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

—●—

* नामाष्टमोऽध्यायः *

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

भगवन्नारदो मह्यं तव नाना विभूतयः ।
उक्तवांस्ता अहं वेद न सर्वाः सोऽपि वेत्ति ताः ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

त्वमेव तत्त्वतः सर्वा वेत्सि ता द्विरदानन ॥
निजं रुपमिदानीं मे व्यापकं चारु दर्शय ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

एकस्मिन्मयि पश्य त्वं विश्व मेतच्चराचरम् ।
नानाश्चर्याणि दिव्यानि पशुदृष्टानिकेनचित् ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ज्ञानचक्षुरहं तेऽद्य सृजामि स्वप्रभावत: ।
चर्म चक्षु: कथं पश्येन्मां विभुं ह्ययजम व्ययम् ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

क उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ततो राजा वरेण्यः स दिव्य चक्षुरवैक्षत ।
ईशितुः परमं रूपं गजास्यस्य महाद्भुतम् ।।५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

असंख्यवक्त्रं ललितम संख्याङ्घ्रिकरं महत् ।
अनुलिप्तं सुगन्धेन दिव्य भूषाम्बरस्त्रजम् ।।६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

असंख्यनयनं कोटि सूर्य रश्मि धृतायुधम् ।
तद्धर्मणि त्रयो लोका हृष्टास्तेन पृथग्विधाः ।।७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

दृष्ट्वेश्वरं परं रूपं प्रणम्य सनृपोऽब्रवीत् ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

वीक्षेऽहंतव देहेस्मिन्देवान् ृषि गणान्पितॄ न् ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

पातालानां समुद्राणां द्वीपानां चैव भूभृताम् ।
महर्षीणां सप्तकं च नानार्थैः संकुलं विभो ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

भुवोऽन्तरिक्षं स्वर्गश्च मनुष्यो रगराक्षसान् ।
ब्रह्म विष्णु महेशेन्द्रान्देवान्जन्तू ननेकधा ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

अनाद्यनन्तं लोकादि मनन्त भुज शीर्षकम् ।
प्रदीप्तानल संकाशम प्रमेय पुरातनम् ।।११।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

किरीट कुण्डलधरं दुर्निरीक्ष्यं मुदावहम् ।
एतादृशं च वीक्षे त्वां विशाल वक्षसं प्रभुम् ।।१२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा ।।

सुर विद्याधरैर्यक्षैः किन्नरैर्मुनि मानुषैः ।
नृत्यद्भिरप्सरोभिश्च गन्धर्वै गानतत्परैः ।।१३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

वसुरुद्रादित्यगणैः सिद्धैः साध्यैर्सुदा युतैः ।
सेव्यमानं महाभक्त्या वीक्ष्य माणं सुविस्मितैः ।।१४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

वेत्तारमक्षरं वेद्यं धर्म गोप्तारमीश्वरम् ।
पातालानि दिशः स्वर्गान्भुवं व्याप्याखिलं स्थितम् ।१५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

भीता लोकास्तथा चाहमेवं त्वां वीक्ष्य रूपिणम् ।
नाना दंष्ट्रा करालं च नाना विद्या विशारदम् ।।१६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

प्रलयानल दीप्तास्यं जटिलं च नभः स्पृशम् ।
दृष्ट्वा गणेश ते रूपमहं भ्रान्त इवाभवम् ।।१७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

देवा मनुष्या नागाद्याः खलास्त्व दुदरेशयाः ।
नाना योनि भुजश्चान्ते त्वय्येव प्रविशंति च ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अब्धेरुत्पद्यमानास्ते यथा जीमूत बिन्दवः ।
त्वामिन्द्रोऽग्निर्यमश्चैवा निऋ॑त्तिर्वरुणोमरुत् ॥१९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

गुह्यकेशस्तथेशानः सोमः सूर्योऽखिल जगत् ।
नमामि त्वामत्तः स्वामिन्प्रसादं कुरु मेऽधुना ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

दर्श यस्व निजं रुपं सौम्यं यत्पूर्वमीक्षितम् ।
को वेद लीलास्ते भूमन् क्रियमाणा निजेच्छया ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

अनुग्रहान्मया दृष्ट मैश्वरं रुपमीदृशम् ।
ज्ञान चक्षुर्यतो दत्तं प्रसन्नेन त्वया मम ।।२२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

श्री गजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

नेदं रूपं महाबाहो मम पश्यन्त्य योगिनः ।
सनकाद्या नारदाद्याः पश्यन्ति मदनुग्रहात् ।।२३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

चतुर्वेदार्थ तत्वज्ञाश्चतुः शास्त्र विशारदाः ।
यज्ञदान तपोनिष्ठान मे रूपं विदन्ति ते ।।२४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

शक्योऽहं वीक्षितुं ज्ञातुं प्रवेष्टुं भक्ति भावतः ।
त्यज भीतिं च मोहं च पश्य मां सौम्यरुपिणम् ।।२५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

मद्भक्तो मत्परः सर्व संगहीनो मदर्थकृत् ।
निष्क्रोधः सर्व भूतेषु समो मामेति भू भुज ।।२६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु
योगामृतार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर
खण्डे श्री गजानन वरेण्य संवादे
विश्वरुपदर्शनो नामाष्टमोऽध्यायः ।।८।।

—●—

* नवमोऽध्यायः *

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अनन्य भावस्त्वां सम्यङ्भूर्तिमन्तमुपासते ।
योऽक्षरं परमं व्यक्तं तयोः कस्ते मतोऽधिकः ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

असित्वं सर्ववित्साक्षी भूत भावन ईश्वरः ।
अतस्त्वां परिपृच्छामि वद मे कृपया विभो ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

यो मां मूर्तिधरं भक्त्या मद्भक्तः परिसेवते ।
स मे मान्योऽनन्य भक्ति नियुज्य हृदयंमयि ।।३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

खगणं स्ववशं कृत्वा खिल भूत हितार्थकृत् ।
ध्येय मक्षर मव्यक्तं सर्वगं कूटगं स्थिरम् ।।४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

सोऽपि मामेत्य निर्देश्यं मत्परो य उपासते ।
संसार सागरादस्मादुद्धरामि तमप्यहम् ।।५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अव्यक्तोपासना दुःख मधिकं तेन लभ्यते ।
व्यक्तस्योपासनात्साध्यं तदेवा व्यक्त भक्तितः ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

भक्तिश्चैवादरश्चात्र कारणं परमं मतम् ।
सर्वेषां विदुषां श्रेष्ठो ह्यकिंचिज्ज्ञोऽपि भक्तिमान् ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

भजन्भक्त्या विहीनो यः स चाण्डालोऽभिधीयते ।
चाण्डालोपि भजन्भक्त्या ब्राह्मणेभ्योऽधिको मम ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

शुकाद्याः सनकाद्याश्च पुरा मुक्ता हि भक्तितः ।
भक्त्यैव मामनु प्राप्ता नारदाद्याश्चिरायुषः ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अतो भक्त्या मयि मनो निधेहि बुद्धि मेव च ।
भक्त्या यजस्व मां राजं स्ततो मामेव यास्यसि ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

असमर्थोऽपितुं स्वान्त मेवं मयि नराधिप ।
अभ्यासेन च योगेन ततो गन्तुं यतस्व माम् ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तत्रापि त्वमशक्तश्चेत्कुरु कर्म मदर्पणम् ।
ममानुग्रहतश्चैवं परां निर्वृत्ति मेष्यसि ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अथैतदप्यनुष्ठातुं न शक्तोऽसि तदाकुरु।
प्रयत्नतः फलत्यागं त्रिविधानां हि कर्मणाम् ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

श्रेयसी बुद्धिरावृत्ते स्ततो ध्यानं परं मतम्।
ततोऽखिल परि त्यागस्ततः शान्तिर्गरीयसी ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

निरहंममताबुद्धिरद्वेषः करुणा समः।
लाभालाभे सुखे दुःखे मानामाने समे प्रियः ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

यं वीक्ष्य न भयं याति जनस्तस्मान्न च स्वयम्।
उद्वेगभीः कोपमुद्भी रहितो यः स मे प्रियः ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

रिपौ मित्रेऽथ गर्हाया स्तुतौ शोके समः समुत् ।
मौनी निश्चल धीर्भक्तिरसंगः स च मे प्रियः ॥१७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

संशीलयति यश्चैनमुपदेशं मया कृतं ।
स वंद्यः सर्वलोकेषु मुक्तात्मा मे प्रियः सदा ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अनिष्टाप्तौ च न द्वेष्टीष्ट प्राप्तौ न च तुष्यति ।
क्षेत्रतज्ज्ञो च यो वेत्ति स मे प्रियतमो भवेत् ॥१९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वरेण्य उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

किं क्षेत्रं कश्च तद्वेत्ति किं तज्ज्ञानं गजानन ।
एतदा चक्ष्व मह्यं त्वं पृच्छते करुणाम्बुधे ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

पञ्च भूतानि तन्मात्राः पञ्च कर्मेन्द्रियाणि च ।
अहंकारो मनो बुद्धिः पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि च ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

इच्छा व्यक्तं धृत्ति द्वेषौ सुखदुःखे तथैव च ।
चेतना सहितश्चायं समूहः क्षेत्र मुच्यते ॥२२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
तज्ज्ञं त्वं विद्धि मां भूप सर्वान्तर्यामिणं विभुम् ।
अयं समूहोऽहं चापि यज्ज्ञान विषयौ नृप ।।२३।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
आर्जवं गुरुशुश्रूषा विरक्तिश्चेन्द्रियार्थतः ।
शौचं क्षान्तिरदंभश्च जन्मादि दोषवीक्षणम् ।।२४।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
समदृष्टि दृढा भक्ति रेकान्तित्वं शमो दमः ।
एतैर्यच्च युतं ज्ञानं तज्ज्ञानं बिद्धि बाहुज ।।२५।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

तज्ज्ञान विषयं राजन्ब्रवीमि त्वं श्रृणुष्व मे ।
यज्ज्ञात्वैति च निर्वाणं मुक्त्वा संसृति सागरम् ।।२६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

यदनादीन्द्रियैर्हीनं गुण भुग्गुण वर्जितम् ।
अव्यक्तं सदसद्भिन्नमिन्द्रि यार्थाव भासकम् ।।२७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

विश्वभृच्चाखिल व्यापि त्वेकं नानेव भासते ।
बाह्याभ्यन्तरतः पूर्ण मसंगं तमसः परम् ।।२८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

दुर्ज्ञेयं चाति सूक्ष्मत्वाद्दीप्तानामपि भासकम् ।
ज्ञेय मेतादृशं विद्धि ज्ञान गम्यं पुरातनम् ।।२९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये—
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

एतदेव परं ब्रह्म ज्ञेय मात्मा परोऽव्ययः ।
गुणान्प्रकृत्तिजान्भुङक्ते पुरुषः प्रकृतेः परः ।।३०।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये—
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये—
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

गुणैस्त्रिभिरियं देहे बध्नाति पुरुषं दृढम् ।
यदा प्रकाशः शान्तिश्च वृद्धे सत्वेतदाधिकम् ।।३१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये—
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये—
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

लोभोऽशमः स्पृहारंभः कर्मणां रजसो गुणः ।
मोहो प्रवृत्तिश्चाज्ञानं प्रमादस्तमसो गुणः ।।३२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये—
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये—
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

सत्वाधिकः सुखं ज्ञानं कर्मसंगं रजोऽधिकः ।
तमोऽधिकश्च लभते निन्द्रालस्यं सुखेतरत् ।।३३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

एषु त्रिषु प्रवृद्धेषु मुक्ति संसृति दुर्गतीः ।
प्रयान्ति मानवा राजं स्तस्मात्सत्व युतो भव ॥३४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ततश्च सर्वभावेन भज त्वं मां नरेश्वर ।
भक्त्या चाव्यभिचारिण्या सर्वत्रैव च संस्थितम् ॥३५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अग्नौ सूर्ये तथा सोमे यच्च तारासु संस्थितम् ।
विदुषि ब्राह्मणे तेजो विद्धि तन्मामकं नृप ॥३६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अहम्नो नाखिलं विश्वं सृजामि विसृजामि च ।
औषधी स्तेजसा सर्वा विश्वं चाप्याययाम्हम् ।।३७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

सर्वेन्द्रियाण्यधिष्ठाय जाठरं च धनंजयम् ।
भुनज्मि चाखिलान्भोगान्पुण्य पाप विवर्जितः ।।३८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

अहं विष्णुश्च रुद्रश्च ब्रह्मा गौरी गणेश्वरः ।
इन्द्राद्या लोकपालाश्च ममैवांश समुद्भवाः ।।३९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

येन येन हि रुपेण जनो मां पर्युपासते ।
तथा तथा दर्शयामि तस्मै रुपं सुभक्तितः ।।४०।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

इति क्षेत्रं तथा ज्ञाता ज्ञानं ज्ञेयं मयेरितम् ।
अखिलं भूपते सम्यगुपपन्नाय पृच्छते ।।४१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ तत्सदिति श्री मद्गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु योगामृत्तार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर खण्डे श्री गजानन वरेण्य संवादे क्षेत्र ज्ञातृज्ञेय विवेकयोगो नाम नवमोऽध्यायः ।।९।।

—•—

* दशमोऽध्यायः *

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

श्रीगजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

दैव्यासुरी राक्षसी च प्रकृतिस्त्रिविधा नृणाम् ।
तासां फलानि चिह्नानि संक्षेपात्तेऽधुनाब्रुवे ॥१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

आद्या संसाध येन्मक्ति द्वे परे बन्धनं नृप ।
चिह्नं ब्रवीमि चाद्यायास्तन्मे निगदतः श्रृणु ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनंमें वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अपैशून्यं दया क्रोधश्चापल्यं धृति रार्जवम् ।
तेजोऽभय महिंसा च क्षमा शौचममानिता ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

इत्यादि चिह्न माद्याया आसुर्याः श्रृणु सांप्रतम् ।
अतिवादोऽभिमानश्च दर्पो ज्ञानं सकोपता ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

आसुर्या एव माद्यानि चिह्नानि प्रकृतो नृप ।
निष्ठुरत्वं मदो मोहोऽहंकारो गर्व एव च ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

द्वेषो हिंसाऽदया क्रोध औद्धत्यं दुर्विनीतता ।
आभिचारिक कर्तृत्वं क्रूर कर्म रति स्तथा ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अविश्वासः सतां वाक्योऽशुचित्वं कर्म हीनता ।
निन्दक त्वं च वेदानां भक्तानाम सुरद्विषाम् ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

मुनि श्रोत्रिय विप्राणां तथा स्मृति पुराणयोः ।
पाखण्ड वाक्ये विश्वासः संगति र्मलिनात्मनाम् ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

सदम्भकर्म कर्तृत्वं स्पृहा च परवस्तुषु ।
अनेक कामना वत्वं सर्वदाऽनृत भाषणम् ।।९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

परोत्कर्षा सहिष्णुत्वं परकृत्यपराहृतिः ।
इत्याद्या बहवश्चान्ये राक्षस्याः प्रकृतेर्गुणाः ।।१०।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

पृथिव्यां स्वर्गलोके च परिवृत्य वसन्ति ते ।
मद्भक्ति रहिता लोका राक्षसीं प्रकृतिं श्रिताः ।।११।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

तामसीं ये श्रिता राजन्यान्ति ते रौरवं ध्रुवम् ।
अनिर्वाच्यं च ते दुःखं भुञ्जते नात्र संस्थिताः ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

देवाग्निः सृत्य नरकाज्जायन्ते भुविकुब्जकाः ।
जात्यन्धाः पङ्गवो दीना हीन जातिषुते नृप ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

पुनः पाप समाचारा मय्य भक्ताः पतन्ति ते ।
उत्पतन्ति हि मद्भक्ता यां कांचिद्योनिमाश्रिताः ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

लभन्ते स्वर्गतिं यज्ञैरन्यैर्धर्मैश्च भूमिप ।
सुलभास्ताः सकामानां मयि भक्तिः सुदुर्लभा ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

विमूढा मोह जालेन बद्धः स्वेन च कर्मणा ।
अहं हन्ता अहं कर्त्ता अहं भोक्तेति वादिनः ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अहमेवेश्वरः शास्ता अहं वेत्ता अहं सुखी ।
एतादृशीमति र्नृणामधः पातयतीह तान् ॥१७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तस्मादेतत्समुत्सृज्य दैवीं प्रकृत्ति माश्रय ।
भक्ति कुरु मदीयां त्वमनिशंदृढ चेतसा ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

सापि भक्ति स्त्रिधा राजन् सात्विकी राजसीतरा ।
यद्देवान्भजतो भक्त्या सात्विकी सा मता शुभा ॥१९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

राजसी सा तु विज्ञेया भक्तिर्जन्मसृतिप्रदा ।
यक्षांश्चैव रक्षांसि यजन्ते सर्वभावतः ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

वेदेनाविहितं क्रूरं साहंकारं सदम्भकम् ।
भजन्ते प्रेत भूता दीन्कर्म कुर्वन्ति कामुकम् ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

शोषयन्तो निजं देह मन्तः स्थं मांदृढाग्रहाः ।
तामस्थे तादृशी भक्ति र्नृणां सा निरयप्रदा ॥२२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कामो लोभस्तथा क्रोधो दंभश्चत्वार इत्यमी ।
महा द्वाराणि वीचीनां त्तस्मादेतांस्तु वर्जयेत् ।।२३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ तत्सदिति श्री मद्‌गणेश गीता सूपनिषदर्थ गर्भासु
योगामृतार्थ शास्त्रे श्री गणेश पुराणे उत्तर
खण्डे श्री गजानन वरेण्य संवादे
उपदेशयोगो नाम दशमोऽध्यायः ।।१०।।

—●—

❋ नामैकादशोऽध्यायः ❋

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

श्री गजानन उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

तपोऽपि त्रिविधं राजन्कायिकादि प्रभेदतः ।
ऋजुत्तार्जदशौचानि ब्रह्मचर्यमहिं सनम् ।।१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

गुरु विज्ञद्विजातीनां पूजनं चासुरद्विषाम् ।
स्वधर्म पालनं नित्यं कायिकं तप ईदृशम् ॥२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

मर्मास्पृक्च प्रियं वाक्य मनुद्वेगं हितं ऋतम् ।
अधीतिर्वेदशास्त्राणां वाचिकं तप ईदृशम् ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनंमें वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अन्तः प्रसादः शान्तत्वं मौनमिन्द्रिय निग्रहः ।
निर्मलाशयता नित्यं मानसं तप ईदृशम् ॥४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अकामतः श्रद्धया च यतपः सात्विकं च तत् ।
ऋध्द्यै सत्कार पूजार्थं तदम्भ राजसं तपः ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

तदस्थिरं जन्ममृती प्रयच्छति न संशयः ।
परात्म पीडकं यच्च तपस्ताम समुच्यते ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

विधिवाक्य प्रमाणार्थं सत्पात्रे देशकालतः ।
श्रद्धया दीयमानं यद्दानं तत्सात्विकं मतम् ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

उपकारं फलं वापि काङ्क्षद्भिर्दीयते नरैः ।
क्लेशत्तो दीयमानं वाभक्त्या राजसमुच्यते ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अकाल देशतोऽपात्रेऽवज्ञया दीयते तु यत् ।
असत्काराच्च यद्दत्तं तद्दानं तामसं स्मृतम् ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ज्ञानं च त्रिविधं राजन् श्रृणुष्व स्थिर चेतसा ।
त्रिधा कर्म च कर्तारं ब्रवीमिते प्रसंगतः ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

नाना विधेषु भूतेषु मामेकं वीक्षते तु यः ।
नाशवत्सु च नित्यं मां तज्ज्ञानं सात्विकं नृप ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तेषु वेत्ति पृथग्भूतं विविधं भावमाश्रितः ।
माम व्ययं च तज्ज्ञानं राजसं परिकीर्तितम् ॥१२॥

अकामतः श्रद्धया च यतपः सात्विकं च तत् ।
ऋध्द्यै सत्कार पूजार्थं तदम्भ राजसं तपः ॥५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तदस्थिरं जन्ममृती प्रयच्छति न संशयः ।
परात्म पीडकं यच्च तपस्ताम समुच्यते ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

विधिवाक्य प्रमाणार्थं सत्पात्रे देशकालतः ।
श्रद्धया दीयमानं यद्दानं तत्सात्विकं मतम् ॥७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

उपकारं फलं वापि काङ्क्षद्भिर्दीयते नरैः ।
क्लेशत्तो दीयमानं वाभक्त्या राजसमुच्यते ॥८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

अकाल देशतोऽपात्रेऽवज्ञया दीयते तु यत् ।
असत्काराच्च यद्दत्तं तद्दानं तामसं स्मृतम् ॥९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ज्ञानं च त्रिविधं राजन् श्रृणुष्व स्थिर चेतसा ।
त्रिधा कर्म च कर्तारं ब्रवीमिते प्रसंगतः ॥१०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

नाना विधेषु भूतेषु मामेकं वीक्षते तु यः ।
नाशवत्सु च नित्यं मां तज्ज्ञानं सात्त्विकं नृप ॥११॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

तेषु वेत्ति पृथग्भूतं विविधं भावमाश्रितः ।
माम व्ययं च तज्ज्ञानं राजसं परिकीर्तितम् ॥१२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।

हेतु हीन मसत्यं च देहात्म विषयं च यत् ।
अस दल्पार्थ विषयं तामसं ज्ञान मुच्यते ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

भेदतस्त्रि विधं कर्म विद्धि राजन्मयेरितम् ।
कामनाद्वेषदम्भैर्यद्रहितं नित्यकर्मयत् ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

कृतं बिना फलेच्छां यत्कर्म सात्विकमुच्यते ।
यद्बहुक्लेशतः कर्मकृत्तं यच्च फलेच्छया ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

क्रियमाणं नृभिर्दम्भात्कर्म राजसमुच्यते ।
अनपेक्ष्य स्वशक्ति यदर्थ क्षयकरं च यत् ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

अज्ञानात्क्रिय माणं यत्कर्म तामस मीरितम् ।
कर्तारं त्रिविधं विद्धि कथ्यमानं मया नृप ॥१७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

धैर्योत्साही समोऽसिद्धौ सिद्धौ चावि क्रिय स्तुयः ।
अहंकार विमुक्तो यः स कर्ता सात्विको नृप ॥१८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

कुर्वन्हर्षं च शोकं च हिंसां फलस्पृहां च यः ।
अशुचिर्लुब्धको यश्च राजसोऽसौ निगद्यते ॥१६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

प्रमादाज्ञान सहितः परोच्छेद परः शठः ।
अलसस्तर्क वान्यस्तु कर्त्तासौ तामसो मतः ॥२०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

सुखं च त्रिविधं राजन्दुःखं च क्रमतः शृणु ।
सात्विकं राजसं चैव तामसं त्र मयोच्यते ॥२१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

विषवद्भासते पूर्वं दुःख स्यान्तकरं च यत् ।
इच्छयमानं तथा वृत्या यदन्तोऽमृतावद्भवेत् ॥२२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मेंवशमानय स्वाहा ॥

प्रसादात्स्वस्य बुद्धेर्यत्सात्विकं सुखमीरितम् ।
विषयाणां तु यो भोगो भासते मृत्तवत्पुरा ॥२३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

हालाहलमिवान्ते यद्राजसं सुख मीरितम् ।
तन्द्रिप्रमाद संभूत मालस्य प्रभवं च यत् ॥२४॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

सर्वदा मोहकं स्वस्य सुखं तामस मीदृशम् ।
न तदस्तियदेतैर्यन्मुक्तं स्यात्त्रि विधैर्गुणैः ॥२५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

राजन्ब्रह्मापि त्रिविध मोतत्सदिति भेदतः ।
त्रिलोकेषु त्रिधा भूत मखिलं भूप वर्त्तते ॥२६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ब्रह्म क्षत्रिय विट् शूद्राः स्वभावाद्भिन्नकर्मिणः ।
तानि तेषां तु कर्माणि संक्षेपात्तेऽधुना वदे ।।२७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

अन्तर्बाह्येन्द्रियाणां च वश्यत्वमार्जवं क्षमा ।
नाना तपांसि शौचं च द्विविधं ज्ञान मात्मनः ।।२८।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

वेदशास्त्र पुराणानां स्मृतीनां ज्ञानमेव च ।
अनुष्ठानं तदर्थानां कर्म ब्राह्म मुदा हृतम् ।।२९।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजन में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

दार्ढ्यं शौर्यं च दाक्ष्यं च युद्धे पृष्ठा प्रदर्शनम् ।
शरण्य पालनं दानं धृति स्तेजः स्वभावजम् ।।३०।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

प्रभुता मनऔन्नत्यं सुनीतिर्लोकपालनम् ।
पञ्चकर्माधिकारित्वं क्षात्रं कर्म समीरितम् ।।३१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

नाना वस्तु क्रयो भूमेः कर्षणं रक्षणं गवाम् ।
त्रिधा कर्माधिकारित्वं वैश्य कर्म समीरितम् ।।३२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

दानं द्विजानां शुश्रूषा सर्वदा शिव सेवनम् ।
एतादृशं नरव्याघ्र कर्म शौद्र मुदीरितम् ।।३३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।।

स्वस्वकर्मरता एते मय्यर्प्याखिल कारिणः ।
मत्प्रसादात्स्थिरं स्थानं यान्ति ते पपरमं नृप ।।३४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

इति ते कथितो राजन्प्रसादाद्योग उत्तमः ।
सांगोपांगः सविस्तारोऽनादि सिद्धो मयाप्रिय ।।३५।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

युङ्क्ष्व योग मयाख्यातं नाख्यातं कस्यचिन्नृप ।
गोपयैनं ततः सिद्धि परां यास्यस्यनुत्तमाम् ।।३६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

व्यास उवाच

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रसन्नस्य महात्मनः ।
गणेशस्य वरेण्यः स चकार च यथोदितम् ॥३७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

त्यक्त्वा राज्यं कुटुम्बं च कान्तारं प्रययौ रथात् ।
उपदिष्टं यथा योगमास्थाय मुक्ति माप्तवान् ॥३८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनंमें वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

इमं गोप्यतमं योगं श्रृणोति श्रद्धयातु यः ।
सोऽपि कैवल्य माप्नोति यथा योगी तथैव सः ॥३९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

य इमं श्रावयेद्योगं कृत्वा स्वार्थं सुबुद्धिमान् ।
यथा योगी तथा सोऽपि परं निर्वाण मृच्छति ॥४०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये---
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

यो गीतां सम्यगभ्यस्य ज्ञात्वा चार्थं गुरोर्मुखात् ।
कृत्वा पूजां गणेशस्य प्रत्यहं पठते तु यः ।।४१।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वापि यः पठेत् ।
ब्रह्मी भूतस्य तस्यापि दर्शनान्मुच्यते नरः ।।४२।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

न यज्ञै र्न व्रतैर्दानैर्नाग्नि होत्रै र्महाधनैः ।
न वेदैः सम्यगभ्यस्तैः सम्यग्ज्ञातैः सहाङ्गकैः ।।४३।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ।।

पुराण श्रवणैर्नैव न शास्त्रैः साधु चिन्तितैः ।
प्राप्यते ब्रह्म परममनया प्राप्यते नरैः ।।४४।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

ब्रह्मघ्नो मद्यपः स्तेयी गुरु तल्पगमोऽपि यः ।
चतुर्णां यस्तु संसर्गी महापातक कारिणाम् ॥४५॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

स्त्रीहिंसागोवधादीनां कर्त्तारो ये च पापिनः ।
ते सर्वे प्रतिमुच्यन्ते गीतामेतां पठन्ति चेत् ॥४६॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

यः पठेत्प्रयतो नित्यं स गणेशो न संशयः ।
चतुर्थ्यां यः पठेद्भक्त्या सोऽपि मोक्षाय कल्पते ॥४७॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा ॥

तत्तत्क्षेत्रं समासाद्य स्नात्वाभ्यर्च्य गजाननम् ।
सकृद्गीतां पठन्भक्त्या ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥४८॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये–
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

भाद्रे मासिसिते पक्षे चतुर्थ्यां भक्तिमान्नरः ।
कृत्वा महीमयीं मूर्तिं गणेशस्य चतुर्भुजाम् ॥४९॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

सवाहनां सायुधां च समभ्यर्च्य यथा विधि ।
यः पठेत्सप्तकृत्वस्तु गीतामेतां प्रयत्नतः ॥५०॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये--
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ददाति तस्य संतुष्टो गणेशो भोग मुत्तमम् ।
पुत्रान्पौत्रान्धनं धान्यं पशुरत्नादि संपदः ॥५१॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

विद्यार्थिनो भवेद्विद्या सुखार्थी सुख माप्नुयात् ।
कामान्ल्याँल्लभेत्कामी मुक्तिमन्तो प्रयान्ति ते ॥५२॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये-
वरवरद सर्वजनँ मे वशमानय स्वाहा ॥

श्री गणेश पुराणे श्री मद्गणेश गीता
सूपनिषदर्थ गर्भासु योगामृतार्थ शास्त्रे श्री गजानन
वरेण्य संवादे त्रिविध वस्तु विवेक निरुपणं
नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

श्री गजाननार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री महागणपति क्रम सम्पूर्णम् ॥

—●—

गणेश के द्वादश अद्भुत प्रयोग

१—मंगल विधान के लिये

गणपतिर्विघ्न राजो लम्ब तुण्डो गजाननः ।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः ॥
विनायकश्चारु कर्णः पशुपालो भवात्मजः ।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥
विश्वं तस्य भवे द्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित् ।

(पद्म पु० सृ० ६१।३१-३३)

"गणपति विघ्नराज, लम्वतुण्ड, गजानन, द्वैमातुर, हेरम्व, एकदन्त, गणाधिप, विनायक, चारुकर्ण, पशुपाल और भवात्मज, ये वारह गणेश जी के नाम हैं। जो प्रातःकाल उठकर इनका पाठ करता हैं, सम्पूर्ण विश्व उनके वश में हो जाता है। तथा उसे कभी विघ्न का सामना नहीं करना पड़ता।"

२—मोक्ष-प्राप्ति के लिये

पञ्चश्लोकिगणेशपुराणम्

श्री विघ्नेशपुराणसार मुदितं व्यासाय धात्रा पुरा
तत्खण्डं प्रथमं महागणपतेश्चोपासना ख्यं यथा ।
संहर्तुं त्रिपुरं शिवेन गणपस्यादौ कृतं पूजनं
कर्तुं सृष्टि मिमां स्तुतः स विधिना व्यासेन बुद्धयाप्तये ॥१॥

संकष्टयाश्च विनायकस्य च मनोः स्थानस्य तीर्थस्य वै
दूर्वाणां महिमेति भक्तिचरितं तत्पार्थिवस्यार्चनम् ।

तेभ्यो यैर्यद भीप्सितं गणपतिस्तत्तत्प्रतुष्टो ददौ ।
ताः सर्वा न समर्थ एव कथितुं ब्रह्मा कुतो मानवः ।।२।।

क्रीडाकाण्डमथो वदे कृतयुगे श्वेतच्छविः काश्यपः
सिंहाङ्कः स विनायको दशभुजो भूत्वाथ काशीं ययौ ।
हत्वा तत्र नरान्तकं तदनुजं देवान्तक दानवं
त्रेतायां शिवनन्दनो रसभुजो जातो मयूरध्वजः ।।३।।

हत्वा तं कमलासुरं च सगणं सिन्धुं महादैत्यपं
पश्चात् सिद्धिमती सुते कमलजस्तस्मै च ज्ञान ददौ ।
द्वापारे तु गजाननो युगभजो गौरीसुतः सिन्दुरं
सम्मर्द्य स्वकरेण तं निजमुखे चाखुध्वजो लिप्तवान् ।।४।।

गीताया उपदेश एव हि कृतो राज्ञे वरेण्याय वै
तुष्टायाथ च धूम्रकेतुरभिधो विप्रः सधर्माधिकः ।
अश्वाङ्को द्विभुजो सितो गणपतिम्लेच्छान्तकः स्वर्णदः
क्रीडाकाण्डमिदं गणस्य हरिणा प्रोक्तं विधात्रे पुरा ।।५।।

एतच्छलोकसुपञ्चकं प्रतिदिनं भक्त्या पठेद्यः पुमान्
निर्वाणं परमं व्रजेत् स सकलान् भुक्त्वा सभोगानपि ।

।। इति श्री पञ्चश्लोकि गणेश पुराणम् ।।

पूर्वकाल में ब्रह्माजी ने व्यास को श्री विघ्नेश (गणेश) पुराण का सारतत्व वताया था। वह महागणपति का उपासना संज्ञक प्रथम खण्ड है। भगवान शिव ने पहले त्रिपुर का संहार करने के लिये गणपति का पूजन किया। फिर ब्रह्मा जी ने इस सृष्टि की रचना करने के लिये उनकी विधिवत् स्तुति की। तत्पश्चात् व्यास ने बुद्धि की प्राप्ति के लिये उनका स्तवन किया। संकष्टी देवी की, गणेश की, उनके मन्त्र की, स्थान की, तीर्थ की

और दूर्वा की महिमा यह भक्ति चरित है। उसके पार्थिव विग्रह का पूजन भी भक्ति चर्या ही है। उन भक्ति चर्या करने वाले पुरुषों में से जिन जिनने जिस जिस वस्तु को पाने की इच्छा की, संतुष्ट हुए गणपति ने वह वह वस्तु उन्हें दी। उन सबका वर्णन करने में ब्रह्मा जी भी समर्थ नहीं हैं, फिर मनुष्य की तो वात ही क्या है। अब 'क्रीडाकाण्ड' का वर्णन करता हूँ। सत्य युग में दश भुजाओं से युक्त श्वेत कान्तिमान् कश्यपपुत्र सिंहध्वज महोत्कट विनायक काशी में गये। वहां नरान्तक और उसके छोटे भाई देवान्तक नामक दानव को मारकर त्रेता में वे षडबाहु शिवनन्दन मयूरध्वज के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने कमलासुरको तथा महादैत्यपति सिन्धु को उसके गणों सहित मार डाला तत्पश्चात् ब्रह्मा जी ने सिद्धि और बुद्धि नामक दो कन्याएँ उन्हें दीं और ज्ञान भी प्रदान किया। द्वापर युग में गौरी पुत्र गजानन दो भुजाओं से युक्त हुए। उन्होंने अपने हाथ से सिन्दूरा सुर का मर्दन करके उसे अपने मुख पर पोत लिया। उनकी ध्वजा में मूषक का चिन्ह था। उन्होंने सन्तुष्ट राजा वरेण्य को गणेश गीता का उपदेश किया फिर वे धूम्रकेतु—नाम से प्रसिद्ध धर्मयुक्त धनवाले ब्राह्मण होंगे। उस समय उनके ध्वज का चिन्ह अश्व होगा। उनके दो भुजाएं होंगी। वे गौरवर्ण के गणपति म्लेच्छों का अन्त करने वाले और सुवर्ण के दाता होंगे। गणपति के इस "क्रीड़ाकाण्ड" का वर्णन पूर्वकाल में भगवान विष्णु ने ब्रह्माजी से किया था।

जो मनुष्य प्रतिदिन भक्ति भाव से इन पांच श्लोकों का पाठ करेगा, वह समस्त उत्तम भोगों का उपभोग करके अन्त में परम निर्वाण (मोक्ष) को प्राप्त होगा।

॥ इस प्रकार "पञ्चश्लोकीगणेशपुराण" पूरा हुआ ॥

३—सर्वविध रक्षा के लिये

गणेशन्यास

श्री गणेशाय नमः ॥

आचम्य प्राणायामं कृत्वा ॥

दक्षिण हस्ते वक्र तुण्डाय नमः ॥

वाम हस्ते शूर्पकर्णाय नमः ।।
ओष्ठे विघ्नेशाय नमः ।।
सम्पुटे गजाननाय नमः ।।
दक्षिणपादे लम्बोदराय नमः ।।
वामपादे एकदन्ताय नमः ।।
शिरसि एकदन्ताय नमः ।।
चिबुके ब्रह्मणस्पतये नमः ।।
दक्षिण नासिकायां विनायकाय नमः ।।
वाम नासिकायां ज्येष्ठ राजाय नमः ।।
दक्षिण नेत्रे विकटाय नमः ।।
वामनेत्रे कपिलाय नमः ।।
दक्षिणकर्णे धरणीधराय नमः ।।
वामकर्णे आशापूरकाय नमः ।।
नाभौ महोदराय नमः ।।
हृदये धूम्र केतवे नमः ।।
ललाटे मयूरेशाय नमः ।।
दक्षिणबाहौ स्वानन्दवासकारकाय नमः ।।
वामबाहौ सच्चित्सुखधाम्ने नमः ।।

।। इति मुद्गल पुराणे गणेश न्यासः समाप्तः ।।

श्री गणेशाय नमः —आचमन और प्राणायाम करने के पश्चात् दाहिने हाथ में "वक्रतुण्डाय नमः"—इस मन्त्र को बोलकर वक्रतुण्ड का न्यास करे। बांयें हाथ में "शूर्पकर्णाय नमः"—इस मन्त्र से शूर्पकर्ण का, ओष्ठ में "विघ्नेशाय नमः"—इस मन्त्र से विघ्नेश का, दोनों ओष्ठों के बंद सम्पुट में "गजाननाय नमः"—इस मन्त्र से गजानन का दाहिने पैर में

"लम्बोदराय नमः"— इस मन्त्र से लम्बोदर का और बायें पैर में "एक-दन्ताय नमः" से एकदन्त का न्यास करे। शिर में भी इसी मन्त्र से एकदन्त का, चिवुक (ठोढ़ी) में "ब्रह्मणस्पतये नमः" इस मन्त्र से ब्रह्मणस्पतिका, दाहिनी नासिका में "विनायकाय नमः" इस मन्त्र से विनायक का, बायीं नासिका में "ज्येष्ठराजाय नमः"—इस मन्त्र से ज्येष्ठराज का, दाहिने नेत्र में "विकटाय नमः"— इस मन्त्र से विकट का, बायें नेत्र में 'कपिलाय नमः' इस मन्त्र से कपिल का, दाहिने कान में "धरणी धराय नमः" इस मन्त्र से धरणीधर का, बायें कान में "आशापूरकाय नमः"—इस मन्त्र से आशापूरक का नाभि में "महोदराय नमः" इस मन्त्र से महोदर का, हृदय में "धूम्र केतवे नमः"—इस मन्त्र से धूम्रकेतु का, ललाट में 'मयूरेशाय नमः'—इस मन्त्र से मयूरेश का, दाहिनी बांह में "स्वानन्दवासकारकाय नमः" इस मन्त्र से स्वानन्दवासकारक का तथा बायीं बांह में "सच्चित्सुखधाम्ने नमः" इस मन्त्र से सच्चित् सुखधाम का न्यास करे।

॥ इस प्रकार मुद्गलपुराण में "गणेश न्यास" पूरा हुआ ॥

४—समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये

गणेशाष्टक

सर्वे ऊचुः

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो निर्गुणाद प्रमेया गुणास्ते।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतश्चाविरासीज्जगत्सर्व मेततथाऽब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता।
तथेन्द्रादयो देवसङ्घा मनुष्याः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥

यतो वह्निभानूद्भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा
व्योम वायुः ।
यतः स्थावरा जङ्गमा वृक्षसंङ्घाः सदा तां गणेशं नमामो
भजामः ॥
यतो दानवाः किंनरा यक्षसङ्घा यतश्चारणा वारणाः
श्वापदाश्च ।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च सदा तां गणेशं नमामो
भजामः ॥
यतो बुद्धिरज्ञान नाशो मुमुक्षोर्यतः सम्पदो भक्त
संतोषिकाः स्युः ।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तां गणेशं
नमामो भजामः ॥
यत पुत्रसम्पद् यतो वाञ्छितार्थो यतोऽभक्त विघ्ना-
स्तथानेक रुपाः ।
यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तां गणेशं नमामो
भजामः ॥
यतोऽनन्त शक्तिः स शेषो बभूवधराधारणेऽनेकरुपे च
शक्तः ।
यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तां गणेशं नमामो
भजामः ॥
यतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः सदानेति नेतीति यता
गृणान्ति ।
परब्रह्मरुपं चिदानन्दभूतं सदा तां गणेशं नमामो
भजामः ॥

गणेश उवाच

पुनरुचे गणाधीशः स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः ।
त्रिसंध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वं कार्यं भविष्यति ॥
यो जपेदष्ट दिवसं श्लोकाष्टकमिदं शुभम् ।
अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्टसिद्धीरवाप्नुयात् ॥
यः पठेन्मास मात्रं तु दशवारं दिने दिने ।
स मोचयेद्बन्धगतं राजवध्यं न संशयः ॥
विद्या कामो लभेद्विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।
वाञ्छिताँल्लभते सर्वानेकविंशतिवारतः ॥
यो जपेत् परया भक्त्या गजानन परो नरः ।
एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥

॥ इति श्री गणेश पुराणे श्री गणेशाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

सब भक्तों ने कहा—जिन अनन्त शक्ति वाले परमेश्वर से अनन्त जीव प्रकट हुए हैं, जिन निर्गुण परमात्मा से अप्रमेय (असंख्य) गुणों की उत्पत्ति हुई है, सात्विक, राजस, और तामस—इन तीन भेदों वाला यह सम्पूर्ण जगत् जिससे प्रकट एवं भासित हो रहा है, उन गणेश का हम नमन एवं भजन करते हैं। जिनसे इस समस्त जगत का प्रादुर्भाव हुआ है, जिनसे कमलासन ब्रह्मा, विश्वव्यापी विश्व रक्षक विष्णु, इन्द्र आदि देव-समुदाय और मनुष्य प्रकट हुए हैं, उन गणेश का हम सदा ही नमन एवं भजन करते हैं। जिनसे अग्नि और सूर्य का प्राकटय हुआ, पृथ्वी, जल, समुद्र, चन्द्रमा, आकाश और वायु का प्रादुर्भव हुआ तथा जिससे स्थावर-जङ्गम और वृक्ष समूह उत्पन्न हुए हैं, उन गणेश का हम नमन एवं भजन करते हैं। जिनसे दानव, किन्नर और यक्ष समूह प्रकट हुए, जिनसे हाथी और हिंसक जीव उत्पन्न हुए तथा जिनसे पक्षियों, कीटों और लता-वेलों का प्रादुर्भाव हुआ, उन गणेश का हम सदा ही नमन और भजन करते हैं। जिनसे मुमुक्षु को बुद्धि प्राप्त होती है और अज्ञान का नाश होता है, जिनसे भक्तों को संतोष देने वाली सम्पदाएँ प्राप्त होती हैं तथा जिनसे विघ्नों का

नाश और समस्त कार्यों की सिद्धि होती है, उन गणेश का हम सदा नमन एवं भजन करते हैं। जिनसे पुत्र सम्पति सुलभ होती है, जिनसे मनोवाञ्छित अर्थ सिद्ध होना है, जिनसे अभक्तों को अनेक प्रकार के विघ्न प्राप्त होते हैं तथा जिन से शोक, मोह और काम प्राप्त होते है, उन गणेश का हम सदा नमन एवं भजन करते हैं। जिनसे अनन्त शक्ति सम्पन्न सुप्रसिद्ध शेषनाग प्रकट हुए, जो इस पृथ्वी को धारण करने एवं अनेक रुप ग्रहण करने में समर्थ हैं, जिनसे अनेक प्रकार के अनेक स्वर्गलोक प्रकट हुए है, उन गणेश का हम सदा ही नमन एवं भजन करते है। जिनके विषय में वेदवाणी कुण्डित है, जहां मन की भी पहुँच नहीं है तथा श्रुति सदा सावधन रहकर 'नेति-नेति'—इन शब्दों द्वारा जिनका वर्णन करती है, जो सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म हैं, उन गणेश का हम सदा ही नमन एवं भजन करते हैं।

श्री गणेश जी फिर बोले—जो मनुष्य तीन दिनों तक तीनों संध्याओं के समय इस स्तोत्र का पाठ करेगा, उसके सारे कार्य सिद्ध हो जायंगे। जो आठ दिनों तक इन आठ श्लोकों का एक बार पाठ करेगा और चतुर्थी तिथि को आठ वार इस स्तोत्र को पढ़ेगा, वह आठों सिद्धियों को प्राप्त कर लेगा। जो एक मास तक प्रतिदिन दस-दस वार इस स्तोत्र का पाठ करेगा, वह कारागार में बँधे हुए तथा राजा के द्वारा बध-दण्ड पाने वाले कैदी को भी छुड़ा लेगा, इसमें संशय नहीं है। इस स्तोत्र का इक्कीसवार पाठ करने से विद्यार्थी विद्या को, पुत्रार्थी पुत्र को तथा कामार्थी समस्त मनोवाञ्छित कामनाओं को प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य पराभक्ति से इस स्तोत्र का जप करता है, वह गजानन का परम भक्त हो जाता है—ऐसा कहकर भगवान् गणेश वहीं अन्तर्धान हो गये।

॥ इस प्रकार श्री गणेश पुराण में 'श्री गणेशाष्टक' पूरा हुआ ॥

५—विघ्ननाश के लिये

श्रीराधिकोवाच

परंधाम परं ब्रह्म परेशं परमीश्वरम्।
विघ्न निघ्न करं शान्तं पुष्टं कान्तमनन्तकम्॥

सुरासुरेन्द्रै सिद्धेन्द्रैः स्तुतं स्तौमि परात्परम् ।
सुरपद्मदिनेशं च ग गेशं मङ्गलायनम् ।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं विघ्नशोकहरं परम् ।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्व विघ्नात् प्रमुच्यते ।।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्री कृष्ण जन्म खण्ड १२१।१०३-१०५)

श्री राधिका ने कहा--जो परम धाम, परब्रह्म, परेश, परम ईश्वर विघ्नों के विनाशक, शान्त, पुष्ट, मनोहर और अनन्त हैं, प्रधान-प्रधान सुर असुर और सिद्ध जिनका स्तवन करते हैं, जो वेद रूपी कमल के लिये सूर्य और मङ्गलों के आश्रय—स्थान हैं, उन परात्पर गणेश की मैं स्तुति करती हूँ ।

यह उत्तम स्तोत्र महान् पुण्यमय तथा विघ्न और शोक को हरने वाला है । जो प्रातःकाल उठाकर इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह सम्पूर्ण विघ्नों से विमुक्त हो जाता है ।

६—संकट नाश के लिये

संकष्टनाशनस्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थ सिद्धये ।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्ण पिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥
जपेद्गणपति स्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

॥ इति नारद पुराणे संकष्ट नाशनं नाम गणेश स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

नारद जी कहते हैं--पहले मस्तक झुकाकर गौरी पुत्र विनायक देव को प्रणाम करके प्रतिदिन आयु, अभीष्ट मनोरथ और धन आदि प्रयोजनों की सिद्धि के लिये भक्तावास गणेश जी का स्मरण करे, पहला नाम "वक्र-तुण्ड" है, दूसरा "एकदन्त" है, तीसरा "कृष्णपिङ्गाक्ष" है, चौथा 'गजवक्त्र' है, पाँचवाँ 'लम्बोदर' छठा 'विकट', सातवाँ 'विघ्नराजेन्द्र', आठवाँ 'धूम्रवर्ण', नवां "भालचन्द्र", दशवां "विनायक", ग्यारहवां "गणपति" और बारहवां नाम "गजानन" है। जो मनुष्य सबेरे, दोपहर और सांय—तीनों संध्याओं के समय प्रतिदिन इन बारह नामों का पाठ करता है, उसे विघ्न का भय नहीं होता। यह नाम--स्मरण उसके लिए सभी सिद्धियों का उत्तम साधक है। इन नामों के जप से विद्यार्थी विद्या, धनार्थी धन, पुत्रार्थी अनेक पुत्र और मोक्षार्थी मोक्ष पाता है। इस गणपति स्तोत्र का नित्य जप करे। जपकर्ता को छः महीने में अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। एक वर्ष तक जप करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, इसमें संशय नहीं है।

जो इस स्तोत्र को लिखकर आठ ब्राह्मणों को अर्पित करता है, उसे गणेश जी की कृपा से सम्पूर्ण विद्या की प्राप्ति होती है।

॥ इस प्रकार श्री नारद पुराण में "संकष्टनाशन" नामक गणेश स्तोत्र पूरा हुआ ॥

७–चिन्ता एवं रोग-निवारण के लिये

मयूरेश स्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच

पुराण पुरुषं देवं नाना क्रीडाकरं मुदा ।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम् ।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया ।
सर्व विघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
नाना दैत्यनिहन्तारं नाना रुपाणि बिभ्रतम् ।
नानायुध धरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
इन्द्रादि देवतावृन्दै रभिष्टुत महर्निशम् ।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूप धरं विभुम् ।
सर्व विद्या प्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
पार्वती नन्दनं शम्भोरानन्द परिवर्धनम् ।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥

मुनि ध्येयं मुनिनुतं मुनिकाम प्रपूरकम् ।
समष्टि व्यष्टि रूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वाज्ञान निहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम् ।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
अनेक कोटि ब्रह्माण्ड नायकं जगदीश्वरम् ।
अनन्त विभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपाप प्रनाशनम् ।
सर्वकाम प्रदं नृणां सर्वोपद्रव नाशनम् ॥
कारागृहगतानां च मोचनं दिन सप्तकात् ।
आधि व्याधिहरं चैव भुक्ति मुक्तिप्रदं शुभम् ॥

॥ इति मयूरेश स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

ब्रह्मा जी बोले—जो पुराण पुरुष हैं और प्रसन्नता पूर्वक नाना प्रकार की क्रीडाएं करते है, जो माया के स्वामी हैं तथा जिनका स्वरूप दुर्विभाव्य (अचिन्त्य) है, उन मयूरेश गणेश को मैं प्रणाम करता हूँ। जो परात्पर, चिदानन्दमय, निर्विकार, सबके हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित, गुणमय हैं, उन मयूरेश को मैं नमस्कार करता हूँ। जो स्वेच्छा से ही संसार की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं। उन सर्वविघ्नहारी देवता मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ। जो अनेकानेक दैत्यों के प्राणनाशक है और नाना प्रकार के रूप धारण करते हैं, उन नाना अस्त्र शस्त्रधारी मयूरेश को मैं भक्तिभाब से नमस्कार करता हूँ। इन्द्र आदि देवताओं का समुदाय दिन रात जिनका स्तवन करता है तथा जो सत्, असत्, व्यक्त और अव्यक्त रूप हैं, उन मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ। जो सर्व शक्तिमय, सर्वरूप धारी और सम्पूर्ण विद्याओं के प्रवक्ता हैं, उन भगवान मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ। जो पार्वतीजी को पुत्ररूप से आनन्द प्रदान करते और भगवान

शंकर का भी आनन्द बढ़ाते हैं, उन भक्तानन्दवर्धन मयूरेश को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ। मुनि जिनका ध्यान करते, मुनि जिनके गुण गाते तथा जो मुनियों की कामना पूर्ण करते है, उन समष्टि व्यष्टि रूप मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ। जो समस्त वस्तु विषयक अज्ञान के निवारक, सम्पूर्ण ज्ञान के उद्भावक, पवित्र, सत्य ज्ञान स्वरूप तथा सत्यनाम धारी हैं, उन मयूरेश को मैं नमस्कार करता हूँ। जो अनेक कोटि ब्रह्माण्ड के नायक, जगदीश्वर, अनन्त वैभव सम्पन्न तथा सर्व व्यापी विष्णु रूप हैं, उन मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।

मयूरेश ने कहा—यह स्तोत्र ब्रह्मभाव की प्राप्ति कराने वाला और समस्त पापों का नाशक हैं। मनुष्यों को सम्पूर्ण मनोवाञ्छित वस्तु देने वाला तथा सारे उपद्रवों का शमन करने वाला है। सात दिन इसका पाठ किया जाय तो कारागार में पड़े हुए मनुष्यों को भी छुड़ा लाता है। यह शुभ स्तोत्र आधि (मानसिक चिन्ता) तथा व्याधि (शरीरगत रोग) को भी हर लेता है और भोग एवं मोक्ष प्रदान करता है।

॥ इस प्रकार "मयूरेश स्तोत्र" पूरा हुआ ॥

८—पुत्र की प्राप्ति के लिये

संतान गणपति स्तोत्रम्

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धि बुद्धि युताय च।
सर्वप्रदाय देवाय पुत्रबुद्धि प्रदाय च॥
गुरुदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते।
गोप्याय गोपिता शेष भुवनाय चिदात्मने॥
विश्व मूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते।
नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने॥
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः।
प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्ति विनाशिने॥

शरणं भव देवेश संततिं सुदृढ़ां कुरु ।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक ।।
ते सर्वे तव पूजार्थं निरताः स्युर्वरो मतः ।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्व सिद्धि प्रदायकम् ।।

।। इति संतान गणपति स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

सिद्धि-बुद्धि सहित उन गणनाथ को नमस्कार हैं, जो पुत्रबुद्धि प्रदान करने वाले तथा सब कुछ देने वाले देवता है । जो भारी पेट वाले (लम्बोदर) गुरु (ज्ञान दाता), गोप्ता (रक्षक), गुह्य (गूढ़स्वरूप) तथा सब ओर से गौर हैं, जिनका स्वरूप और तत्व गोपनीय है तथा जो समस्त भुवनों के रक्षक हैं, उन चिदात्मा आप गणपति को नमस्कार है । जो विश्व के मूल कारण, कल्याण स्वरूप, संसार की सृष्टि करने वाले सत्यरूप, सत्यपूर्ण तथा शुण्ड धारी है, उन आप गणेश्वर को बारंबार नमस्कार है । जिनके एक दाँत और सुन्दर मुख है, जो शरणागत भक्तजनों के रक्षक तथा प्रणतजनों की पीड़ा का नाश करने वाले है, उन शुद्ध स्वरूप आप गणपति को बारंबार नमस्कार है । देवेश्वर ! आप मेरे लिये शरणदाता हों । मेरी सतान परम्परा को सुदृढ़ करें गणगायक ! मेरे कुल में जो पुत्र हों, वे सब आपकी पूजा के लिये सदा तत्पर हों--यह वर प्राप्त करना मुझे इष्ट है । यह पुत्र प्रदायक स्तोत्र समस्त सिद्धियों को देने वाला है ।

।। इस प्रकार "सन्तान गणपति स्तोत्र" पूरा हुआ ।।

९—श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये

श्री गणाधिप स्तोत्रम्

सरागिलोक दुर्लभं विरागिलोक पूजितं—
सुरा सुरैर्नमस्कृतं जरादि मृत्यु नाशकम् ।
गिरा गुरूं श्रिया हरिं जयन्ति यत्पदार्चका
नमामि तं गणाधिपं कृपापयः पयोनिधिम् ।।

गिरीन्द्रजा मुखाम्बुज प्रमोददान भास्करं
करीन्द्र वक्त्र मानताघ संघ वारणोद्यतम् ।
सरीसृपेशबद्ध कुक्षिमाश्रयामि संततं
शरीर कान्ति निर्जिताब्ज बन्धु बाल संततिम् ॥

शुकादि मौनि वन्दितं गकार वाच्य मक्षरं
प्रकाममिष्ट दायिनं सकामनम्रपङ्क्तये ।
चकासनं चतुर्भुजै र्विकासि पद्म पूजितं
प्रकाशितात्मतत्वकं नमाम्यहं गणाधिपम् ॥

नराधिपत्वदायकं स्वरादिलोक दायकं
जरादि रोग वारकं निराकृता सुरव्रजम् ।
कराम्बुजैर्धरन् सृणीन् विकारशून्यमानसै-
र्हृदा सदा विभावितं मुदा नमामि विघ्नपम् ॥

श्रमाप नोदनक्षमं समाहितान्तरात्मना-
समाधिभिः सदार्चितं क्षमानिधिं गणाधिपम् ।
रमाधवादि पूजितं यमान्त कात्म सम्भवं
शमादिषड् गुणप्रदं नमामि तं विभूतये ॥

गणाधिपस्य पञ्चकं नृणामभीष्ट दायकं
प्रणामपूर्वकं जनाः पठन्ति ये मुदा युताः ।
भवन्ति ते विदाम्पुरः प्रगीत वैभवाः
जनाश्चिरायुषोऽधिक श्रियः सुसूनवोन संशयः ॥

॥ इति श्री गणाधिप स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१०—लक्ष्मी प्राप्ति के लिये

गणपति स्तोत्र

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्व सौख्य प्रदायिने ।
दुष्टारिष्ट विनाशाय पराय परमात्मने ॥
लम्बोदरं महावीर्यं नाग यज्ञो पशोभितम् ।
अर्धचन्द्र धरं देवं विघ्न व्यूह विनाशनम् ॥
ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः ।
सर्व सिद्धि प्रदोऽसि त्वं सिद्धि बुद्धि प्रदोभव ॥
चिन्तितार्थ प्रदस्त्वं हि सततं मोदक प्रियः ।
सिन्दूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः ॥
इदं गणपति स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः ।
तस्यदेहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति ॥
॥ इति गणपति स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

सम्पूर्ण सौख्य प्रदान करने वाले सच्चिदानन्द स्वरूप विघ्नराज गणेश को नमस्कार है। जो दुष्ट अरिष्ट ग्रहों का नाश करने वाले परात्पर परमात्मा हैं, उन गणपति को नमस्कार है। जो महापराक्रमी, लम्बोदर, सर्पमय यज्ञोपवीत से सुशोभित अर्धचन्द्रधारी और विघ्न समूह का विनाश करने वाले हैं, उन गणपति देवकी मैं वन्दना करता हूँ। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्ब को नमस्कार है। भगवन्! आप सभी सिद्धियों के दाता हैं, आप हमारे लिये सिद्धि बुद्धि दायक हों। आपको सदा ही मोदक (लड्डू) प्रिय है। आप मन के द्वारा चिन्तित अर्थ को देने वाले है। सिन्दूर और लाल बस्त्र से पूजित हो कर आप सदा वर प्रदान करते है। जो मनुष्य भक्तिभाव से युक्त होकर इस गणपति स्तोत्र का पाठ करता है, स्वयं लक्ष्मी उसके देह-देह को नहीं छोड़ती।

॥ इस प्रकार गणपति स्तोत्र पूरा हुआ ॥

११—परिवार में पारस्परिक प्रेम-प्राप्ति केलिये

गणपति स्तोत्रम्

सुवर्ण वर्ण सुन्दरं सितैकदन्त बन्धुरं
गृहीत पाशकाङ्कुशं वर प्रदाभय प्रदम् ।
चतुर्भुजं त्रिलोचनं भुजङ्ग मोपवीतिनं
प्रफुल्ल वारिजासनं भजामि सिन्धुराननम् ।।

किरीट हार कुण्डलं प्रदीप्त बाहु भूषणं
प्रचण्ड रत्न कङ्कणं प्रशोभिताङ्घ्रियष्टिकम् ।
प्रभात सूर्य सुन्दराम्बर द्वय प्रधारिणं
सरत्न हेमनू पुर प्रशोभिताङ्घ्रिपङ्कजम् ।।

सुवर्ण दण्ड मण्डित प्रचण्ड चारु चामरं
गृह प्रदेन्दु सुन्दरं युगक्षण प्रमोदितम् ।
कवीन्द्र चितरञ्जकं महा विपत्ति भञ्जकं
षडक्षर स्व रूपिणं भजे गजेन्द्र रुपिणम् ।।

विरिञ्चि विष्णु वन्दितं विरुप लोचन स्तुतं
गिरीश दर्शनेच्छया समर्पितं पराम्बया ।
निरन्तरं सुरासुरैः सपुत्रवामलोचनैः
महामरवेष्ट कर्म सु स्मृतं भजामि तुन्दिलम् ।।

मदौघलुब्धचञ्चलालि मञ्जिगुञ्जितारवं
प्रबुद्धचितरञ्जकं प्रमोद कर्ण चालकम् ।

अनन्यभक्ति मानवं प्रचण्ड मुक्ति दायकं
नमामि नित्य मादरेण वक्रतुण्डनायकम् ।।

दारि द्रय विद्रावणमाशु कामदं
स्तोत्रं पठेदेतदजस्त्रमादरात् ।
पुत्री कलत्र स्वजनेषु मैत्री
पुमान् भवेदेकवर प्रसादात् ।।

।। इति गणपति स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

१२–पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिये

गजानन स्तोत्रम्

देवर्षय ऊचुः

विदेह रूपं भावबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदं तम् ।
अमेय सांखयेन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्ति युतं भजामः ।।

मुनीन्द्रवन्द्यं विधिवोधहीनं सुबुद्धि दं बुद्धिधरं प्रशान्तम् ।
विकारहीनं सकलाङ्कं वै गजाननं भक्ति युक्तं भजामः ।।

अमेय रूपं हृदि संस्थितं तं ब्रह्माहमेकं भ्रमनाशकारम् ।
अनादि मध्यान्तमपाररूपं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
जगत्प्रमाणं जगदीश मेवमगम्यमाद्यं जगदादि हीनम् ।

अनात्मनां मोहप्रदं पुराणं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
न पृथ्विरूपं न जलप्रकाशं न तेजसंस्थं न समीर
संस्थम् ।
न खे गतं पञ्च विभूतिहीनं गजाननं भक्तियुतं
भजामः ।।
न विश्वगं तैजसगं न प्राज्ञं समष्टि व्यष्टि स्थमनन्त-
गंतम् ।
गुणै विहीनं परमार्थ भूतं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
गुणेशगं नैव च बिन्दु संस्थं न देहिनं बोधमयं न
ढुण्ढिम् ।
सुयोगहीनं प्रवदन्ति तत्स्थं गजाननं भक्तियुतं
भजामः ।।

अनागतं ग्रैवगतं गणेशं कथं तदाकारमयं वदामः ।
तथापि सर्वे प्रतिदेह संस्थं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
यदि त्वया नाथ धृतं न किंचित्तदा कथं सर्व मिदं
भजामि ।
अतो महात्मानमचिन्त्य मेवं गजाननं भक्ति युतं
भजामः ।।
सुसिद्धिदं भक्तजनस्य देवं सकामिकानामिह सौख्य
दंतम् ।
अकामिकानां भवबन्धहारं गजाननं भक्ति युतं
भजामः ।।
सुरेन्द्रसेव्यं ह्यसुरैः सुसेव्यं समान भावेन विराजयन्तम् ।

अनन्तबाहुं मुषकध्वजं तं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
सदासुखानन्दमयं जले च समुद्रजे इक्षुरसे निवासम् ।
द्वन्द्वस्य यानेन च नाशरूपं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
चतुः पदार्था विविध प्रकाशास्त एव हस्ताः
सचतुर्भुजंतम् ।
अनाथनाथं च महोदरं वै गजाननं भक्तियुतं भजामः ।
महाखुमारुढमकालकालं विदेहयोगेन च लभ्यमानम् ।
अमायिनं मायिकमोहदंतं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
रविस्वरुपं रविभासहीनं हरिस्वरूपं हरिबोधहीनम् ।
शिवस्वरुपं शिवभासनाशं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
महेश्वरीस्थं च सुशक्तिहीनं प्रभुं परेशं परवन्द्यमेवम् ।
अचालकं चालक बीजरुपं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
शिवादिदेवैश्च खगैश्च वन्द्यं नरैर्लता वृक्ष पशु
प्रमुख्यैः ।
चराचरैं लोंक विहीनमेकं गजाननं भक्तियुतं
भजामः ।।
मनोवचोहीनतया सुसंस्थं निवृत्तिमात्रं ह्यजमव्ययंतम् ।
तथापि देवं पुरसंस्थितं तं गजाननं भक्तियुतं
भजामः ।।

वयं सुधन्या गणपस्तवेन तथैव मर्त्यार्चनतस्तथैव ।
गणेशरुपाय कृतास्त्वया तं गजाननं भक्तियुतं भजामः ।।
गजास्य बीजं प्रवदन्ति वेदास्तदेव चिन्हेन च योगिन
स्त्वाम् ।

गच्छन्ति तेनैव गजानन त्वां गजाननं भक्तियुतं भजामः ॥

पुराणवेदाः शिव विष्णु काद्याः शुक्रादयो ये गणपस्तावे वै ।

विकुण्ठिताः किं च वयं स्तुवीमो गजाननं भक्तियुतं भजामः ॥

मुद्गल उवाच

एवं स्तुत्वा गणेशानं नेमुः सर्वे पुनः पुनः ।
तानुत्थाय वचो रम्यं गजानन उवाच ह ॥

गजानन उवाच

वरं ब्रूत महाभागा देवाः सर्षिगणाः परम् ।
स्तोत्रेण प्रीति संयुक्तो दास्यामि वाञ्छितं परम् ॥
गजानन वचः श्रुत्वा हर्षं युक्ताः सुरर्षयः ।
जगुस्तं भक्ति भावेन साश्रु नेत्राः प्रजापते ॥

देवर्षय ऊचुः

गजानन यदि स्वामिन् प्रसन्नो वरदोऽसि मे ।
तदा भक्ति दृढां देहि लोभहीनां त्वदीयकाम् ।
लोभा सुरस्य देवेश कृता शान्तिः सुखप्रदा ।
तया जगदिदं सर्वं वरयुक्तं कृतं त्वया ॥

अधुना देवदेवेश कर्म युक्ता द्विजातयः ।
भविष्यन्ति धरायां वै वयं स्वस्थानगास्तथा ॥
स्वस्व धर्मरताः सर्वे कृतास्त्वया गजानन ।
अतः परं वर ढुण्ढे याचमानाः किमप्यहो ॥
यदा ते स्मरणं नाथ करिष्यामो वयं प्रभो ।
तदा संकटहीनान् वै कुरु त्वं नो गजानन ॥
एवमुक्त्वा प्रणेमुस्तं गजाननमनामयम् ।
तानु वाचाथ प्रीतात्मा भक्ता धीनः स्वभावतः ॥

गजानन उवाच

यद्यच्च प्रार्थितं देवा मुनयः सर्वमञ्जसा ।
भविष्यति न संदेहो मत्स्मृत्या सर्वदाहिवः ॥
भवत्कृतं मदीयं वै स्तोत्रं सर्वत्र सिद्धिदम् ।
भविष्यति विशेषेण मम भक्ति प्रदायकम् ॥
पुत्र पौत्र प्रदं पूर्णं धन धान्य प्रवर्धनम् ।
सर्व सम्पत्करं देवाः पठनाच्छ्रवणान्नृणाम् ॥
मारणोच्चाटनादीनि नश्यन्ति स्तोत्र पाठतः ।
परकृत्यं च विप्रेन्द्रा अशुभं नैव बाधते ॥
संग्रामे जयदं चैव यात्रा काले फलप्रदम् ।
शत्रूच्चाट नादिषु च प्रशस्तं तद्भविष्यति ॥
कारागृह गतस्यौ व बन्धनाशकरं भवेत् ।
असाध्यं साधयेत् सर्वमनेनैव सुरर्षयः ॥

एकविंशतिवारं च एकविंश दिना वधिम् ।
प्रयोगं यः करोत्येव स सर्व सिद्धि भाग् भवेत् ।
धर्मार्थ काम मोक्षाणां ब्रह्मभूतस्य दायकम् ।
भविष्यति न संदेहः स्तोत्रं मद्भक्ति वर्धनम् ।।
एव मुक्त्वा गणाधीश स्तत्रै वान्तरधीयत ।।

।। इति श्री मुद्गल पुराणे देवर्षिकृत गजानन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

।। इति श्री गणेश-साधना-तन्त्र सम्पूर्णम् ।।

मन्त्रं

१ गं एकाक्षरी महागणपति
२ ॐ गं द्वयाक्षरी
३ ॐ श्रीं ह्रीं त्र्याक्षरी
४ ॐ गं नमः चतुराक्षरी महागणपति
५ ॐ सर्वजन पंचाक्षारी
६ ॐ नमः वरद षडाक्षरी
७ ॐ गं गणपतये सप्ताक्षरी
८ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं स्वाहा अष्टाक्षरी
९ हस्ति पिशाची लिखे स्वाहा नवाक्षरी महागणपति
१० ॐ गं क्षिप्र प्रसादाय नमः दशाक्षरी महागणपति
११ ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा एकादशाक्षरी महागणपति

१२ ॐ ह्रीं गं ह्रीं महागणपतये स्वाहा द्वादशाक्षरी
महागणपति

९ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं वरद नवाक्षरी

१० ॐ गं गणपतये मानय दशाक्षरी

१८ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये सर्बजनं मे
स्वाहा अष्टादशाक्षरी

२८ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं
मे वशमानय स्वाहा अष्टाविंशतिऽक्षरी महागणपति
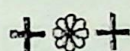
श्री युवा सम्राट पं० श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी 'तान्त्रिक मणि'' पुराण केसरी, पुराणरत्न ने वेद उपनिषद पुराण, भक्ति एवं अष्टाङ्ग योग आदि साधन पद्धतियों द्वारा परम तत्व का साक्षात्कार कर लेने पर भी केवल लोक कल्याण की भावना से श्री गणेश साधना-तन्त्र पद्धति का अवलम्बन किया है और पूर्ण विधि विधान से गणेश यन्त्राधिष्ठित महागणपति का उच्चतम उपासना क्रम अनुष्ठित किया, तथा उत्तर भारत और साधकों में विलुप्त प्राय श्री महागणपति सम्प्रदाय को अपने तपोबल से पुन: प्रतिष्ठापित किया है और श्री गणेश साधना तन्त्र जैसे ग्रन्थ रत्न द्वारा श्री महागणपति साहित्य निधि को अभिवृद्ध एवं सुशोभित किया है। श्री युवा सम्राट पं० श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी "तान्त्रमणि" पुराण केसरी, पुराणरत्न द्वारा रचित श्री महागणपति मन्त्र भाष्य का अवलोकन करने पर उनका तन्त्र शास्त्र का गहन अध्ययन, प्रौढ़ पाण्डित्य, तत्व ज्ञाता तथा रहस्य ज्ञातापन सुस्पष्ट परिलक्षित होता है।

श्री गणेश-साधना-तन्त्र का वैशिष्टय

श्री महागणपति की साधना का पूर्णक्रम प्रवर्तित करने के लिये विभिन्न पुस्तकों की अपेक्षा रहती है, परन्तु यह एक ही पुस्तक दीक्षाकाल से पूर्णाभिषेक पर्यन्त और प्रारम्भिक साधन काल से सिद्धि पर्यन्त समस्त विधि विधानों का साङ्गोपाङ्ग, सम्पादन करने के लिये समपेक्षित पद्धति की जिज्ञासा को परिपूर्ण करने के लिये अपनी विशिष्टता से समवेत है।

श्री गणेश से तुलसीदास जी की याचना

गाइये गनपति जगबंदन ।
संकर-सुवन भवानी नंदन ।।
सिद्धि-सदन, गज-बदन, विनायक ।
कृपा-सिंधु, सुन्दर, सब-लायक ।।
मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता ।
विद्या-बारिधि बुद्धि-बिधाता ।।
माँगत 'तुलसीदास' कर जोरे ।
बसहिं राम-सिय मानसमोरे ।।

(विनय पत्रिका—१)

'जोहत गजानन कौ आनन सदा रहैं ।'

इन्द्र रहैं ध्यावत मनावत मुनिंद्र रहैं,
गावत कबिन्द्र गुन दिन--छनदा रहैं ।
कहै 'रत्नाकर' त्यौं सिद्धि चौंर ढारति औ,
आरति उतारति समृद्धि-प्रमदा रहैं ।
दै दै मुख मोदक विनोद सौं लड़ावत ही,
मोद-मढ़ी कमला उमा औ वरदा रहैं ।
चारु चतुरानन, पंचानन, षडानन हूँ,
जोहत गजानन कौ आनन सदा रहैं ।।

+❀+